आनन्द रघुनन्दन नाटक

آنند رگھنندن ناٹک

श्री मन्महाराजाधिराज श्री ५ बांधवेश विश्वनाथ सिंह स्वर्गवासी कृत

जिसमें

संस्कृत प्राकृत देवनागरी गद्य पद्य इत्यादि अनेक भांति की भाषा-ओं में श्री राम चरित्रान्तर्गत मुनिजन शिरोमणि ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी महाराज की मखरक्षा से श्री परब्रह्म परमेश्वर दशरथ कुमार रामचन्द्रजी महाराज के सिंहासन पर विराजमान होने पर्य्यन्त का वृत्तान्त नट नाट्य कला सहित उत्तमोत्तम ललित नाटक भाषा

सात अङ्कों में वर्णित है

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८२ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें।

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	३ वनपर्व्व	मयेतसवीर	काव्य
महाभारत	४ विराटपर्व्व	तथा मये क्षेपक	सूरसागर
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	५ उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	कृष्णसागर
सभापर्व्व, वन पर्व्व,	६ भीष्मपर्व्व	के सातों काण्ड	विश्रामसागर
२ हिस्सा में विराटपर्व्व,	७ द्रोण पर्व्व	१ बालकाण्ड	प्रेमसागर
उद्योगपर्व्व, भीष्मपर्व्व,	८ कर्ण पर्व्व	२ अयोध्याकाण्ड	कृष्णक्रिया
द्रोण पर्व्व,	९ शल्यपर्व्व-गदाप	३ आरण्य काण्ड	विजय मुक्तावली
३ हिस्सा में कर्ण पर्व्व,	सौप्तिक पर्व्व मये यो-	४ किष्किन्धा काण्ड	अनेकार्थ
शल्यपर्व्व, गदा पर्व्व,	षिक व विशोक वस्त्री	५ सुन्दरकाण्ड	छन्दोर्णव पिंगल
सौप्तिक पर्व्व, योषिकप-	पर्व्व	६ लंका काण्ड	कविकुल कल्पतरु
र्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्रीप-	१० शांति पर्व्व-राज	७ उत्तर काण्ड	रसराज
र्व्व, शांतिपर्व्व में, राज	धर्म्म व आपद्धर्म्म व	रामायण शब्दार्थकोष	सतसई सटीक
धर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्ष	मोक्षधर्म्म व दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	सतसई
धर्म्म,	११ अश्वमेध आश्रम	रामायण मानस दीपिका	सभाविलास
४ हिस्सा में, शांतिपर्व्व,	वासक मुशल पर्व्व	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
दान धर्म्म, अश्वमेध,	महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण गीतावली	भजनावली
आश्रम वासक पर्व्व व	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली स-	प्रेमरत्न
मौसल पर्व्व व महाप्र-	रामायण रामविलास	विनयपत्रिका बा॰ मो॰	युगुलविलास
स्थान स्वर्गारोहन पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	विनयपत्रिका बा॰ शि॰	चित्रचन्द्रिका
व हरिवंश पर्व्व,	रामायण सटीक मयेम-	पुराण	बारहमासा बल्देव प्र॰
महाभारत पर्व्व पर्व्व	नस दीपिका कोश आदि	देवी भागवत	मनोहर लहरी
अलेहदा भी हैं	तथा मयेतसवीरसटीक	वेदान्त	गंगा लहरी
१ आदि पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	योगवाशिष्ठ	यमुना लहरी
२ सभा पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की-	प्रबोधचंद्रोदय नाटक	जगद्विनोद

श्रीगणेशायनमः ॥

अथआनन्दरघुनन्दनम्नामनाटक ॥

---oo---

छंदशिखा। अघरणघरणधरणदशमुखमुखदलनदलनदलिदलिहै। अकरमकरनकरतधनुशरप्रण उधरतरनचलि चलि है ॥ सदयमसदयसदय सदकरकर जनन जनन पर रति है । जगजगजगतगनतनतगुणगणगणप अहिपपशुपति है ॥ १ ॥ मृदुपदुपदुममदुममहिपनमनअलिअलिरहि रमिरमि है । चपचलचलनिकरतिबरबसबससुबयबयनअमिअमि है ॥ अतिमदमदन मदनमरदनसर सरसतरसपतितन है । जयजयजयपतिबिबुध बुधछनछन ममपतिपतिभिभुवन है ॥ २ ॥

नाद्यंतेसूत्रधारः। अरे मारिष मोको राजकुंवर की नाट्य करिबे की आज्ञा भई ऐसे समय जो सहायक तैं मिल्यो तो बड़ो काज भयो ॥

मारिषः। अरे बड़े बड़े नाट्य वाले ह्यां नाट्य करि गये हैं हमारो नाट्य कब काहू को नीको लगि है ॥

सूत्रधारोविस्मितः (क्षण मनुध्याय आकाशे करनं दत्वा) कहा कहियतु है ॥

पुनःप्रहस्य। वाहवा, वाहवा, महाआनन्द महाआनन्द मम प्रसाद आकसमाद तोको अनुपम नाटक मिलैगो ऐसी बानी को बानी सुनी परै है ॥

पारिपार्श्वकप्रवेशः। अरे सूत्रधार परम उदार राज कुमार आगे बहु प्रकार बिस्तार करु कै कै राजद्वार वार अवतार पुत्र उत्साह मो जो हम तुम करो हुतो ॥

सूत्रधारः। अरे पारिपार्श्वक ऐसो कौन नाट्य है जौन इहां नहीं भई (पारिपार्श्व को बिस्मितः)

सूत्रधारः। येरे कहा मति अकुलानी तेरी तैं नहीं सुनी को मोको

बानी की बानी भई है की तोको ममप्रसाद आकस्मात अनुपम नाटक मिलैगो ॥ इति प्रस्तावना।

भविष्यभाव:। त्रिकालज्ञादिकवेः पत्रिकेयम् ॥

सूत्रधार: (प्रणम्य गृहीत्वा वाचयति)

भजन बहुबिधिआशिषशिसष्यहमारी।
हितकुशलकुशलनुवचाहैं होवैनिरमलबुद्धितिहारी ॥ १ ॥
दिगसिरअघभूभूरि भारभव बदनबिधाता बिनयकराई।
अवउदार अवतारपरमप्रभु लेहैपुहुमिपरममुददाई ॥ २ ॥
ताकेगुनगनभरितचरितमय काव्यसंस्कृतरचीअगारी।
नाट्यकरनपरिहैप्रभुआगे पेखतह्वैहैतेऊसुखारी ॥ ३ ॥
श्रीजैसिंहभुवालबिधिपति सुतबिशुनाथसिंहजेहिनाऊं।
सोनाटकआनंदरघुनंदन भाषारचिहैआउपढ़ाऊं ॥ ४ ॥

(अरे भाव) वाहवा, वाहवा ऐसे समय भली चीठी दई ॥

इतिनि:क्रांत: (ततः प्रविशंतिशिष्याः)

शिष्य:। पूजन की तयारी करो देखो नहीं है गुरु चले आवैं हैं ॥

कबित्त। केतेशिष्यसाथमें कमंडललियेहैंहाथ दीन्हेंउर्द्धपुंड्रहैं सबिंदु वरमाथमें। सोहत जटाबिशाल कंठकंठी उरमाल पहिरेकोपीन आल धोई गंगपाथमें ॥ तुलसीके भूषनकियेहैं कलअंगअंग लालरंग नैनछके प्रेमहिकेगाथमें। गजगतिआवैं मतिहरिके चरित्रनमें औनवेदपाठमन विश्वनाथनाथमें ॥ १ ॥ प्रविश्यसमित्पाणि।

सूत्रधार। भो गुरो दंडवत् प्रणाम ॥

गुरु। वत्स चिरंजीव ॥

(सूत्रधार:) गद्य। प्रभुपत्रिकापाई शीसचढ़ाई आपु कृपा महाई। निजभाग्यअधिकाई मेरीमतिपरममुदछाई सुकृतफलघरीअबआई ऐसेजानि प्रभुपददरशकीनो अबहोनहार आनंद रघुनंदननाम नाटक प्रकार पढ़िबेको मेरीमति त्वराकरैहै ॥

मुनि:। वत्स भली कही पढ़िही लेहु ॥

शिष्य:। आपु प्रसाद अनूपम नाटक मोको आयो ॥

नेपथ्ये मंगल कोलाहल।

छंद । भूपदिगजानपायो पूतभगवानहोजी वाहवाहै ।
मोदवेप्रमानछायो सकलजहानहोजी वाहवाहै ॥
धायधायरंगवोरि देहुनारिअंगहोजी वाहवाहै ।
विसुनाथदंगसब खेलोएकसंगहोजी वाहवाहै ॥

आदिकविः सहर्षसंभ्रम । अहोमहोसोहिलोसोरत्रिभुवन पूरनकरे हैकाहाईग्रईग्रावतारभयो । अबअकथमुदमंडितामुनिमंडली अपरा-जितानामनगरीजायगोहमहूं चलें ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वे । विष्कम्भकः । सचिवप्रवेशः ।

सचिवः गद्य । मारगनसुगंधसलिलसिंचावो गिलिमबिछाओ सिंहासन गट्टीधरावो सकलछिति एकछत्र सर्वछितिपति नक्षत्र नक्षत्रपति से दिगजान महाराज आवे हैं ॥

पुनःश्रवणंदत्वा । अरे सोर सुनो जाय है महाराज दिगजान वार हों चार करि द्वार लों आइ मुनि मंडली को सतकार करे हैं ॥

ससं भ्रम समुत्थाय । महाराज सलामत महाराज सलामत (इतिसोत्साहंमित्रंप्रति)

छंदझूलना ॥ छत्रचौरनबलितभूषितभूषनललित कलितआनंदआनन सुहायो चोपदारनसोरबारबारअतिचहुंओरगानजांगरनरसभरितभायो ॥ सूतमागधवंदिकार हंबंदनवृन्दइन्द्रइवआयआसनविराज्यो । पूतउत्साहअपराजितानांहलसुदेतबकसीसविसुनाथभ्राज्यो ॥ १ ॥

अंजलिंबध्वा । महाराज वार हों को चार अनूपम मुनि बड़ो सुख भयो गुर धराये चारिउ चिरंजीव लालन के ललित नामते सुनिवे को मति अति उत्कंठा करै है ॥

व्रपःसस्मितलज्जं लिखति ॥

कंचीसानंदंवाचयति । हितकारी, १ डहडहजगकारी, २ डीलधरा-धर, ३ डिंभोदर ४ ॥

श्रुत्वासभासदः । वाहवा, वाहवा, भले नाम है ॥

कंची । महाराज देखिये भाट, नट, विदूषक, नरतक, आवेहैं ॥

कवित्त । कईरंगपागलालचंदनललाटलाग अंकुशबंधोहैजामेभालोलिये हाथमें । कम्बरकटारीकंठकठुलाकुकाठधारी याहीभांति औरो

भाट केते लियेसाथमें ॥ आशिषसमूहपढ़ैछंदनकेव्यूहबांधि पावतअनंदलोग रसनकेगाथमें । करतप्रणामबारबारबिस्वनाथ आवैसभातांकिधारै दोनोंहाथनिजमाथमें ॥ १ ॥

पद । मैअसमर्नहिंबिचार्ह्योयहतोभट्टहै । कांधेढोलहाथलकुरायहनटहै ॥ यहैबिदूषकनटीबोरतकिहंसतहै । बिस्वनाथयहनरतकभावसोलसत है ॥ (भट्टः किंचित्समीपमागत्य)

कबित्त । आपुकोसुयशदसदिसनिअनूपछायो सेतदिगपालभयेचीन्हैंने कोऊजात । डंकनिकेशबदसर्शंकिसुनिबंकशत्रु दरकेदिलननैकबदन कढ़ैनबात ॥ परम प्रताप पुंजझारहीसों जारेसारे खलखर बृन्द नाहिं येकऊकहूंदेखात । हैतोंजोनबिस्वनाथभूपदिगजानदान जलकोसरित सिंधुबाड़वागिसोंसुखात ॥ १ ॥

सोरठा । जीवैंचारोलाल जौलोंकीरतिईशकी ॥
निरखतचरितरसाल लहहुसदाहिंमुदमहिपमनि ॥ १ ॥

स्वबाहु डंकार्थ्यदेवंप्रणम्यनटः । अरी सुनो तौ दोनों नटी मोमें नट आयो दिगजान ऐसो भूप पायो पुत्रोत्साह समयो बनि आयो कुलि कल कलानि लखायो चाहिये ॥

आकाशे दृष्ट्वा । अरे नटी पुरहूत दैत्यन को युद्ध द्यूत होत है सूत फेंकि तामे चढ़ि रण रंग मढ़ि आपने देव संग ह्वै होंहूं जंग करन जात हौं । भो सभासदो सलाम है, सलाम है, मेरी नटी को बिलोकि रहियो ॥

सभासदः । देखो सूत गहि चढ़िही गयो आकाश कों । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

आकाशे कर्णंदत्वा विस्मिता नटी । अरे गीरवान गदित बानी सुनि परै है नट भट जूझ्यो ॥

अधोविलोक्य । ये दूनों बाहैं गिरीं, पांय गिरे यह सिरगिरयो, यह धर गिरयो, मेरे पतिही के हैं ॥

(द्वितीया नटी रोदिति)

नटी । अरी रोवै कहा है होतो बहुत रोज याके संग रही अब सती

होउंगी तोको महाराज पालिधोई करेंगे सभासदो सर तैयार कराय देउ हों पति संग जरौं ॥

सभासदः। यातो आछें जरी (द्वितीया नटी आंकाशे दृष्ट्वा) अच्छरियं अच्छरियं अइपिये अक्काम्यगइ ॥

अर्थ। अच्छरियं आच्छरियं, आश्चर्य्य है आश्चर्य है। अइकोमला लापे पिओ अत्ता गम्यइ कहे पीउ ह्यां आवे है ॥

नटः। महाराज सलामत भो सभासदः मेरी नटी कहां है ॥

सभासदः। अरे नट आपनी दूजी नटी ते पूछि ले तेरे अंग लै जरिगई ॥

नटः। अरी नटी तैहूं मिलि गई मेरी नटी तो महाराज के भौन में है हुकुम होइ तो टेरि लेउं ॥

सभासदः। अरे नट यातो बड़ो आश्चर्य कहे है महाराज को हुकुम है टेरि ले ॥

नटः। येनटी येनटी आवे आवे ॥

नेपथ्ये। हांजी हांजी पहुंची पहुंची ॥

पुनःसनटिर्नटः। महाराज सलामत ॥

सभासदः। आश्चर्य कौतुक कियो ॥

द्वितीयानटी। साहु स हु तुमये आदि अपुव्वं का दुअं कअं ॥

अर्थ। साहु साहु कहे स्याबास स्याबास, तुमये कहै तुम, आदि अपुव्वं कहैं दुअं कहे अति अपूर्व कौतुक कअं कहे कीनो ॥

बिदूषकः। अरे नट ऐसे मुहमटकाय नैनानिनचाय झूलनी झमकाय सबके उर आनंद झरलाय हों न समझनो तेरो दूजीनटी प्रथम कौन बोली बोली ॥

नटः। एक समय मेरी कलनि बखानानि सुनि कानन सहसाननसिर तनक डोलायो महि बिवर बनायो तेही मग मै तहं जाय कलनि लखाय रिझाय लीन्हो। शेषकह्यो मांगु मांगु मेरोमन येही तकि राग्यो येहीके मांग्यो यह धन्या नागकन्या है नाग भाषा भने है ॥

बिदूषकः। अरे नट तैं नर यह नागिनि कैसे संग भयो ॥

नटः। अरे बिदूषक तैं नहीं जाने है की नारी गंगा है ॥

(प्रहस्यसभासदः) अरेबिदूषक तो दौरि याहि गहि हरगंगा हर गंगा कहन लग्यो ॥

नटः। अरे अरे या कहा करै है ॥

बिदूषकः। अरे बावरे होहूं अस्नान करोहौं ॥

नर्तकः (सस्मितंपुष्पांजलिंदत्वा) महाराज ये गतीं संगीत की हैं गुलाल मे मोर मातंग छपटे नजर करिये ॥

(इतिगायति)

पद। नृपदिगजानचारसुतजाये गहगहबजतिबधाई। टेक।
जहंलौं देत भूप धन तहंलौं मंगन मनहु न जाई ॥ १ ॥
याचन चहत इन्द्र ब्रह्मादिहु सकुच न सकत न आई।
विश्वनाथ यह उत्सव तिहुंपुर रह्यो अनूपम छाई ॥ १ ॥

प्रबंध। दिगजान प्रकटित मघटित घटनोत्घाटक यशोबितान मनुपमं ॥ (तालझपतारा) संछा दित त्रिभुवनं ॥

तालत्रिपुटा। तिऐऐ या तिऐऐ या तिऐऐ या धधप धधप पगग रे गगप ध सा रेरे स रेरे स सधध प धध सा ॥

ताल रंगजति। तकथुं थुंतक थुंतकति गदि गदि गदि गथैति गति गदिग दिग ॥

सभासदः। वाह वाह आछो नाच कियो ॥

भूपः। बांछित ते अधिक इनाम इन को देवाय देव अब मेरी मति सुत निरखन की उत्कंठा करै है ॥

मंत्री। बहुत भलो। इति निःक्रांताः सर्वे।

(सपरि.कार देवी प्रवेशः)

देवी सखीं प्रति। आजु महाराज के दरबार में नर्तकन नृति प्रकार सुनो है अनूप भयो ॥

सखी विलोक्य सहर्षम्। महारानी महाराज आये रानी ससंभ्रमं उत्थाय पूजयति ॥

नृपः। ये कुशला तुम यथार्थ नामा हो सौतिन को बुलाय सत कार जातें सब सुतन में सम सनेहकरैं ॥

(कुशला सखी सुख मवलोक्यते) सखी निःक्रांताः।

तत: ससुत सखी सुहिता काश्मीरी प्रवेश: ।

कुशला । सखी पूजन की साजु ल्यावै ॥

नृप: । ये लालन पालन हित ब्राह्मण बैष्णव की सेवा करो जामें सब को कल्यान होय ॥

देव्य: । (शिरसोपदेशं गृहीत्वा) महाराज हमारे सब के यह ललक है कब इन की बधुन कों हम नैनन सों देखिहैं ॥

भूप: । कछू राजकाज के हित मंत्री हमैं परिखे हैं ॥

(इतिनिःक्रांत:) (देव्य: परस्परम्)

पद । तबहीं बिचारि गोद जब आवैं सुत कौतुक तकि दृगन अघाहीं ।
अबतो भये किशोरचारिहू सखिहमसबकहंमुदमितिनाहीं ॥
खेलनजातशिकारभ्रातसब लहहियहैसबलोगलोगाई ।
विश्वनाथनृपभाग्यचारिफल लियहमहूंसबभागबंटाई ॥

(षंडप्रवेश)

महारानी चारिउ कुंवरन को सबार भूप बुलायो है इतिकुमारै: सह निःक्रांत: ॥

रानी । चलो झरोखे लागि सुतन निरखिये ॥ इति निःक्रांत: ।

(तत: प्रविशति समात्यो भूप:)

भूप: । मंत्री षंड को बड़ी बार लगी ॥

(प्रविश्यकुमारा:प्रणमंति)

भूप: । सुतान् दृष्ट्वा सोत्साहं मंत्रिणं प्रति । पुत्र बिवाह योग भये ॥

मंत्री । महाराज हों अरजई करनहार हुतो ॥

द्वारपालप्रवेश: । महाराज गुरु आवै हैं ॥

(राजाससंभ्रम मुत्थाय चलति)

मंत्रीबिलोक्य सहर्षम् । अहोभाग्य जिनके गृह ऐसे गुरु आवैहैं ॥

कवित्त । शास्त्रऔपुरानलीन्हेकेतेशिष्यसोंहैसाथ तुलसी कीमालभाल तिलक सुधारे हैं । पहिरेकोपीनकरदंडऔकमंडलहैसीसजटा पीठि चर्मचारुभगवारेहैं ॥ लोचनलखेतें सांततादहीबिलोकी जाति रूपहीतेजानेपरैं भूत सुखकारे हैं । करत प्रणाम पानि पंकजअसीसदेत बोलेंप्यारेबोलन पियूष झोन ढारेहैं ॥ १ ॥

भूपः (दंडवत्प्रणम्य सभांप्रविश्य यथोचित पूजनं कृत्वा)
भूपः । सेवक के सदन स्वामी आगवन मंगल मूल है ॥
गुरुःसस्मितः (प्रविश्यावामदेवः) जगद्योनिज श्रवणे ॥
भुवना हित मुनि आवैं हैं अरु येहू काहू काहू के मुख सुन्यो है की मख रक्षन हेत नृप कुमार मांगि हैं ॥
गुरुर्विस्मितः । भो भूप तुम्हारे पुरखन को यश बखान जहान में छायो है तुमहू दान मान में भगवानहों के सम हौ तऊ गुरु धर्म विचारि हों यही सीख देत हों जातें सुयश न मलीन होय सो सावधान करियो ॥
भूपः । मैं तो कछू करन लायक नहीं हौं प्रभु की कृपा जो मोपै है सोई सब करन को समर्थ है ॥

(प्रविश्यद्वारपालः)

छंद । कायाविद्युतछटाभासिरसंघनजटाघंघटासौ विराजैं ।
भ्राजैंबाहुप्रलंबैं अगुलि कुसनकीपैंकापानिछाजैं ॥
पीतंयज्ञोपवीतंकलितकसकटी बल्कलंमुंजगाथं ।
बलोनेजस्समङ्छविमलतपसक्रोध्यानमेंविश्वनाथं ॥ १॥
ऐसे भुवन हित महामुनि आवैहैं ॥
भूपः । ससंभ्रमं । अरे मुनितोआय गये अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य भो मुने दंडवत् बड़ो अपराध भयो आगू ते न लेन पायो अपराध क्षमा करिये ॥
मुनि सस्मितः । नृप आपने ऐन आवत कोई आग लेन को कहा परखै है ॥
भूपः । यह सिंहासन है ॥
मुनिः । अहो जगजोनिज आपहू ह्यां बैठे हैं अलभ्ये लाभ भये बड़े दरशन भये नमस्कार नमस्कार ॥
जगद्योनिजः । नमस्कार आवो मिलि लेऊं ॥
नृपः । आपको आगवन मेरे बड़े सुकृत को फल है आप के मख यत्न में भारी भय है । अथवा सर्व भूमि दक्षिता जामे ऐसी कौनौयत्न मनमे दैआये मोंको आपनो किंकर मानि आज्ञा दीजै ॥

मुनिः । कवित्त । आपकोप्रतापपुंजपावकपुरारिमानि तोजेचषपलक लगायहोंरहतहैं।पालतपुहुमिपेपिछोरसिंधुसेषसेजसुचितसुखोहुहरि सोवतमहतहैं॥ पायदानभूमिदेवदेवलोकचाहैंनाहिंबाहुबलदेवना- हनोकेनिबहतहैं। बिस्वनाथआपकेप्रजानिपुन्यलोकनकोरचतबिरं- चरंचकलनालहतहैं॥ १ ॥

लज्जितोभूपः । आप तो नबीन जगतही रचन लागे हैं जो कंकरी हूको सुमेर कहन लगे तो कहा आश्चर्य है । अब जा हेत आप आये सो सुनिबे की लालसा में बार्ता बिक्षेप करै है ॥

मुनिः । जाके बशिष्ठ ऐसो गुरु है सो ब्राह्मणन कीबांचा पुरवै तो कहा आश्चर्य है ॥

मुनिघातिका । घातिका नामा राक्षसी ससुत बाधाकरै हैसो यज्ञ रक्षन के हेत हितकारी डील धराधर दोउ कुमार दीजै ॥

भूपः । श्रुत्वाबैबर्ण्य नाटयति ॥

गुरुःभूपंबिलोक्य । ये ज्ञानबान तेज निधान सर्ब अस्त्र शस्त्र जाथ मुनिन में प्रधान हैं । आपने प्रभावतें सर्ब काज करिबे कोसमर्थ यी हैं । तुह्मारे पुत्रनकी कोई बड़ी भाग्य उदयभई जातें माँगिन को आये हैं । तुमऐसो दाता इनऐसो पात्र को संयोग्य दुर्लभहै ॥

नृपः । बत्स हितकारी डीलधराधर आवो हृदय लगाय लेउं ॥

(शिरस्य आघ्राय सगद्गदं)

मुनिये कुमार आपने प्राणअधार आप को सौंपौं हौं ॥

मुनिः । नृप अभिष्ट सिद्धि रस्तु (इति सकुमारोनिःक्रांतः)

(नेपथ्ये रोदन कोलाहलः)

पद । योगी लिये जात मेरे बारे । टेक ॥

कैसे भूपतिदियेपानिगहिं जेप्रानहुंते परमपियारे ॥ १ ॥ मखमल गिलिमचलतत्रसियतुते पदबनपुहुमीकिमिकारि धरिहैं नृप बिसुनाथ दुलारेदोउ किमिकोही मुनिसेवाकरिहैं ॥

जगद्योनिजः । तुम्हारे पुत्र मुनिते रक्षित सुखपूर्बक जात पंथ निवा- सिन के नैन सफल करि हैं । अंतह पुर में रोदन सोर होय है । हमहूं तुमहूं चलि तिन को मातन को समुझाइये ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

पथिकप्रवेशः (नेपथ्ये कोलाहलः)

अइसहिअइभइणिअइमाए एक्कोपहिओसमाअदोतम्मुहा । दोसुनि अंजारिसावम्ह डभंडो परेण सुनिदातारिसाजुउलकुमाराआगम्मंति ॥

(ततः कुमारदर्शनार्थिनोन प्रवेशः)

कुमारदर्शनार्थिनः । अइ सहिजुउलकुमाराकियं तदूरम्मिहुं वंति अरे दिट्ठा दिट्ठा ।

ततः सुकुमारमुनिप्रवेशः (ततः ग्रामरायः)

पद । कस्सदोणिपुत्ताबंचिऊणमुणिणाणिदा । (याकहै के के दुइ पूत ठगिकै मुनि लैआए हैं) पदसोअमलल्लोहिततणंणज्जासपाइधरे कंटअंकअंपदेहिंतेचलाविदा। धिअधणुव्वाणादोणिभाआरासमाणाव आसुछइअमणसामणोरअणेसेहिदारुवंचिअपेकिवऊणपच्चअंकुणोइ मणोइविकासइ इमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ इतिनिःक्रान्ताः

प्राकृतको तिलक । अइसहिअइभइणिअइमायेकहै । येसखिये। भगिनियेमाता । एक्कोपहिवोसमाअदोतम्मुहादोसुणि अंजारिसावंभंड भंडोअरेणसुणिदा । तारिसाजुउलकुमाराआगम्मंति । यह कहै एक पथिक आयो ताके मुखते सुन्यो है जैसे ब्रह्मांड भांडोदर में नहीं सुने तैसे युगुल कुमार आवै हैं । अइसहिजुउलकुमारकिअंतदुरम्मिहुं बन्ति ॥

याकहै । ये सखी युगुल कुमार कितेक दूरहैं । अरे दिट्ठा दिट्ठा याकहै के के दुइ पूत ठगिकै मुनि लैआये हैं । पदसोअमलल्लोहिततणं णज्जासपाइधरेकंटअंकअंपदेहिंतेचलाविदा ॥

अर्थ । जिनके पद को सुकुमारता और ललाई नापाइ कमल कंटकनकों धरे है तिन्हें प्यादहीं चलायो है ॥ धिअधणुव्वणा दोणिभाअरासमानव आसुछइअमानसामणोरअणसेहिदा ॥ अर्थ । दोऊ भाई समान वय धनुषबान को धारण किये सुन्दर छबि ते अमित जो शरीर ते ते शोभित हैं । रुविचिअपेक्खिवऊणपच्चअंकुणोइमणोकासइइमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ अर्थ । रूपही को देखिकै मनप्रतीति करै है । ये कोई बिस्व को नाथ जो राजा है

ताके प्रिय सुत हैं ॥ (इतस्ततः परिक्रम्य)
हितकारी । गुरु केतो आये ॥
मुनिःगद्य । वत्स षट कोस आये मोकों बड़ो अपसोस तुम खेदपाये होउगे अति श्रमित अंग गरम उमंग पतंग तुरंग तरंगिनी पति तरंग अब अस्नान करन चहत हैं । यहि बरतर बास बरतर है ॥
हितकारी । यह जल भल है संध्या करिये ॥
मुनिः । भलीकही ॥
डोलधराधर । शय्या तयार है ॥
मुनिः । ये हितकारी ये तो परन शय्या भली बनावैं हैं ॥
हितकारी । ये डोलधराधर मुनि मुख सुनत सुधा सी कथा श्रवण संतोषित नहीं होय ॥
मुनिः । अर्ध रैनि गई सोवो ॥
कुमारौ । दंडप्रणाम ॥
(मुनिः उत्थायप्रातश्चरणांहत्वा)
पद । उठोकुंवरदोउप्राणपियारे । टेक ।
हिमिऋतुप्रातप्रायमबमिटिगे नभऊरपङरपुहकरतारे ॥
जावनमहंनिकस्योहरषितहिय बिचरनहेतदिवसमसनियारो ।
बिस्वनाथयह ओलुकानिरखहुरबिमनिदसहुदिसिनिर्दंचियारो ॥ १ ॥
ससंभ्रमसमुत्थायकुमारौ । भोगुरो दंड प्रणाम दंड प्रणाम बड़ो आलस्य भयो भार न जागे ॥
मुनिः । चलो अस्नान करो है मंत्र देउं जातें शोक शोक मोह भूंख पिआस श्रम आलस्य न होइ । (स्नात्वा)
सहर्षम् कुमारौ । महाराज मंत्र दीजै ॥
मुनिः । बला अति बला ये दोऊ बिद्या लेउ ॥
कुमारौ । ये मंत्र पाय हमको बड़ो आनंद भयो ॥
मुनिः । पंथचलन की बेर होइ है चलो ॥
(ततः इतस्ततः संचरंति)
हितकारीगद्य । गुरौ बिसाल ताल तमाल साल प्रियाल हिंताल आल जाल कलित कराल जहल पहल ब्याल बेताल कुल चहल

पहल कोलाहल तिन ख्याल न हहल हहल हालत लतन बितानन यह कानन अति भयावन है ॥

मुनिः। धर्मनिदरनि अधर्म बिस्तरनि रुधिर मांस उदर भरनि अति क्रूर असुनी मुनि गण यसनी घातिनी नाम यक्षनी छाई रहै है॥

डीलधराधरः। भो भाई चाप चढ़ावो ॥

हितकारी। अबला बध बिधि वेद में नहीं लिखी यह हमारे कुल को नयो कलंक होयगो ॥

मुनिः। वत्स हितकारी ऐसिही पाप कारिनी प्रबला अवला भृगु स्त्री को मुरारि अरु मंथरा को नगारिहू मारि यश लियो है पुनि मम शासन किये तुम को कौन अघ है। कार मुक टंकोर करो से शोर सुनि सो धाय आवैगी ॥

नेपथ्ये कलकलः। भागो भागो भागो आई आई आई। सर्वेसंभ्रिता

मुनिः। अरे यह तो आईही गई ॥

छंद। शारदूलविक्रीड़ित। छूटीकेशलटानिमेघघटनैलीलैसमुदघाटती। छोटेनैनअंगारज्वाललतिकादिग्गैंदसोपाटती॥ केतेमानुषदंतअंतरगड़े बैठैलोहूचाटती। धोतीवारनखालमालवोझरीजोहेंभनोडांटती १॥ वत्स वत्स सजुग होउ सजुग होउ ॥

घातिनी। अरेणिव्वुधेमुणिइमेजुउलकुमारा अम्हाणंपहेअंअप्पाणस्सहा अत्थमारगिदा ॥ अर्थ। अरे निर्बुद्धि मुने ये युगुल कुमार हमरे कलेवा अपने सहाय के अर्थ तैं लै आये है ॥

साट्टहासं। अहो मुणिदं मुणिदं तुज्झ चातुलिअं। जस्से तुम एसव्वेणि मंतिदा अम्ह सक्कारत्थ मिमे ॥ अर्थ। अहो ज्ञानी ज्ञानी तुम्हारी चतुराई यज्ञ में तुमने सब को नेवतो हमारे सतकार के अर्थ येहैं ॥ इतिधावति।

डीलधराधर। अहोगुरो हों न समुझयों आपकेहुंकारते गिरी या अग्रज के बाण तें ॥

गुरुः प्रहस्य। वत्स हितकारी यह बानी दिगज्ञान ते सीख्यो या जग योनिज ते ॥

हितकारी । यह राक्षसी आपके प्रतापहीतें जरि रही हुती हौंतो निमित मात्रही हों ॥

भुवन हितः । अस्नान करि आवो अब अस्त्र सब सिखाऊं ॥

स्नात्वा कुमारौ । हेगुरो अस्त्र ससंहार पावैं ॥

गुरुः । लेव ॥

हितकारी । गुरो बड़ो आश्चर्य है सकल अस्त्र शरीर धारी देखेपरे हैं ॥

गुरुः । (इन सों कहे हमारे मन में बसौ) चलौ हमारौ आश्रम नियरेहीं है ॥

(इतिइतस्ततः संचरंति)

नेपथ्य कोलाहलः । सहाय मांगन हेत मुनि को अपराजि गवन सुनि घातिनेय काबुल सों चारु भुजको सहाय लै आयो ॥

मुनि आश्रम न पहुंचे । हाय हाय अब कहा होयगो ॥

आकाशेकोलाहलः । बरायेरफ़तनेजन्नतचराहस्तई हमा मेहनत जरा-हतेगमनई नकरसानम्बेदिरंगीहा । बिगुफ़ततईनोवअखवाना बिजद नाराकिएयारांवजूदीरक्काविसिकस्तानमूदासखतचंगीहा ॥ कुमेदअज्जा मुमानेवदजितेगेवर्कअफ़सांखुदबखूनेखुसगंवारई नापरेधौहौजेमुजैय बरा। जिखुरदेपुरहलावतखुयशबेमईजाम्तबसदिलकसवऐसोकामरानी हावरुसाजेमतंगीहा ॥ अर्थ । स्वर्ग के जान लियें काहे को तुम बृथा श्रम करोहो आपनो खड्ग धार मार्ग ह्वै होहीं आसुहीं पहुंचाई देत हौं यों दुजन प्रति कहि आपने सहायकन सों बोल्यो सुनो बेगिही स्तम्भ उपारि डारो अरु इन सबन को अपनी कराल कर बालबधि अति स्वाद संयुत जो इनको रुधिर तातें कुंडनि पूरन करि पान करत मृदुल पल इन विप्रन को जो बहु दिवसनि में आजु पायो सो आनंदित भक्षन करो ॥

इतिआकर्ण्य भुवनहितः । अरे हम आश्रम को न जान पाये राक्षस बीचहीं आये बड़ो अनर्थ भयो ॥

(इतिशोकमुर्छितः)

कुमारौसक्रोधमुपद्रुत्य । पहुंचे हैं पहुंचे हैं न डरो न डरो अरे क्षुद्रौ इत को आवो हम राक्षस कुल अंत धनुर्वंत आइ पहुंचे ॥

(इति निःक्रांतौ नैपथ्ये सानंदगानं)

भजन । भुजपुरकी भाषामः ॥ करमनछोंड़ादोइगोटयेलखिनि । चारुभुजोय कातिरैमरलेखिनि ॥ घातिनिछोड़ैतुरितउड़ौलखिनि । भुवन हितकरजागसहितहम सबलोगबनकरजियरावंचवलखिनि । नरमआंगविसुनाथबराबर दोउगोटछौंड़ाबरबलपलखिनि ॥ अर्थ। भागनितें दोइटो लरिका आये हैं। चारुभुज को येक तीर ही मारि घातिनी के सुत कों तुरतहीं उड़ाये हैं॥ भुवनहित को जाग सहित हम सबलोगन के जीव बंचाये हैं। जिनके अंग नरम हैं औ विश्वनाथ कहे महादेकी बरोबर बल पाये हैं॥

(इति जैहोय होय) (उत्थाय भुवनहितः आत्मगतं)

आश्रम में जय सोर होइ रहो है कौन को है ॥

प्रकाशं । हाय हितकारी डीलधराधर मोकों मूर्छित छोंडि कहांगये ॥

प्रविश्यशिष्यः । भो गुरो राक्षसन कों मारि हितकारी हमारो सब की रक्षा करि अब शोच में हैं गुरू कहांरहिगयेहम को खबरि लेन को पठाये ॥

गुरुःसहर्षं । शीघ्रहीं कुंवर कों ल्याईल्यावो ह्वांतो राक्षसन के रुधिर तें मही मलीनही ह्वै रही होइगी ॥

(शिष्योनिःक्रांतः सबंधुहितकारीप्रवेशः)

भुवनहितः । वत्स बड़ोकाम कियो आजो सिर संगों मख सिद्धि ह्वै है सिद्धाश्रम अब यथार्थ नाम भयो चलो आश्रम को ॥

इति निःक्रांता ॥ (ततःप्रविशतिसपरिकरोदिगजानः)

दिगजानः । मंत्री कुमारन कों गये बहुत रोज भये सुधि न पाई ।

प्रविश्यशिष्यः आशिशंदत्वा । महाराज मुनि कही है की आपकी कृपातें हितकारी ने राक्षसन को संघार कियो हम निर्विघ्न यज्ञ करे हैं ॥

स महामोद भयः । मंत्री तुम इनको लै गुरुपै सुधिजनावो हों अंतहपुर जातहौं ॥ इति निःक्रांताः ॥

(ततःप्रविशतिसकुमारोमुनिः)

हितकरी । भोगुरो अब मख में बाधा नहीं है जो हम को सेवकाई सौंपिए सो करें ॥

मुनिः । मख म हजीतत येक सुता शील केतु पाई है ताके स्वयंबर हित धनुषमख करै हैं धनु काहू नृप को उठायो नहीं उठयो अब फेर स्वयंबररचि हमहूंको नेवत पठायो है हमारे संग तुमहूंचलो॥

डील घराघर । गुरो कन्या पाषान की है की दारु की है कीप्राचीन धातु की है ॥

गुरुविहस्य । हेवत्स जैसी सिंधु सुता तैसी कन्या है चलो ॥

इति निःक्रांताः ॥ (सर्वे सामागत्यशीलकेतुप्रवेशः)

शीलकेतुः । मंत्री ऐसी ततबीर करो जो या यज्ञ में आवैं अरु जौलों रहैं तौलों अनुदिन छन छन अपूर्व अनूपई सुखन को अनुभव करैं ॥

(**चारप्रवेशः चारः दृष्ट्वा स्वगतं**)

कवित्त । द्वादशतिलकदीन्हेंतुलसीकीमाललीन्हें धारेहैंकिरीटजासैमार तंडवारजात । चौंरचलैं दूनौवोर छत्रकोअजोर जोहिभोरकैसो भयोशीतभानुअतिहीनजात ॥ ज्ञानतोअमानजाकी परशंसाकरैं कौनदानसममानएकरसनाकहीनजात ॥ भूपनाथविश्वनाथराजै आजुमेरोनाथलोकदसचारि मध्यजाको शत्रुहै अजात ॥ १ ॥

मंत्री । अरे आश्चर्यित ऐसो कहाहै ॥

चारः । महाराज सलामत महाराज सलामत ॥

पदमैथिलभाषासा । मुनिकेसंगदुइनैनाऐलछि । सुंदररूपजादूगर छथिसेपथराकीपुतरीकसाउगिवनौलछि ॥ होंपड़ाय कहुंएतैऐलहुं सेबिरतांतअहांकैसुनवलछि ॥ अवभूपतिविशुनाथहोइजैजेकछुकरैक कहमनभवलछि ॥ अर्थ । मुनिकेसंग दुइलरिका आये हैं तिनकर संदर रूप है जादूगर हैं । पथरा की पुतरी का स्त्री वनाइनि है मैं पराइ कै इहां आयेउं सो बिरतांत अपना का सुनायउं है बिश्व-नाथ भूप तुम्हार जय होय जोकछु करैं का होय सो मन भावाकरी॥

(**श्रुत्वानृपा श्रवणे सामोद सतमोदः**)

सतमोदः । हम पितु श्राप दै मम मातु को पत्थर की करी यह

शापोद्धार बतायो हुतो को परम पुरषावतार पाय परसि फेरिनारी होयगी हों अनुमान करत हों भू भुवनहित मुनिसाथ तेई आये ॥

सहर्षं नृपः । मुने अवश्य जोहन योग हैं चलिये भुवनहित को आगू ते लै आवैं ॥ इतिनिःक्रांतो ॥

नेपथ्ये कोलाहलः । अच्चरियं अच्चरियं ।

अर्थ । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

भजन । लैअगुवानपुरोपतिआवत । टेक ॥

मुनिकेसंगकुंवरलखुअनुपमअपनीसुछविछटमिछितछावत । अस नहिंदीखसुन्योनहिंकतहूं कहतनवनतमनहिंजसभावत । बिश्व नाथतनपनसबनावत नैननिचैननीरबरसावत ॥ १ ॥

मंत्रीआकाख्यं । कहा भूप मुनि कों लेवाइ निकट आये ॥

(सकुमारभुवनहितमुनिसहितभूपप्रवेशः)

भूपः सविधिप्रणयित्वा । प्रभु को आगमन भूरि भाग्य को फल है आप के संग जे कुमार हैं तिन कों निरखत नैन नहीं अघाय हैं ये कौन के हैं ॥

मुनिः । ये दिगजान भूप के कुमार हैं पुरारि प्रसाद पायो जो तुम्हारो पिनाक है ताको तौलो चहत हैं ॥ (नेपथ्ये)

पद । महिजाहितकारीकोजोरी । टेक ।

बिरचोविधिरतिमारबिपुलरचि सोचिसोचिकैकल्यकरोरी ॥ हर गिरिजापदप्रणवैंहमसब सकलसुकृतकरफलयहचाहैं । नृपमति फिरहिकिविश्वनाथ धनुमृदुलहोइयेइतोरिविवाहैं ॥

प्रविश्यसभयंचारः । महाराज सरासुर दिगसिर दोऊ आवे हैं ॥

भूपः । (सविस्मयंचात्मगतं)

भूपः । अहो ईश अबधौं कहा होय ॥

(ततःसरासुरदिगशिरसःप्रवेशः) (प्रविस्मितवंदीस्वगतं)

कवित्त । याकेदसासीसबीसबांहुडोलशैलमानो याकेएकसीसबाहुदीरघ हजारहैं । दूनोलालचंदनकेदोन्हेहैं त्रिपुण्डभालपहिरेरुद्राक्ष मालछायेतनछारहैं ॥ दूनोअतिबलीभायेदूनोजगजीतिपाये

दूनोभयदेतदेखेतनबिकारारहैं । दूनोधनुतोरैंताकोकौनहैउपाय
हाय सोकतेउद्धारकोअधारकरतार है ॥

सर्वशंकित: । हाय हाय अब कहाहोन चहत है ॥

डौलधराधर: । गुरो या कौन कौतुक है ॥

मुनि: । बत्स या कौतुक नहीं है यह सहस्रभुजधारी दैत्य है या
बीस भुजधारी राक्षस है ॥

हितकारी । गुरो इनके रूप देखत सकल सभा अद्भुत भयानक रस
सागर में डूबी देखी परै है ॥

दिक्शिरा:छंद । बताय देहु बेगहीं सुताअनूप है जहीं । लैजाहुं मैं
असीसकै पिनाकटूकबीसकै ॥ १ ॥

सरासुर: । गुरुकोधनु हैनबिचारतहौ दसगालनिगालनिमारतहौ । नलु-
नोतुमबैननिमारकहै गुनियेमनहीगुरुगर्बगहे ॥

(दिक्शिरा:तिर्यगवलोक्य)

कवित्त । मेरे भुजदण्डनतेदेखिखंडखंडदंड भाजि ब्रह्मांडहींते काल
कीन्हागौनहै । परमप्रचंडनचखंडमेंअखंडजौलौं पेखिकैप्रताप
मारतंडडोलैसौनहै ॥ देतदेतदंडधननाथोभयेहूंडहीनसुनतको
दंडचंडचन्द्रमानोज्योनहै । वाहूकोंतुच्छचदंडसोसुमेरतोलौंजाय
खोनमुंडमालीकोकोदंडगर्बकौनहै ॥ १ ॥

सरासुर: । अरे आश्चर्य आश्चर्य है ॥

कवित्त । कोईभगवानबरदानदातातीनौलोक तीनपायपृथ्वीलेनबेषबड़
लीनो है । आयोतातपासचीन्होतापैननिरासकीन्होदीन्होंदान
लीन्होऊनोमानिरोसभीनोहै ॥ भख्योंपितुलौंकैमोहिंदानोदान
द्रव्यतुल्यहोहींपानिदोईपालरेअतौलिदीनोहै । पर्बसर्बरोध
जातेंखर्बजससर्बभाषे रेतेरोऐसोगर्बहोहूं नाहिंकीनो है ॥ १ ॥

दिक्शिरा:सवैया । येकहीसीसकेकौनधरोसिगरोजगयोंसरसोसमसोहै ।
तौनेहींशेषऔवेसशरीरमें सूक्षमकीन्हे अभूपनजोहै ॥ सोशिवबासकिये
जेहिशैन सोकौलभयोकरयेकहिकोहै । होंनाहिंगर्बकरोंकरैकोनप्रशं-
सतजाहिहरोरहतो है ॥ १ ॥

सक्रोधंसरासुर: । पीनपिनाकपुरारिकोयौंयिरच्यो विधिलैकरवज्रको सारहै । याकोनजानततैंगहता नहिंसीखगनैगुन्यौपूरोगंवारहै ॥ आपनोगर्वगवांवनकोधनुतोरनकोसठकीन्हे बिचारहै।जोबढ़िकैबलतैंबल कैअवलोकतहैसोतोनाऊकोबारहै ॥ २ ॥

सक्रोधंदिक्शिर: । छंदपद्धरी । बकनहेंादितेबकाहिआन ।

सरासुर: । मुखनाहिंहमारेबेप्रमाण ॥

दिक्शिरा: । भुजभारनढेयेहौभुलान ।

शरासुर । दसशतभुजबलतौतुहोजान ॥

दिक्शिरा । सवैया । तौलिअबाउतुलाधनमें बलतोरिहौंहोहोंजबै फिरिहै ॥

सरासुर: । लायकबंदनयाधनुहै तेहिकैसेकुदीठितहू हेरिहै ॥

दिक्शिर: । काहेदुखावतहैवदनै बाकिऐसेकरैंगेकहाकरिहै ॥

सरासुर: । मैंगुरभक्तनहौंतोहितो करिहौंकरिवेजोइजोतोरिहै ॥

सक्रोधंदिक्शिर: । तुवगर्वहीकेसाथ, तोरौंधनुषधारिहाथ ॥

सरासुर: । दोप्रथमबरनबिहाय, जोकहहिभूठनआय ॥

दिक्शिर: । धनुषतोरितेरहूमदतोरिहौं ॥

(इतिपरिकरंबध्वाधावति) (सुबुद्धिनामबंदी आत्मगतं)

सवैया । करिजोकरमेंकैलासलियो कसकैअबनाकसकोरतहै । दइ तालनबीसभुजाभहराय भुकेधनुकोभकभोरतहै ॥ तिलएक हलैनहलैपुहमी रिसिपीसिकैदांतनतोरतहै । मनमेंयहठीक भयोहमरे मदकाकोमहेशनमोरतहै ॥

(सव्रक्रै:तालिका:दत्वाप्रहस्य)

सरासुर: । पिनाक तुमको नमस्कार है । इतिनिःक्रांतः ।

(अमित दिक्शिरा उच्चवस्य)

दिक्शिर: । अरे यामें महा जादू ऐसो जानो जाय है वैसहीं कन्या को लै जाउंगो ॥

आकाशे । स्वामी स्वामी तुम्हारी कुंभीनसी कन्या को मधुनामा दैत्य हर लाये जाय है घनधुनि मखमें है, आप को भाई भयानक जप करन गयो है, घटकर्ण सोवै है ॥

विश्वामित्र:सक्रोधंदिक्षु गिरः। अरेदैत्यनकीहियेकीआंखैंफूटगई ॥

सवैया। अजुसरासुरकोसरसो बिनबाहुनसीसधरामेंसोवैहौं ॥ बाहुनके बलसोंबलिबांधिकै बंदिमेंबासवसोतकवैहौं ॥ वाजिनसंममें शुंभनिशुंभको खूबखुंदाइसिवाकोरिझैहौं । पूरिपतालहिश्रो नितसो मधुमोमधुगारिकैपानकैजैहौं ॥

(इतिसत्वरंनि:क्रांत:) (नेपथ्येजयजयतिकोलाहल:)

सुबुद्धिबंदी। यह बड़ो विघ्न विधाता ने नेवारि दियो, धनुष की गरुवाई दिग्गिर के उठावत में सबही लखिलीनी अब जाके उर उत्साह होवै सो उठावै ॥

मंत्री। येतो सबमुनिशिर लटकाय लिये अब कहा होय गो ॥

भुवनहित:। वत्स हितकारी धनुष संग सबन की शंका भंजो ॥

हितकारी। गुरु आप की कृपा कटाक्षयों कार्य कारी है ॥

(इति परिकरंबध्वा संचरंति)

सुबुद्धिबंदी। आश्चर्य है आश्चर्य है गहत उठावत तो देख्यो नहीं धनु भंगही को घोर सार छाइ रह्यो ॥

आकाशेछंद। सोरउद्धतमहिखूबलटपटतसब सिंधुसंघटतजलबेलथल छूटिगो। शेषफनफटततलश सहारटत बाराहबलघटतजुगडाढ़सो टूटिगो। दंतचटचटतमाहिशैलयुतछटतदिगदंतगनहटतभलकुंभथल कूटिगो। दैत्यलटिलुटतअभिमाननेछुटत कोदंडकेटुटतब्रह्मांडसो फूटिगो ॥

नृपः। भोगुरो यह काज भुवनहित मुनि के प्रभाव तें भयो जो कछु उचित होइ सो करिये ॥

सतमोद:। आतुरो करो कन्या को लै आवो जयमाल पहिराय देइ ॥

(सखीभिश्च: महिजाप्रवेश)

डीलधराधर:। गुरो यह कन्या तो अग्रज को माल पहिरावै है कहा महिजा येही है ॥

गुरु। ऐसही है

धौलधराधर । याहि देखि या शंका मेरे मन में आवै है हरिसागर मथि श्री निकारी मेदनी काहे नहीं मथी ॥

सखी पद । पहिराइहुजयमालनपानिसंकेलति है ॥
रहीटकटकीलाय पलकनहिंमेलति है ॥ हायकहायहिभयोरहीहैमन-हुठगी । बिश्वनाथयहिकुवंरिकुवंरश्रीडीठिलगी ॥

सतमोदः । कुवंरि को अब अंतहपुर को लैजाउ ॥

(सुतांगृहीत्वा सख्यानि:क्रांता:)

भुवनहितः । भूप तुम्हारी जय होइ ॥

(इतिसुकुमारी नि:क्रांता:)

नृपः । गुरो आप आसु पत्रिका लिखि अपराजित पति पैं पठाइये मैं मनि मंडप कीतयारी करावन जातहौं ॥

(इतिनि:क्रांता:)　　(सपरिकर दिगजान भूपप्रवेश:)

राजाशंखिशंप्रति । पद । जबतेंकाहिसुधिशिव्यसिधारे । तबतेखबरि सुनीनहिंयवगन तलफतप्राणहमारे ॥ बिकलाईतिनकोजननिनकी कैसेंकरिकहिजाई । बिश्वनाथछनजातकल्पसम दृगजलसरिसरसाई ॥

मंत्री । महाराज हों जाइ गुरु सों प्रश्न करी हुती तिन ध्यान धरि कह्यो दोऊ कुमार खुसी सों हैं अब हितकारी को कछु परम हित भयो है ॥

प्रविश्यद्वार: । महाराज सलामत भूपशीलकेतो पत्रिकेयम् ॥

(भूप:गृहीत्वा अलगतंबाचयति)

सभासदः पद । बांचतकहानृपतिसुखछायो ।
रोमावलीभलीउठिराजति बपुषपनसफलपटतरपायो ॥ मुखनिदरत अंम्भोजप्रातको अंबकअंबकदंबबहायो । बिश्वनाथजनुअनदहियेको उमड़िनैनमगबाहेरआयो ॥ १ ॥

भूपःसर्वान्श्रावयति । अनंत श्रीमहाराज अपराजिता धिराज सकल महाराजानि सिरताज जग लाज को जहाज गरीब नेवाज महि-मंडल महेंद्र सुरेंद्र के उपेंद्र सम करन काज यश जागत जहान केते भान समान प्रतापवान दान मान सनमान सुजान ज्ञान प्रेम निधान दिगजान भूप भूये ते शीलकेतु भूप की जोहार आप अनूप

कुशल स्वरूप हैं इत आपकी कृपाहीं कुशल है भुवनहित मुनि संग अंग अंग आभा उमंग अनंग आभा भंग करन हार आप के युगुल कुमार आये हम लोग लोयन लाहु पाये हितकारी महीपन मदमोरि महेश धनु तोरि मही कीर्ति छाई महिजा पाई सजि बरात आइये ब्याहि लै जाइये ॥

श्रुत्वासोल्लासंहृदहृदजनकारी। तात पत्रिका मो कों दीजै मातन कों सुनाऊं ॥

(इतिपत्रिकांगृहीत्वानिःक्रांतः) नेपथ्ये (मंगलगानकोलाहल)

पद। ललकतरहोंकुंवरलखिवेकों सुन्योहोतबरब्याहहै। अबनअमात अनन्दउरकाहूमुनिपरभावअथाहहै॥नृपदिगजानबीजसुखतरुको बोयोसुकृतसुहायहै। सोईयहिअवसरमहंअदभुत फलोचहत बिशुनाथहै॥

नृपःमंत्रिणंप्रति। अब गुरू गृह चलो चाहिये॥

(ततःजगद्योनिजप्रवेशः)

सविधिपूजयित्वान्नृप। होंतो आपही के पास जातहु तो आप बीचहीं मिले वड़ी भाग्य॥

गुरुः हांसुन्यो हितकारी डोल धराधर की खबरि आई है यातें आतुर चलो आयो हौं॥

(नृपः सहर्षं रुवॄत्तांतंकथयति)

जगद्योनिजः। आप से पुन्यवान पुरुषन के सकल काज आकस्माद होइय हैं॥

नृपः। अब बरात चलिबे की सुघरी बताइये॥

गुरुः। अबहीं आछी है॥

(नृपः मंत्रिणंप्रश्यति)

अंजलिंबध्वामंत्री। महाराज आपतो महामहेंद्र हैं सब तरह की तयारी ही बनी है॥

नृपःगुरुमप्रति। आपकी कृपा ते यह सब काज भयो अब बरात लैचलिये॥ इतिनिःक्रांतः सर्वे॥

(सपरिकर शीलकेतु भूपप्रवेश:) भूप: मंत्रिणं प्रति)

अंजलिंबध्वा मंत्री। महाराज अबतो बरात आगन मात्रही बाकीहै॥

प्रविश्यचार:अंजलिंबध्वा। महाराज सलामत दिगजान भूप सुत दरशन लालसा अति आतुर आये, होतों ज्यों त्यों कारियोजननमात्र बरात तें आगे आयो॥

(अपराजिताधिराजपत्रकेयम्)

सानंदंभूप:गृहीत्वा। अनेक श्री सकल महिमंडल मंडनानंद चंद अनंत चण्ड मार्तण्ड सम प्रताप वन्त उद्दण्ड दोर्दण्ड कोदण्ड प्रचण्ड वान नवखण्ड बैरिबरखण्ड वाहुदण्डखण्ड खण्डकरन खण्डन पाखण्डविज्ञान कृपानवान जाहिर जहान बिक्रम महान जङ्ग जयमान श्रुतिकेतु कीर्तिकेतु शीलनिकेतु शीलकेतु भूप जूयेते दिगजान भूप को जोहार, आप पत्रिका आई इतहूंकुशल बनाई। सुघरीआजुहिं पाई हरषि बरातचलाई॥

पुन: कर्णन्दत्वा ससंभ्रमं मंत्रिणंप्रति। महाराज निपट निकट आये निशानन के नाद सुने परैं हैं, चलो चलो आगे तें लीजिये॥

इतिनि:क्रांता:सर्वे।

(तत: प्रविशति सखीभिय:सहितादेवी)

नेपथ्ये धावो धावो ल्यावो ल्यावो हाथी हाथी घोरे घोरे रथ रथ॥

आकर्ण्यचकितादेवी। अलीअट्टालिकाचढ़ि देखुतो कहा होय है॥

(दृष्ट्वासखी)

गद्य। जिन अङ्ग अङ्ग आभा उमङ्ग रङ्ग रङ्ग तुरङ्ग एकसङ्ग गमनत धुनि धारे मतवारे कारे शैल सम भारे संवारे दंतारे कतारेंन को गैल गैल एल फैल घहरि घहरि चलत बहल सहल सहल न चलत नर महल महल चहल पहल सब शहर टहल खैर भैर है यातें बरात की अवाई आतुर जानी जाय है॥

देवी। अरी होहूं कौतुक निरखन कों आऊं हौं॥

अन्यासखी। हे देवी दूनो महाराज को संगम देखि आगेतें सतमोद मुनि द्वारचार के ततबीर कों द्वारपर आये हैं॥

देवी। ह्यांई लेवाय ल्यावो॥

(ततःप्रविशतिसतमोदः)

पूजयित्वादेवी । कैसी बरात है कैसे नृप हैं कैसे मिलन भयो ॥

गुरुःगद्य । बिबिधि बरन बैरख ध्वज पताका निशान कुसमित कानन महान निसान आदि बाजन प्रधन जागरादिगानकोकिलादि खग कूजनिश्रमान परसत पटसुबास जलकन युत मृदु सिंधुर निश्वास आठौ दिसनि औ आकाश त्रैबिधिबतास को बिलास करत सुखमा प्रकाश युत अतिहीं हुलास ऐसी बसन्त ऋतु बरात जोहत उर सुख न समात अरु इत जात अगवानब्रात का अदभुत संगम भयो ॥

(देवीततस्ततः)

सतमोदः पद । शोभासीवजगतपतिदोऊमिलनकाहिपटतरिये। उनको पटतरयेहैंउनको पटतरउन्हैबिचरिये ॥

हितकारीश्रोडोलधराधर समअंगसुठिसुकुमारे ।

विश्वनाथनृपसंगऔरहैं सुंदरयुगुलकुमार ॥ शोभा ॥ १ ॥

प्रविश्य द्वारपालिका। महाराज दिगजान तो सूधे भुवन हितुही के निवेसचले गये अरु सुवन मिलन लखितिनको अद्भुत सनेहप्रशंसत महाराज द्वार पर आइ मोसों कह्यौ की गुरू को जनावै अबहीं कुमारनलै इतआवैहैं ॥

सतमोदः । होंततबीर को जाउं हों ॥

देवी । होंहूं झरोखनतें लखि नैन सफल करन अट्टालिकाको जाइहों इतिनिःक्रांताः ।

(सकुमार दिगजान शीलकेतुप्रवेशः)

शीलकेतुः । हे महाराज आपनो शाखोच्चार करिये ॥

दिगजानः । हमारे गुरु करैंहैं ॥

सस्मितःशीलकेतुः । जाको बंश शुद्ध होयहै सो कहा आपने मुख कहत लज्जित होयहै ? ॥

जगद्योनिजः । महाराजन के पुरोहितई बंशोच्चारकरैहैं ॥

(इति शाखोचार करोति श्रुत्वा शीलकेतुरपि)

गुरुः । शीलकेतु बंश कहाई डोलधराधर के अर्थ आपनी कन्यादेउ ॥

भुवनहितः । इनतो बंश कहाई कन्या पाई यह काज सब मेरोकीन्हो

है दर्भकेतु की दूनो कन्या डहडहजगकारी, डिंभी दरकेअर्थदेउ ॥

शीलकेतु: । हमारी बड़ीभागि है जो मांगिकै संबंध करायो हितकारी तो भुज बल कन्या पाई है ॥

सतमोद: । आपजनवास को जाइये सकल चार करिये हमहूंह्यांके चार करै हैं (इतिनि:क्रांतत:)

प्रविश्य मंत्री द्वारपालं प्रति । महाराज सों जाहिर करो मोहिं कछू अर्ज करनेहै ॥

(द्वारपालोनि:क्रांत:)

प्रविश्यशीलकेतु: आजु तुम शंकित ऐसे कहाहौ ॥

मंत्रीभूपकर्णेजयति । याबिवाह ऐसो भयो जाको सुरनर मुनिसब प्रशंसा करै हैं औ सब बात सुधरिगई अबस्नेहबश भूप को इतना न राखिये बेगिहीं बिदाकरिये बहुत रोज आयहूं भये ॥

(शङ्कित: नृप:किंकारणम्)

मंत्री । हौं मंगनन मुख खबरि पाई है हरधनु भंग धुनि सुनि रैणुकेय आश्रम तें गवन करनहार हैं जौलौ आवैं तौलौं अपराजिता नाह अपने नगरको पहुंचि जायं तो भली बात है औ मोकों बलाय दिगजानहू भूप या फरमायो है हितकारी डीलधराधर की मातानिरखन को बहुत उत्कंठित है बेगिहीं बिदाकरायदेउ ॥

उत्थवस्थनृप: । बहुत भली चलो बिदाकरैं ॥ (इतिनि:क्रान्ता:सर्व्वे)

(प्रविश्य सपरिकरो पराजितेश: दूतस्ततहसंचरति)

दिगजान: । गुरो शीलकेतु साँचे शीलकेतु हैं जिनको दान सनमान सुभाय हमको तो भूलकही कहाकरैं जिनसो छन भरे की भेंट भई है तिनकोजनमभरि नबिसरै है ॥

जगद्योनिज: । सत्यहै शीलकेतुनृप याही भांतिकेहैं ॥

(शंकितस्वरमाण:बंगदेशीयछात्र:प्रविशति)

छात्र । आमीगौतमेरशिष्यआमाकेगुरुतगादापठैयेसन । सुने धनुष भांगा अतिरागित रैणुकेयआस्ते छेन येखन ॥ यदपितुम्हार पुत्र हैये मनभयकिछुहोवैनतुमाके । विश्वनाथन्ट पखबरि जनायाछेनकरो बेनतनबिजताके ॥

अर्थ । अमी गौतमे शिष्य कहे हम गौतम के शिष्य हैं अमा के गुरु तगादा पठैये सन कहे हमको गुरु शीघ्रहीं पठायो है । सुने धनुष भांगा अति रागित रैणुकेय या छण में आवत हैं । यदपि तुम्हार पुत्र हैं ये मन भय किछु हबैन माके । कहैं यद्यपि तुम्हारे पुत्र या भांति के हैं की तुमको कछु भय नहीं है । बिश्वनाथनृप खबरि जनाया छेन करिबेन तजविज ताके कहें है बिश्वनाथ नृप परंतु तुमको खबरि जनाई है ताको बिचार करियो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

(भूपः श्रुत्वा शंकितः विचारयति)

विस्मितःमंत्रीअंगुल्यानिर्दिशति । महाराज देखिये देखिये महाउपद्रव पेखो परै है ॥

कवित्त ॥ धरातउठावतअपारधूरिधुंधकार अंधकारकियेधाराधरनिधबायकै । तोरततरुनलैभंकोरनतेशाखवृन्दपूरिइन्द्रलोकहूकोपत्र नउड़ायकै ॥ अमितससानिढोंसोबधिरकरतकानखेर सेसहर कीन्हेछप्परउहायकै। कासिबीकंपावतसोकुटुरढहावतसोहाय ऐसोपौनकैसोकारिहैधौंआयकै ॥

भूपः ॥ गुरो गुरो या कहा महा उपद्रव होय है ॥

जगद्योनिजः । असगुनी बहुत पेखे परैहैं पै मृग दाहिने ओर चले आवैहैं यातें परिणामे भलोई होयगो ॥

(ततःप्रविशतिरैणुकेयः)

अतिशंकितोमंत्री । जैसे सिंह के ससेट लघु मृगन युथ्य ससेटि जाय ऐसी सिगरी सैन पेखी परै है ॥

छन्दनराच । विलोकि तेज योप्रचंड मारतंड चंदभे ।
बरैन बेदि बन्हि बायु बारिबेग बंदभे ॥
सुरेश लोक छत्रिबृन्द बंश्ते निरासभे ।
महीमहेंद्र रुद्रसे मुनिंद्र ते सत्रासभे ॥
दिपै त्रिपुंड भालमें जटा सुशीसमेंछजे ।
कुठारकंध है तुनीर हैकोदंड जसजे ॥
समुंज मेखला मृगाकोचर्म धारनै किये ।

लसैं बिशाल नैनलाल जाहिरै रसैहिये ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

(अलंकाररुद्राक्षकेअंगकीन्हे) करैदाहिनेदंडऔबानलीन्हे ॥
(हृदयमेंमहाअस्त्रकेधायराजैं) मिलेमांतरौद्रउइन्हैमाहभ्राजैं ॥
जो गौतम शिष्य कहिगयो तोते रैणुकेय निश्चय ते येई जाने जाइहैं॥

य.नादवतीर्थन्दप: । पाद्य पाद्य अर्घ अर्घ ॥
रैणुकेय: जगयोनिज गुरु धनुष कौन तोरयो ॥
जगद्योनिज: । हितकारी ॥
रैणुकेय: (आत्मगतं) सर्वभूत हितकारी तो नारायण हैं और हर धनु भंगकरन हारदूजो कौन होइ गो ।

प्रकाशम

सवैया । पूरुबहोंइतिहासनमें सुन्योकोपिहरीमृगनारिसंघारी ।
फेरिगुरुगरदाबिकैनील कियोनमिटैवहनीलताभारी ॥
यद्यपिदागभयोहियरें रिसिसांतकरीबितोबातबिचारी ।
तोरिपिनाकनवीनकरो हरिहौसबगर्वजोशिष्यपुरारी ॥ १ ॥
रनपच्छिपतीसबपच्छनलच्छन बानसपच्छनतेंतोरिहौं ॥
बहुअस्त्रनशस्त्रनसागरमें परपच्छिनतच्छनहौंबोरिहौं ॥
बरबिद्यामहेशजोमोहिंदई दरशायमकुंदमदैमोरिहौं ।
गहिचक्रकोवक्रकैकाटिकौमोद कौटूकपिनाककेहौंजोरिहौं ॥

(तिर्यगवलोक्य)

छंद पद्मावती । यह काको दल भारी है ।
भुवनहित: । यहि पालक हितकारी है ॥
रैणुकेय: । कहुकिनवेगिमुरारी है ॥
शिर:संचाल्यभुवनहित: । जिन घातिनि सरजारी है ॥
रैणुकेय: । तिय मारि पराक्रम कौन कियो ॥
भवनहित: । शरएकतनैतेहिफेंकिदियो ॥
रैणुकेय: । इतनैपरभावसुनामलयो ॥
भुवनहित: । पगछ्वैजेहिपाहननारिभयो ॥
रैणुकेय: । तुमऔरकीऔरबनावतहौ शिशुकोइतभाषिभोरावतहौ ॥

भवनहित: । तिनकासोपिनाकहुतोरिदिये ॥ मुनिहोपरभावमैशंककिये ॥
रैणुकेय: । अरे प्रभाव भनि भटाई कहा करै है यह हितकारी कौन है सो बताउ ॥
भुवनहित: । येदिग जान महाराज के चारि पुत्र हैं तिन में अग्रज हैं ॥
विस्मितरैणुकेय: आत्मगतं । चंडहू के प्रचंड दोर दंड को दंड करषत श्रम पावत रहे सो बाल बाहु दंडन तें टूट्यो काल गति जानी नहीं जाय ॥
प्रकाशम् । कहा वह धनुष तोरनहार हितकरी है ॥

(चत्वारोभ्रात: रथादवतीर्य उपसर्पन्ति)

रैणुकेय: आत्मगतं कवित्त । जोपैहोतोकामनामसुनतमहेशजूको धनुकोप्रनामकरिदूरिहीतेभाजतो । होतोजोसिंगारतोअकारताकोरस-हो है कैसेकैप्रतंचापानिगहितामेसाजतो ॥ होतोहरिहोतेचारिबाहुधारे शंखआदि वीरनरदेवनमैऐसोकोनभ्राजतो । भारीछबिधारोहठिमोरो मनहारो यहकोहैहितकारीरूपरोमरोमराजतो ॥ १ ॥

(अंजलिंबध्वा)

उद्दण्डजगकारी । अग्रज ये मुनिहैं कैक्षत्रीहैं निश्चय नहीं होइ ॥
हितकारी । दशदिग दुरदरदद करनकरनघट अग्रजमद हरनहरन हारहजार करन नर्वदा धारधार कुठार सों सोनृप बीरन रनमुनि हैं ॥
तत: चत्वारोभ्रातर:मुनिंप्रति । पायंपरियतु है पाय परियतु है ॥

(वामकरेण शिरंदत्वा रैणुकेय:)

छंद । अरेमोहिजानैन ? ॥
हितकारी । तुम्है कोनजानैन ॥
रैणुकेय: । फुटेहियजानैन ! ॥
हितकारी । कहाआपजानैन ॥
रैणुकेय:सवैया । तोरिपिनाकबकैबहुबाकच है अबआसुहिंनाकसिधारो ॥
हितकारी । बालसुभायनखेलनकोंछुयोटूटगोबनायेबनैधोंबिचारो ॥
रैणुकेय: । सोबनिहैनबनैयहबात दैपानिदोऊगृहपंथसिधारो ॥
हितकारी । हाजिरहैंमुनिहाथहजूरमेंस्वामीसोंहैकहादासकोचारो ॥ १ ॥

रेणुकेय: । अरे कहा दया कराबै है सर्ब छत्रानी गर्व अर्भ बसा बासित या कुठार धार है ॥

(इतिस्रुत्वादिगजान:भूमौपतति)

(मूर्छितंपितरमवलोक्यईषदश्रुस्रितनेत्रप्रांत:)

हितकारी । आपसे मुनिन के बदन ऐसे बचन नहीं खुलै हैं ॥

रेणुकेय: । कुंडलिया ।भटक्षत्रियछितिछत्रपतिधनुधारीबरिबंड । तिनके खंडनमुंडसों पूरकियोनवखंड ॥ पूरकियोनवखंडवपुषयकयक कुठारसों । नवबिद्यनदियतोषियेककोरुधिरधारसों ॥ जगजो निजहितभुवनभौखिमांगनपटुलेपट । असमुनिमोहिंजनिजानु बालमैमुनिहैंारदभट ॥ १ ॥

(गुरुनिंदास्रुत्वासक्रोधंडहडहजगकारी)

छंद । सम्हारिबैनभाषिये । मुनीशहूं नमाषिये॥ गुरुननिंदनोसुने । क्षमा करिदुजैगुने ॥

सक्रोधंरेणुकेय: । कुठारधारदेखिकै । करालकाललेखिकै ॥ सपच मानभक्ष्सा । अकच्छजच्छरच्छको ॥

दोहा । बारयकोसनिछत्रछिति कीन्हीधरेंकुठार । दुजताइहितें मानिबे लायकमैहैंबार ॥

सक्रोधंडौलधराधर: । यकइसबारनिछत्रछितिजबकीन्हींमुनिराजु। हितकारीसमक्षत्रिनहिं रक्षोजानिहोआजु ॥ २ ॥

सोत्साहंरेणुकेय: । भली कही भली कही ॥

छंदतरंगिनी । हितकारित्रिभुवननाह । गुनिभयोरनउत्साह ॥
पुनिबालकोमलजानि । मनभईबातगलानि ॥
तैंबलजुबरननकीन । रनचैनभयेनबीन ॥ १ ॥

पुन:हितकारिणंप्रति । हितकारिलेधनुहाथ दरसाउसोबलगाथ ॥

(सक्रोधंडिंभोदर:मंत्रिणंप्रति)

सवैया । भाषतहैकरिक्रोधमहाअपराधकहाधनुहौंयकतोरिकै । ब्राह्मण हत्यै हतेनृपहैहय मारिकैगर्बभरोंहियभोरिकै ॥ अग्रजतोनों चलैघरको गुरश्रीमहराजउसैनबटोरिकै । आवतहौंहूंचलोई अहौं अबहींमुनिकोमदमाटसोफोरिकै ॥

(सक्रोधं रेणुकेयः कुठारमुद्यम्य तं प्रति)

छंद पद्धरी । सुठि कठिन चाबि गनेस दंत । तोहि भये हुते रे श्रम अनंत ॥
मैं नाहिं त्रिपिति अति छुधित होउ । सि सुगल श्रोनित अब धीउ पीउ ॥

(सक्रोधं चयो भ्रातरः शीर्षं धनुर्हस्ते कुर्वंति)

हितकारी छंद चौपैया ।

सुनियेसबभाई है नवड़ाई क्रुद्धविप्रसोंयुद्धकिये ।
जोगाइअमरकहो नाहिंकोउकहो ताहिमारिबोखड्गलिये ॥ मुनिकहं
रिझाइबो जीतिपाइबो इहै नीति श्रुतिमांहकही । अबशीसनवावो
छमाकरावो अस्तुतिकरिकरिपांयगही ॥

(भ्रातृभिः सह प्रणम्य हितकारी)

छंद । प्रभुपालकयेबालकछमाकरो । भूलेहुंहियरेरोषनकबहुंधरो ॥
कारिरनजबहिंकुमारहिजीतिलियो । गौरीसहितमहेशहुकृपाहि
कियो ॥

सस्मितं रेणुकेयः गद्य । निजकुलकुलिदलहितकारी हितकारीबात
तिहारी हारी मन है तदपि बालक छुद्र छुद्र बचन बचन लायक
बोलत नहीं है गुरु अपकार कारमुख भंग भंग अंग बिनु कीन्हें
कैसो सहो जाय ॥

हितकारी । हो सेवक खरो खरोई हों जेहि रिस जाय सजाय सो
करि लीजे ॥

रेणुकेयः । छंद । ममभयछत्रियनेभोब्राह्मणनोहिपढ़ायो । भूलिभो
कहरनछत्रसेनाहितोसोंबनिआयो ॥ बिनयकरतहै कहाधनुषधरि
मोहिंरिझावै । कैआसुहिंआवतहूंतातसमस्वांगलेआवै ॥ १ ॥

(गुरुपित्रोर्निंदां श्रुत्वा सक्रोधं हितकारी)

छंद पद्धरी । गुरुनिंदतहौतुमबारबार । दुजगुनडरियतुहमनहिंकुठार ॥
सबशासनकरिबेकहंतयार । सोकरहुकहियजोकरिबिचार ॥

सक्रोधं रेणुकेयः छंद नाराच । कोदंडभौरमाहबोरिदेहुंभूमिइन्द्रको ।
कुठारबीचिमोबहायसैनबृत्तबृन्दको ॥ कुमारचारिजारिदेहुंक्रोधबाड़-
वग्निमैं । जोलेहुंशंभुबैरयोंतोसांचयामदाग्निमैं ॥

छंदतरंगिनी । करिछत्रिनयनिरमूल । जगराखिजनअनकूल ॥

(अबक्रोधहेतमिट य) तपसुचितकरिहौंजाय ॥

हितकारी । छंदगीतिका ॥ जेबचनपूरुबकहेतिनतेंगुन्योगर्बहिअत्ति है । यहबातमुनिवरभलीभाषीकरनहमऋहंसत्ति है ॥

सक्रोधंरेणुकेय: । रेबालबढ़िबढ़िकहाबोलतसुनीपुरुषनगतिनहीं । धरु बानधनुरनगुनेजोबलवानक्षत्रियकुलमहीं ॥

भुजंगप्रयातछन्द । रनैछोनिबेदीअनीइन्धजारों । बढ़ेकोपज्वालानृपै होमिडारों।कुठारैसुबाबालआपुषपधारों।दोऊबिप्रकोसेवकैमूड़िडारौं ॥

सांतिक्रोधंहितकारीछंद । अबलोंबिप्रमानिरिसिरोंकोपुनिपुनिगुरु निंदनैररै । डिंभीदरदेदेधनुमेरोदेखहुंमुनिधौंकहाकरै ॥

सक्रोधंरेणुकेय: । वहधनुधरितेयुद्धनलायकयहबरहरिधनुहाथधरै । औसरकरकरिजोरिशरासनऔसरबहिरनकोनिबरै ॥

(रेणुकेयहस्ततोधनुराकृष्यआरोप्यचहितकारीटंकरवति)

तत:जगद्धोनिजंप्रतिभुवनहित: ।

कबित्त । डोलीधराबारबारदिग्गजचिकारकीन्हो हालिगोहजारसीस कच्छअकुलान्योहै।दैत्यबिकरारभयमयहिअकारभयेपाराबार बारिबेलछोड़िछहरान्योहै ॥ जैजैशब्ददेवदारसहितपुकारकरैं प्रलयसंसारहोतमनअनुमान्योहै।देखौंयमदग्निबारकरतेंकुठारै गिरनी सरिसहजारकद्रराजवारजान्योहै ॥

हितकारी । छंदतरंगिनी ॥ सरजुरतोयहिकोदंड । किनलेहुपरस प्रचंड ॥ तबनिजनराखेहुआघु । कतकंपतन्हातसोमाघु ॥ अबरनसोमंडियऋय्य । ममगुरुनिकरियेशिष्य ॥ जेहिजोर कियोनिछत्र । प्रगटहुसोकरकरिअत्र ॥ १ ॥

(सभयरेणुकेय:)

चौपैया । जेपुरुषपरेसाजासुनिदेसारबिससिउड़गनपवनचलै । सबकेउपकारीजेहितकारीपरमपुरुषजेहिजसअमलै ॥ तुमहौंतेचेतनसबहींकेतनहोंकेहिबलतेंयुद्धकरौं । अपराधमहानाभोभगवानाक्षमहुक्षमहुंप्रभुपांयपरौं ॥

हितकारी सो० ॥ यहअमोघसरमोर हतहुं कहांअबभाषये ।

(सर्वोपकारिणींहितकारिणींबिचार्य्य)

रैसुकेय्य: । देखिदयाद्दगकोर मोरिस्वर्गगतिमारिये ॥

स्वर्गगतिंगतांज्ञात्वा । हों तप करन जात हौं यह रूप तुम्हारो हमारे हिये में बन्यो रहै ॥ (इतिप्रणम्यनिक्रांत:)

(तत:जगद्योनिज: भूपसुतथाप्य वृत्तान्तंश्रावयति)

सहर्षंभूप: ॥ आपसे जाके गुरु हैं ताकी सकल भय नेवारनहो यामें कहा आश्चर्य है अब आशु अपराजिता कौ सुतर सवारजोड़ी भेजिये औ बरात चलाइये। इतिसर्वेनि:क्रांता: ॥

(सभृत्यमंत्रीप्रवेश:)

मंत्री । गलिनगुलाबसिंचावो महल कल कलसन नवल पताक चढ़ावो सकलस सगान सवाद्य कन्यन आगे चलावो बरात निकट आई ॥

(नेपथ्ये कोलाहल:)

भजन । सहितबरातभूपइतआवैं । टेक ।

खैरभैरयुतशहरलसतअति रहसिबिहंसिनरधावैं ॥

चलोचलोलोचनफललीजै अबआनंदमितनाहीं ।

ललकतरहीकुंवरलखिबेको लखबबधुनसंगमाहीं ॥

उतरहिंचढ़हिंअटनउतकंठितमातनसुखकिमिकहिये।

विश्वनाथजपरबरषनहित लाजामोतिनगहिये ॥ १ ॥

तत: । प्रविशंति एकत: नीराजनंगृहित्वा सपरिवारादेवाअन्यत: स बधूका: शिविकारूढ़ा: कुमाराश्च ।

सखीसखींप्रतिभजन । परछतमैयनसुखअधिकाई । टेक ।

आनंदजलउमगतअंबकयुग भूलिभूलिविधिजाई ॥

सुतसुतबधुनतकहिंजनचाहहिं हगमगाहियहिसमाई ।

विश्वनाथमुखचूमितोरितृण पुनिपुनिलेहिंबलाई ॥

पुरोहित: । सुत सुत वधू देव दरशन कराय सोवावो ॥

इतिनि:क्रांत:सर्व्वेप्रथमोंक: ॥ १ ॥

इति श्री मन्महाराज धिराज वांधवेश श्री महाराज बिश्वनाथ सिंह देवजू कृतआनन्दरघुनन्दन नाम नाटके प्रथमोङ्क: ॥

अथ द्वितीयाङ्क प्रारंभः॥

(सशिष्यजगद्योनिजप्रवेशः)

शिष्य। गुरो रबिराकसन रनरुधिरकीललाई पश्चिम दिशि छाईभाई फेरि मारतंड प्रचंड तें खंडखंड करिउड़ाये अस्थिखंडये नभपेखे परेहैं॥

गुरुसस्मितं। यह ब्रह्म कुंडजा तट हों संध्या करौ होंतुमहूं जाइ संध्या करो॥ (इतिशिष्यःनिःक्रांतः)

(गुरुःसंध्यावन्दनंनाटयति प्रविश्य ब्रह्मकुंडजा प्रणमति)

गुरुः। पुत्रि हित कारिणि अनुरागिणी भवेत्याशिषंदत्वा। पुत्री दीन मनकाहेहो॥

ब्रह्मकुंडजा। हों पिता मह पा पूजन गई हुती ताही समय इन्द्रादि सुरजाय शीस नवाइ बिनय करी॥

जमक। दिगंबिर दरन रन करन सर्व भूत हित हितकारी परम पुरुष अवतरे अवतिय संग संग बिहार हार रचनि रचनि चितकी है, सुनि धाताकह्योहों उपाउ करोहों सुनि मेरी मति अकुलानी॥

गुरुः। तुमकों तोभूरि भावतंभूलिशोक भयो है अपराजिता में हित कारीको बिहारनित्यहै अचिन्तशक्तिहैंदोऊ बात करैंगे॥

(सहर्षंब्रह्मकुंडजा अंजलिंबध्वाकिंचिद्वक्तुमिच्छति)

जगद्योनिजः। हस्तसंज्ञयावारइत्वा॥

आकाशेकर्णन्दत्वा। मोकोंजानीकी बानीयौंसुनीपरी, तुमदिगजान पैं जायडइडह जगकारी, डिंभोदरकों काश्मीरको पठवाइयो औ उपायकरि भूपसों हितकारी कों युवराजपद दिवावत बन दवाइवो अरुहित कारिहूकीयाही रुखहैहों कुटिलाकेकंठ बैठि सुरकाज सिद्ध करन जाउं हों पुत्रीअबतुमं जाहुहोंहूं मातुआज्ञाकरन जातहों॥

(इतिनिःक्रांतौ) (प्रविश्यआदिकबिः)

स्वगतं। शिष्य जलफल फूलदल मूल ना लैआयोअरचन कोंआवारभई॥

(ततःप्रविशतिशिष्यः)

आदिकवि: । अरेयेतीबिलम्ब करि अब ठगियेसो कहारह्यो है ॥

शिष्य: । अंजलिंबध्वा ॥ होंयाम यामिनी बाकी सुरसरी कलिंदजा संगम अस्नान करनगयो हुतो तहां बड़ो आश्चर्य लख्यो ॥

गुरू: । किंकिम् ॥

शिष्य: । सरूप धारिदोनों सरिसंबाद करिरहीहुतीं ॥

गुरू: । कथंकथम् ॥

शिष्य: । चीरवतीपूंछी तुमजो तपिताहीसो पितुपदपूजन गई हुतीको और कछु कारण है कलिन्दजा कह्यो हों पीउपरसतें सपितहू योंहीं शंका करी तिनकह्यो अतिसंतप्त ब्रह्मकुंडआधार परेही हू बूभतो हुतो सो गदगद गर कह्यो काश्मीरी दिगजान सों बरदान मांगि आपने सुत कों राजलियो अरु सबधूबंधु हितकारी को बन दियो मंत्री यान चढ़ाइ त्रिपथगा तीर लों पहुंचाइ पुर आइ सुधि दई सुनि भूपको परमगति भई अपराजिता नेवासिन अतिशोक आसुन सों बढ़ि हों आप को मिली आइ ताते है कलिंद कुमारी होंहूं उष्णता धारन करी है चीरवती बड़े शोक की बात है सुनि हों ठगिसी रही अब बनितन को बिस्वास काहे को कोई करि है ॥

आदिकवि: । हा भूप दिगजान हा सुरपति कारन प्रान हा देनदान महान हा भगवान सम ज्ञान हा मुनिनकारी सन मान हा करन बचनन प्रमान हा यश जाहिर जहान ॥

(इतिनिश्वस्यततःसतः)

शिष्य: । पुनि चीरवती पूछ्यो हितकारी कहां लों आये होयंगे कलिंदजा कह्यो भास्कर क्षेत्र में याज्ञवलक्य शिष्य ते सत कारित हूं मेरे पार उतरि आये अब नहीं जानो धों कहां हैं यह कहि मोकों जानि दोनों जल में प्रवेश करि गई ॥

आदिकवि: । शोक तो बड़ोई है पै यामें एक हर्षऊ है ॥

शिष्य:सविस्मयं । गुरो शोक में हर्ष हौ न समुझ्यो ॥

गुरू: । वत्स चाहिये तो हितकारी ह्याऊं आवैं ॥

नेपथ्ये। भजन। पथिकतुमकहहुरहहुकेहिदेश। टेक।
असहमदीखसुन्योनकबहूं कोउनखसिखअनुपमबेष॥ बनकंटकित चलतिसुकुमारी प्यादेसंगतुम्हारे। बिश्वनाथसतिमानहुंकांटे गड़त करेज हमारे॥ १॥

(बंधुबधूसहितहितकारिप्रवेशः)

शिष्यः पुरोवलोक्य। गुरो हितकारी तौ आइगो गये॥
गुरुः। अहो भाग्य महो भाग्यं अर्घपाद्य ल्यावो आतिथ्यकरैं॥
हितकारीमुनंप्रणम्य। बास बताइये॥
आदिकविः। वत्स तुम्हारो बास तो हमारे हिये में है दूसरो बास ह्यांते दखिन कछु दूरि बिचित्र शिखर गिरिवर है॥
गद्य। होतहीं दरशन सांत रस बरसन मुनिन मन करषन संतत सुख सरसन लतन तरुन कुंजन छबि पुंजन सुदल फल फूलन मृदु मूलन संघन बनन खग कुल वृन्दन मंजु अलि पुंज गुंजन सुंजन करिन दरिन दरिन झरनम झरन जल कनन दुरदिन करन जगन मृगन गनन संकुल सुधा सरिस सलिल सहित अति ललित कूलन बलित बिकसित बरन बरन अमल कमल कलित कल कारंडव चक्र वाक बाल मराल माल कूजन मुद मूलन तकत त्रैताप उन्मूलन छबि भरितनि सरितनि महा मंडित है॥
हितकारीसुत्वासहर्षं। आज्ञादीजै॥
मुनिः। आजु के रोज ह्यांई रहो रूप लखाय हमारे नैन सफल करो॥
हितकारी। बहुत भली है मुने जब तें हों आयो तबतें अपरा जिला की खबरि नहीं पाई आप त्रिकालज्ञ हैं बुझाय सुखी करिये॥
मुनिः ध्यानंनाटयित्वा। उहडहजगकरी सबंधु पुर आये हैं और वृत्तांत सब कछु दिन में आय वेई कहैंगे॥
हितकारी। आप सों संबाद करत यामिनी जात न जानि परी प्रात सूचक पक्षि अरो धुनिकारि रहे हैं मानो पंथिन को आतुरी करावै हैं आज्ञा पाऊंतो बिचित्र शिखर जाऊं॥
मुनिः। चलो ह्वांलों हों पहुंचाइ आऊं॥ इतिनिःक्रांताःसर्व्वे।

(सकुटिलाकाश्मीरीप्रवेशः)

काश्मीरी । सखी काज तो सब सुधरगो पै एक अब यही बाकी है डह डह जगकारी को आइबो ॥

कुटिला । परम सुखद खबर कहो हौं चार गुरु के ह्यां आयो है ताते होहूं सुनि आई हौं की डह डह जगकारी हालई आवन हारहै ॥

(डहडहजगकारीप्रवेशः) माई पांय परो हौं ॥

शिरआघायकाश्मीरी । पूत सिगरो काज सवांरि राख्यो हौं ॥

डहडहजगकारीविस्मितः । कोन ॥

काश्मीरी । सर्वं वृत्तान्तं कथयति ॥

(डहडहजगकारीस्थलाकुर्वं नाटयति)

काश्मीरी । हे पूत भूप सोचन लायक नहीं है अब काल सों काहू को कछु बस नहीं है ॥

डहडहजगकारी ।

पद ॥ हितकारीमहंदोषगुनतविधि कैअकाथकीपाटी ।
दियेशुन्यसोईयहिडगन अवलिनजबयहिआँटी ॥
लखिश्रमखेदखरीधरिदीन्हो सोईससियहभायो ।
विश्वनाथउनखोजिनपायो तैंपताटकहूंपायो ॥ १ ॥
अरी तेरी जीभि मैं काटि डारतो माता भई कहा करौं ॥

कुटिला । अरे छोहरा उपकार कियें अपकार मानै है तेरे लिये नीतिसार निचोरि कै मैं बुद्धि दई है तब यह काज भयो नातरु तेरी राज होन वारो हुतो ॥

डिंभोदरःसक्रोधं । आः पापे तही सब अनर्थ को कारण है ॥

इतिकेशानगृह्णाति । (दृष्ट्वा काश्मीरी)

सवैया । महिमाहंकढ़ीलतकेशगहें कुटकावहुलातनिमारत है ।
कछुहीरनपीरअहैतुम्हरे बहुबारउठाइपछारतहै ॥
इतनाहींकलंककोसोचकरो तियनासेननर्कहिहारतहै ।
असुआसुनसंगकढ़ीईचहैं अबहूंनहिंरोषसम्हारतहो ॥

डिंभोदरः । याकों फल दे फिरि तोहूं कों समुझाऊंगो ॥

(इतिश्रुत्वा काश्मीरीसभयंनिःक्रांता:)

उद्दण्डजगकारी । नारी बध किये मोकों हितकारी की भय लगै है ॥

(श्रुत्वाडिंभोदरः सुं चति) ।

उद्दण्डजगकारी । चलो कुशला मा के पास ॥

इत्युभौपरिक्रामतः । (प्रविश्यकुशलारोदिति)

भजन । हितकारीहितकारीछोटा रखतप्रानसमभाइनिको ।
बधबंधुयुतकाढ़ततेहिनर्हि कसक्योहियोकसाइनिको ॥
मंत्रीगुरु नृपबैनबानसम नहिंयहि हृदयपखानगड़े ।
विश्वनाथबिधिकहाकारोंअब चहुंदिशिदुखसागरउमड़े ॥

उद्दण्डजगकारी । कुशला माई उर सीस कूटत ह्यांई चलीआवै है ॥

इतिउपसृत्यविलपंतौपादयोर्नियततः । (कुशलोत्थाप्य)

भजन । पूततुम्हैं बिनाकियनुबमाताऐसोहालहमारो ॥

उद्दण्डजगकारी । छाड़ुजोसंमतमोरकढ़ौनहिंभोगिहुंसर्पहजारो ।

कुशला । तुमसमकौन होतजगमाहीं अबधीरजउरधारो ॥

उद्दण्डजगकारी । विश्वनाथहितकारीबिनुकिमिजीहौंमातुबिचारो १॥

प्रविश्यसुस्थितासगद्गदं । गुरु कह्यो है धीरजधारि पितु कृत्य करैं फिरि जो उचित होइगो सोकरैंगे ॥ इतिसर्वोक्तं सर्वेनिःक्रांताः ॥

(ततः प्रविशतिसशिष्यो जगद्योनिजः)

जगद्योनिजः शिष्य कथति । उद्दण्ड जगकारी जबतें पिता को कर्म करि चुके हैं तबतें मातु कृत कर्म लज्जा तें बदन नहीं देखावै हैं मेरी आज्ञा सुनाइ तूं लेवाइ आवै ॥

शिष्यस्तथेतिनिष्क्रांतः ।

(प्रविश्यउद्दण्डजगकारीदंडवत्पादयोर्निपत्य रोदनंनाटयति)

गुरुः । वत्स धीरजधरो अब तुम्हारे आधार पुर है पितु दई राज्य पालन करो ॥

(इतिश्रुत्वा उद्दण्डजगकारी अधरस्फुरणंनाटयति)

गुरुः । वत्स वत्स दिगजान भूप के पूत हौ हितकारी के भाई हो जो कछु कहिबे कों होय सो धीर धरि कहो ॥

(व्याख्याऽवरुद्धकंठ उद्दंडजगकारी)

छंद । आसुनिमिसुकढ़िबारिबारिनिधिमिलनकियो । महाजननिकृत अघमोहिकरिहततेजदियो ॥ लेतहिंलेतउसासबयारिनशेषरह्यौ । सुमिरतहितकारीसरूपअवकासनह्यौ ॥ शोकआगिमहिंअंगजरगो तनअहैबनो । नरीरज्जुकोखाखारहोयेठनहिंमनो ॥ पंचतत्वबिन भयोराजिअबकावनकरै । बिस्वनाथदरशाइयप्रभुपदशोकहरै ॥ १॥

पद । हायहौं एकहुंकामनआयो । टेक ।

हितकारिहियुतबंधुबधूमा पथकंटकितचलायो ॥

जोहोतोसंगहिबनजातो पीठिबिछाइचलौतो ।

हाहाबिस्वनाथहितकारी हमहूंपूछिसिधौतो ॥ १ ॥

(इतिमुर्छान्नाटयति)

गुरु: । धीर धरो धीर धरो ॥

उद्दंडजगकारी । गुरो हितकारी पद दरसाइये याहि में मेरो प्राण रहै गो ॥

गुरु: । भलो कहो भलो कहो अब सबकोई ह्वांई चलैं जो फिर आवैं तो सिगरो बात सुधरि जाय ॥ इतिनि:क्रांता:सबै ।

(सबंधुवधुहितकारिप्रवेश:)

हितकारीमहिषांप्रति । यहविचित्रबनमेरेमनको आकर्षणकारै है ॥

महिषा । याके बिबिधि बिहार स्थल में सुख ही सों काल कटि जाइ गो ॥

(भीलधराधर: कुटींविरचयति)

हितकारी । ये भीलधराधरआछीकुटीबनाई या निपुनाईकहांपाई ॥

भीलधराधर महिषांप्रति । आप यह मारे मृगन को मासु सुखाइये तब ताईं हौं और मारि ल्याऊं ॥ इतिनि:क्रांत: ॥

हितकारी । हे भीलकेतु कुमारी तिहारे लिये हौं आछे आछे फूलन के हार गूंदत हौं ॥ इतिगुंफति ।

(वायसप्रवेश:)

महिषा । पीउ यह कैसो काग है आमिषखाय खायजाय है जो हौं हांको हौं तो मोको चोंच तें चोंथि भजै है ॥

क्रुद्धहितकारी । आ: पाप तेरी दुष्टता को फल यह सींक को सर देई गो ॥ इतिनि:क्षिपति भीति वायसोनि:क्रांत: ।

(डीलधराधरप्रवेश:)

मृगानुसमर्प्य । अग्रज आखेट खेलत एक मुनि सों भेंट भई ताकी बानी सुनि शंका भई है ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

डीलधराधर । मुनि मसों कह्यो शक्रसून कों एक सींक को शर कोई चलायो है सो वाके पीछे पीछे धावै है वह काक सर्व लोक फिरि आयो कोई नहीं त्राण कियो सुनिकैं मन में बिचारयो ऐसो तो मेरे जेठ भाईही को बाण है यातें त्वरा करि आयो ॥

हितकारी । महिजा को हाल नहीं देखो हो ॥

हृष्टडीलधराधर: । आ: पाप येतो सर्व भूत हितकारी हैं हों होतो तो याही ठौर तेरो शीस काटि डारतो ॥

प्रविश्यविकलोवायस: । शरण शरण त्राहि त्राहि पाहि पाहि रक्षा करो रक्षा करो ॥

हितकारीमार्गे: । मेरो शर अमोघ है यातें एक नैन दै अयन के जाय ॥

काक:पद । होतुमप्रभुसांचेहितकारी । टेक ।

मेरोअघभारोभुजायकै नाथकृपाकीन्हीअतिभारी ॥ एकआंखजो सरसोलीन्हीजानिहेतुमोलियमनमाहीं । बिश्वनाथजातेंयहभूलिहुं कोनहुंपापकरैपुनिनाहीं ॥

इतिप्रणाम्यनि:क्रांत: ॥

डीलधराधर: । बड़ेभाई बनजीव बड़े भय तें व्याकुल भजे चले आवै हैं धौं कहा कारण है ॥

हितकारी । ऊंचे तरु चढ़ि देखोतो ॥

(तथाकृत्वाडीलधराधर:)

छंद नाराच । उठौ उठौ को दंड चंड बान लेहु हाथ मैं । नजोहिजातमारतंडधूरिधुंधगाथमैं ॥ तुरंगरंगरंगकैमतंगअंगसैलसे । सुजानबृन्द मैंसुजानबीरइन्द्रसेलसे ॥ सुभांतिभांतिकीपताकपांति

नाकछांवती । पदातिजूह्वकेवाहेंनजीहपारपावती ॥ अहोअनी
अपारयहिंअद्रिबेरआवती । छियेसुबीररंगकीतरंगिनीबढ़ावती ॥

छंद त्रिभंगी । डहडहजगकारीसजिदलभारीछुद्रविचारीयातहियें ।
दोभाइनिमारी करहुसवांरीरजिसुखारींमानुकियें ॥
अबहींधनुधारीबरघरझारीतासुगवारंमेटतहीं ।
प्रभुल हहितकारीत्रियासमचारीसैननसारीपेटतहीं ॥

(उत्तीर्य्यधनुरारोप्य)

छंदनराच । समुद्रबाहुदंडयेकोदंडमौरभायकै । महानबानबृन्दउच्चर्मि
कोउठायकै ॥ संग्रामकेरसंगमेंकुबंधुबेलफेरिकै । छुवेंगे
आयपाय आसुसैनबिप्वबेरिकै ॥ १ ॥
आ: देखातो कालकी बिषमता पनहीं शीस चढ़न लगी ॥

(रंतैरथरंसंपीध)

दोहा । डहडहजगकारीमहाकरीढिठाईआय । कोटिकिदैरनछनकालौ
देहौंसबसमुझाय ॥ १ ॥

पुनि: । धनुसंचाल्य खड्ग मुख मवलोक्य च साट्टहासम् । जान्यो जान्यो
जान्यो यह हमारे सुकृत को फल है भूपकृत अनीति याही रीति
में मिटन हारी रही है ॥

सवैया । आजुभरेरनरंगनमेंरनअंगनमैंधनुधारिकैधैहौं ॥ क्रोधकेभारमें
भूंजिसबै दलभस्मअभागिनिकेअंगलेहौं ॥ बंधुदोउमृगबंधु
बनाय दिगंबरकैकैदिगंतपठैहौं । बापकोबंदिमेंराखिकेआजु
बलीबड़ेभाईकोराजकरैहौं ॥

छंदगीतिका । करिकोटिकायनकालरुद्रहुकोसहायहुकोकरै । यहसैन
सर्पिपसाथतीममबानबन्हिहिंहमेंपरै ॥ जिमिलवहिलेत
लपेटिलगर कलंककुलके टोडधरों । पुनिकाथमीर
पसदलछतिमैं कालिकाखप्परभरों ॥

पद । दोनैशासनबेगिगेमांई जाइतुरतगहिल्याऊं । ताहीकारकुटिलाकी
रसनाकाड़नहनिकटबाऊं ॥ डहडहजगकारीजननीके आंसुनसरित
बहाऊं । निजरिसऔकुपलाहियरेकी आगीआसुबुझाऊं ॥

(इतिप्रलपय्धावन्तमिवालोक्य)

हितकारी । काहेको इतो रोष करोहो तुम्हारीसीप्रीति मोपरइनहूंकी है डहडह जगकारी लेवाइवे के हेत आवतहोंइगे ॥

(ततः प्रविशति स गुरु सबिबंधुः डहडह जगकारी)

डहडहजगकारी । पाहि पाहि इति दण्डवत्पादयोः पतति ॥

(समुत्थाप्य हितकारी गुरुपादयोः पतति)

गुरुराशिर्बंदत्वा । अब तुम जाहु पितु कृत्य करि मातन सों भेंट करि आवोतौलोंहौं याआश्रम मेंआसीन हों ॥ इति स शोकं सर्वे निःक्रान्ताः ॥

(नेपथ्ये रोदनकोलाहलः)

गुरुःशिष्यम्प्रति । रोदन कोलाहल होयहै यातें जान्यो जायहै की हितकारीपितुकृत्यकरिमातनसों भेंटकरैहैं ॥

(बंधुभिः सह हितकारी प्रविश्य रोदिति)

गुरुः । भूपशोचन योग्य नहींहैं अरु अवसर और है धीरधरि सब को धीर धराय डहडह जगकारी जामें डहडह होय सो करो ॥

हितकारीअंजलिंबध्वा । पितुमातु आज्ञाप्रथमहीं बनगवन की है अबजो आप बिचारि कै कहिये सोकरौं ॥

जगद्योनिजः सबिचार मधो मुखस्तिष्ठति ॥

(डहडहजगकारीकुशासनोंकृत्वाअनशनंनाटयति)

हितकारी । धरणा करनो क्षत्री को धर्म नहींहै पाप लग्यो उठो उठो जल छुवोमोकों छुवो ॥

(डहडहजगकारी जलंस्पृष्ट्वारोदिति)

हितकारी । शोककाहेकरो हो जो बिचारि कै तुमहीं कहो सोहीं करौं ॥

डहडहजगकारीभजन । मोसोंअबनकछूकहिजाई । टेक ।

जोयहकहौं करियप्रभुऐसे सेवकरीतिनसाई ॥

जौफिरिचलतनआपऐनको प्राणकढ़तअकुलाई ।

विश्वनाथअवलंबदासहित आपुहिसमुझिबताई ॥

हितकारी । ये पादुका लैआइइनमेंहमारो प्रापत्यतुमकोबनीरहैगी ।

(साष्टाङ्गम्प्रणिपत्य पादुके शिरसिधृत्वा)

डहडहजगकारी । अवधि बिताय जोआयहै तौजीवतनहींपायहैं ॥

(गुरुपदौगृहीत्वा)

हितकारी । दासजानिमोकों न भुलायगी ॥

आशिषंदत्वागुरुः । प्राणहूं की काहूको सुधिभूलेहै ॥

डिंभीदरःपादयोःपतित्वा बाष्पाऽवरुद्धकंठम् । मोकोंतोसंग लेचलिये ॥

हितकारी । डहडहजगकारी कों पादुका दई है तातें तुमहूं को मेरी प्रागट्य बनोरहैगो मातमकों शोक न होन पावै ॥

(इतिश्रुत्वानिःक्रांता:)

हितकारी । डोल धराधर इहाँ गुरुमातु बंधुनसंबियोग भयो है या थल आछो नहीं लगे अब महामुनि अनीप्यौपतिके आश्रमचलिये

(इतिनिःक्रांता:)

(अनीप्योसोमजनकप्रवेशः)

अनीप्यौ । महाराजऐसो सुन्यो हैकी हितकारी, महिजा, डोलधराधर, विचित्र शिखरतें ह्यांको आवै हैं ॥

सरोमाञ्चगद्गदं सोमजनकः । अहोभाग्यमहोभाग्यम् ॥

(हितकारीप्रवेशः)

महिजा । अनीप्यौ तो परमबृद्ध है ॥

सवैया । केशसपेतलसैसिरके मुखमाहवलोकसकैपलखोलै ।
नाहिमैदंतसमातिहैस्वासन ठोढ़ीबिढ़ीबदतैसुरडोलै ॥
लंकलचीक्रसकायकपै लकुटीकरपल्लवहैसुठिलोलै ।
खालभुलैपैदिपैअतितेज छपाकरकीछबिछामानिचोलै ॥

हितकारी । मुनिन को वह शरीर किशोर होय है ॥

सोमजनकः । येतो आइही गये अर्घ पाद्य ल्यावो आतिथ्य करें ॥

सवधूबंधुहितकारी । पायं परियतु है पायंपरियतु है ॥

दंपती । अभीष्ट सिद्धि रस्तु ॥

सोमजनकः । शुभआगमन भयो तुह्मारे दरश की हमारे बहुत रोज तें आकांक्षा रही है सो आजु पूरण भई ॥

हितकारी । दण्डकारण्य को गैल बताइये मोर जाइंगे ॥
मुनि: । हौं जान्यो जो आप कार्य करन जाइ हैं अग्नेय दिशा ह्वै बानभंग मुनि कों दरश देत चले जाइबी ॥
अनीष्वो । पुत्रो ये पट तुम्हारे लिये संचि राखे रहे सो भूषित करो ॥
हितकारी । अबसंध्याबंदन को समय है ॥
मुनि: । चलो होहूं चलों ॥

(इतिनि:क्रांत:सर्बेद्दितीयोंक:)

इति श्रीमन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत रघुनन्दन नाम नाटके द्वितीयोङ्कः ॥ २ ॥

अथ तृतीयाङ्क प्रारम्भ: ॥

(मैत्रावरुणि: प्रवेश:)

मैत्रावरुणि: । (आत्मगतं) दरशण को शिष्य नहीं आयो बहुत राज भये कहा कारण है ॥

(शिष्य:प्रवेश:)

शिष्य: । दण्डवत प्रणमति ॥
गुरु: । अरे कौन कारण ते देर भई तोकों ॥
शिष्य: महाराज हितकारी सबंधु बधू मेरे आश्रम में आये तिन के संग संग मुनिन के आश्रम बतावत दशवर्ष फिरयो यातें येते दिन बीते ॥
गुरु: । अरे मेरे इष्ट केहिं मारग ह्वै तेरे आश्रम आये ॥
शिष्य: । जब आप हम एक ठौर रहे तब सोमजनक को शिष्य हो कहिगयो तै को हितकारी सबंधु बधू हमारे आश्रम आये हैं ह्वांते चलि जविसुत को बधकरि बानभंग के आश्रम आये हैं मुनि तिनको रूप निहारत निहारत जोगाग्नि में आपनो शरीर जारि दियो ह्वांते दण्डकारण्य मुनि को संग लिये मेरे आश्रम आये फिरि होहूं संग लग्यो ॥

गुरु: । सगड्ढर्दं कहु कछु इहां कब आवैंगे ॥

शिष्य: ।आवतई हैं हों आगे ते खबरिही जनावन आयो हौं सो अब जाइ लेवाइ लिये आवो हों ॥ इतिनि:क्रांत: ॥

(सवधूबंधुहितकारी प्रवेश:)

मैत्रावरुणि: । अर्घल्याल्यावो पाद्य ल्यावो एतो आइही गए ॥

सबधूबंधुहितकारी । मुनि पायं परियतु है ॥

मुनि: । चिरंजीव तुम्हारे दरश लिये हम इहां टिके रहे हैं ॥

हितकारी । अब कहूं हमको बास बताइये जहां बसि बनवास को शेष दिन बितीत करैं ॥

मुनि: (पदमरहटीभाषाको) गोदातटबनअहैचांगला ।
दलफलमूलमृगापरिपूरन देनाराजियजौनमांगला ॥
सुन्दरपंचवटतलेपानची कुटीकरयुतकुसुमबिसाला ।
विश्वनाथमीगोष्टिसमुभलो अतदेवाचकारियभाला ॥

अर्थ । चांगला कहे सुन्दर, देनारा कहे देवैया, मांगला कहे मांगै, पानची कहे पत्रकी, मो कहे मैं, गोष्ठी कहे बात, अत कहे अब, देवाचे कहे कारिय, भाला कहे देवतन के कार्य भयो । या अछेदधनु या अभेदबखतर ये अक्षय तूनीर लेहु ॥

दत्त्यर्पयित्वा । वांछित तुम्हारी सिद्ध होइ पक्षिपति सून को दरश देत जाइयो हों अब सुरपति पास जातहों ॥

(इतिनि:क्रांत:सर्बे) (प्रबिश्यसौपर्णि)

सौपर्णि: (स्वगतं) आजु मोको सगुन बहुत देखे परै हैं मुनि मुख सुनि जिन राज कुमारन दरश हित बहुत बरसन तेंहों इत टिके हों ते आवन हार तोनहीं है ?

(प्रविश्य हितकारी)

हितकारीपुरोवलोक्य । हे डीलधराधर या शैलसमान पक्षी रूप धरे कोई राक्षस तो नहीं है ॥

श्रुत्वासत्वरंसौपर्णि । अहो भाग्य महो भाग्यं हों तो तुम्हारे पितु को सखा हौं आवो सिर सूंघो जब तुम शिकार को जैहो महिजा को ताके रहिहैं ॥

हितकारी । तुम तो हमारे पितु के बरोबर हो काहे न कहो, या निर्जन बन में तुम्हारो मिलन मेको अलभ्यलाभ भयो ॥

सौपर्णि: । ये पंचबट जे देखे परैं तहां कुटी करो हौंहूं निकट टिकन जाउ हौं ॥ (इतिनि:क्रांत:)

हितकारी परिक्रम्य । डीलधराधर कुटी बनावो ॥

डीलधराधर: बिरच्य । महाराज तयार है ॥

हितकारी । छंद शार्दूलबिक्रीड़िता ।

नीकीपंचवटी महासरितटी फूलींफबैंसंसटी ।
बेलींबेनिलटी सुपत्रनिपटी रागैपरागैठटी ॥
तापैनासभटी अनन्दउघटी दृष्टैहगैदुर्घटी ।
कल्पोतुल्यघटी जोइयहिछटी सोहैकुटीस्वर्नटी ॥ १ ॥

(फिरिदेखैयत्र)

गद्यसंस्कृत । नाग, पुन्नाग, साल, ताल, हिंताल, रसाल, तमाल, कृतमाल, बकुल, सरतिल, कामल, कुटज, लकुच, तक्कोलां, ऽकोल, कोल, कंकोल, विकांक, कपित्था, ऽश्वत्थ, कंकत, विकंकत कदंबो, दुम्बर, कुरब, कमरु, बक, कुंद, तिंदु, चंदन, स्यन्दन, चंपक, चांपेय, पनस, बेतस, पाटल, प्रियाल, पलाशादि, वृक्षाच्छादित गुच्छ लच्छ बिचक्षु रनुसरा मानन्दयाति काननम् ॥

गद्य भाषा । भल निरमल जल कुसुमित सकल रंग कमल कल अलि कुल बकुल करांकुल कोकाबलि कोलाहल लोनी लतानि कुंज कढ़ित अनिल लहि लहि ललित लहरिनि नवीन पीन पाठीन ऊछलनि कलनि कलित सुधा रस सर सरस बलित सुखभरित सरित मनहरित बिलसित है ॥

भजन । पश्चिमदिशियहअद्भुतलुहाई । टेक ।
निजपतिरबिआगमनजानिजनु कुमकुमकायलगाई ॥ श्यामकरत संसार सपदिहीसरस सरवरीआई । हियपरसनउत्कंठितअति जनु रससिंगारछबिछाई ॥ तारागननगगनछबिजनुघनसुमनन सेजबिछाई । किरिनिपरसिसुरपतिकेदिशिजो पेखिपरतिउज-राई ॥ आवतमनभायकनिसिनायक पघपांवड़िमिछवाई ।

विश्वनाथअबआइसुधाकर रमिहिसुधाधरसाई ॥
रैनि भई अब तुम हूं सोवो ॥
शीलधराधरः । बहुत भली पायं परियतु हैं ॥
(इतिपृथक् कुटयां शयनंनाटयति)
हितकारी भजन । जागोभाईप्राणपियारे । टेक ।
अवलोकहुआकाशकेसमें मलिनकुसुमयेजिततिततारे ॥
भयेमलगजेचीरचंदकर पसरितपवनस्वासगुरधार ।
विश्वनाथविधुसंगविहरिनिशि गमनतिकरिसुखसारे ॥
शीलधराधरः सत्वरमुत्थाय प्रणम्य । आज्ञा होइ ॥
हितकारी । चलो गोदातट स्नान करैं ॥ इतिसर्वे निःक्रांताः ।
प्रविश्यशुकःआत्मगतं । हितकारी ह्यां नहीं हैं कुटीतैं काहू को घास जानो जाय है कदाचित् हितकारि ही या नित्य कृत्य करन गये होंइ ॥
(सवधूबंधुहितकारिप्रवेशः)
शुकः । पायं परियतु है पायं परियतु है ॥
हितकारी । अरे हिरावन तैं कहां ॥
शुकः । मोको कुशला मातु खबर लेन पठायो है ॥
हितकारी । अपराजिता के सब मोटे हैं ? ॥
शुकः । ब्रह्मकुंडजा मोटी है ॥
हितकारी । कहा उत बड़ी बरषा भई ॥
शुकः । आपके बिरह तें सबनिके अश्रुपात प्रवाह पय पारावर ताको धारन कियो है ॥
हितकारी । डहडहजगकारी को का दशा है ॥
शुकः भजन । जबतेअपराजितासिधाये । टेक ।
नगरनिकटयकग्रामबासकरि करतसुतपप्रभुध्यानलगाये ॥
शेषदिवसकाढ़िकरतकाजकछु आपपादुकनभूपबनाये ।
विश्वनाथअतितेजकायक लटबंधिकेशपीनतापाये ॥
हितकारी । अबनूं बेगहीं जाइ कुशल कहि सबको आनंद दे ॥
शुकः । पांय परियतु है ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये भजन । काकेचरनचिन्हसुखदाई । टेक ॥
निरखतमनजमोहुंउपजावत असनहिंसुनीलोनाई ॥
सकलसुरेशसहितअतिमोहत मोहतमनबरियाई ॥
विश्वनाथमानुषकैसेपद चलिदेखहुंकोभाई ॥

(दीर्घनखीप्रवेशः)

लक्ष्मिजा । पीउ यह सुंदरी नारी भली चली आवै है ॥

हितकारी । या निरजन बन में नारी कहां या कोई राचसी सुवेष धारि आई होइगी ॥

दीर्घनखी । न तुमसो सुंदर न मोहिसी सुंदरी भलो योग विधि बनायो है ॥

हितकारी सास्मितम् । हमारे पास तो नारी देखत ही है छोटे भाई के पास जाउ ॥

तत्रगत्वादीर्घनखी । मेरो ग्रहणकरि भ्राता सरिस तुमहूं सुखी होउ ॥

डीलधराधरःसस्मितम् । सेवक को सुख कहां सो तुमहीं विचारि देखो उनको रूपदेखि देखि मैं कब नीके लगिहौं तातें उनहीं को रिझाइ बुझाइ मनोरथ सफल करो ॥

दीर्घनखी पुनरागत्या । भले सेवक पास पठावत हो मोकों त्रिभुवन में को न चाहै तुम अपनो भाग्योदय जानों ॥

हितकारी । होंतो अपनो भाग्योदय तिहारे आगमन हीं ते जान्यौ पै तुम्हारो हमको कब चलैगो ॥

निजरूपंधृत्वा दीर्घनखी । हो काम रूपिनी हों तुम्हारी कुरूपा बधू अरु निर्बुद्धि बंधु को खाइ त्याँई निरंतर बिहार करोंगी ॥

महिजा सभयं भजन । पियहिपेखिमोहिंभयलागै । टेक ।
भूरेकेशकानछाजसे आंखअंगारभौंहयुगतागै ॥
दद्दूरनाकखोहसोमुखनख सूपपयोधरलोकोऐसे ।
सूखतालसमउदरडोहरद बिश्वनाथतनशैलहिजैसे ॥

(डीलधराधर इतिश्रुत्वा)

हितकारिणमवलोक्य सक्रोधं दीर्घनखी नासाकर्णौच छिनत्ति ॥

दीर्घनखी । आहि आहि इतिमहाशब्दं कुर्वती सत्वरं निःक्रांता ॥

हितकारी । अब शेष दिनहैं चलो गोदातट मन रंजनकरैं ॥

(इति निःक्रांताःसर्वे) (रासभप्रवेशः)

रासभः । ये राकसी मख कोई न करन पावै जाते भागि मेह टारिन दुरदेखिदुरबल ह्वै आसुहीं गतासु होइ दिगंभिर महाराज की ऐसी आज्ञा है ॥

(प्रविश्य दीर्घनखी रुदित्वा पादयोःपतति)

रासभः ।

कवित्त । काकेदुहमाथकौन मीचुकौबोलायोहाथ काकेपरपंचमाथखोली तीजीआंखिहै । काकेपरकाललैकैकरमेंकरालदण्डभूतनकेसाथ मुखफारिधायोमाखिहै ॥ ऐसीटघाकीनीजौनबेगहीबताउताहि मेरोक्रुद्धचित्तरच्योयुद्धअभिलाखिहै । ह्वै हैं रुद्र विष्णु हूतौरनमें प्रचारिबांधौं छोंडोंहालऐसोकैदिगाननकीसाखिहै ॥ १ ॥

दीर्घनखीगद्य । याही बन बसेहैं नृप कुमार अति सुकुमार पै बलके अगारबड़े धनुधारी तिनकेसंगसुंदरी नारी दिग भिरहित हों हरन बिचारीगहि किय ऐसी दसा हमारी ॥

रासभः । धनु धनु धनु ॥

नेपथ्ये । जान जान बान बानचाप चापतुरंग तुरंग मातंगमातंग ल्याउ ल्याउ —आयो आयो—बखतर दे बखतर दे लेउ लेउ ॥

(ततः प्रविशति सेना)

रासभः रथमारुह्य । आजु त्रिवर्णा पृथ्वी करि हौं सूत शीघ्रहीं रथ हांकु ॥ इति निःक्रांतः सर्वे ।

(सबधुबधहितकारि प्रवेशः)

हितकारी । डीलधराधर महा संग्राम सूचक उत्पात पेखे परैहैं परंतु दाहिनी भुजफरकै है जय हमारिही होयगी युद्ध अवश्य होइगो तुम त्यांते महिजा को ढारि शिखर कंदर तेजाय निशंक देखो ॥

डीलधराधरः स खेदं । महाराज स्वामी की आज्ञा पाय फेर कछु करिबो सेवक को धर्म नहीं है तऊ आपनो दुलार देखि ढिठाई करि यक अरज करौं हौं आप लरैं हौं देखौं यह कहा उचित होइ है ॥

हितकारी । यद्यपि जीतन को तुमहीं समर्थ हौ पै यह युद्ध करिबे को मेरोई मन है ॥

डोलधराधरः खिन्नमना महिज्जासहित स्तथेतिनिःक्रांतः ।

आकाशे । येमहा प्रबल चौदह सहस राक्षस हितकारी अकेले कैसेमारेंगे॥

नेपथ्येछंद । करालदण्डपानिक्रुद्धकालजीतिजोलियो ।

सोराजपुत्रकेलियेकहासुसैनसज्जियो ॥

सुनोसुनोयेराक्षसेंद्रयेककौतुकैलिये ।

चल्योहैआशुगाजिराजिवक्षयुद्धकोकियें ॥ १ ॥

(ससैन्यरासभप्रवेशः)

रासभः । अहो यह राजकुमार तो त्रिभुवन में एक सुंदर है मारन योग नहीं है गहि दिगशिर पास पठौनी पठाय दीजिये देखि वोऊ अति हरपित होंइगे ॥

(हितकारीपरिकरंबध्वाधनुःसज्जीकरोति)

(रासभःदृष्ट्वा कलंकनामानंमंत्रिणंप्रति)

सवैया । नखतेंसिखलोंसुठिसुंदररूपहरेहमरोमनकोहठिलेत है ।

सुअटानिकेमंडलफूलनमंडलमंडिगलेमेंलोनाईनिकेत है ॥

सजिसज्यकरैंधनुकोंकरलेयहबालसुभायनामानेसकेत है ।

सबएकहिंबारहिंधायधरोद्रुतनातरुबानघनेतजेदेत है ॥

नेपथ्ये । यह भलो ऊंचो गिरि है सिगरो युद्ध को कौतुक आंखिन के तरेहीं देखा परै है देखिये महिजा अग्रज को कैसे धाइ राकस घेरि लिये हैं जैसे मार्तंड को निहार ॥

महिजा । हाय कहा होन चहत है ॥

डोलधराधरः गद्य । देखिये हितकारी के क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, नाराच, वत्सदन्त, दन्तवक्त्र, नतपर्वा, वाराहकर्ण, कर्ण, विकर्णी, वैतस्तिक, अर्धचन्द्र, शर, शरासन तें एक कालैइ बंकढ़त हैं शिर, उर, ऊरु; भुजन, पदन, विनु राक्षसन करत हैं देखिये कैसे ये रनमत लरत हैं गिरत उठत पुनि पुनि कुपित डटत निज जय रटत अंग अंग कटत न हटत गरबन घटत लटपटत बढ़त जात शरन सटत राक्षस छन छन छटत पुहुमी पटत जाति है ॥

छंद । अनेकबानलेतनूनमेसुचापजोरतै । नगानिजातजानिजातबानगात फोरतै ॥ भयोकोदण्डकुण्डज्वालजालअग्निसरैं । गजेंद्रसुण्ड रुण्डमुण्डखण्डखण्डआहुतीपरैं ॥

रासभ:सूतंप्रति । एक यह मेरो महा सैन संघार करो राजकुमार वेष महाकाल है की रुद्र है अब मोकों महा उत्साह भयो है हांकु मेरो रथ याके सनमुख ॥

कलंक: । मेरोयुद्ध देखि लीजिये छनमें रणमें राजपुत्र कों गहे लेतहों जो काल होय तो बहुत भली भई याहि बिनु प्रान करि विघ्नबाधा मेटेदेत हों (तिष्ठतिष्ठेति जल्पन्धावति)

हितकारीसोत्साहं । भलो आयो आजु निःकलंक भूतल ह्वै है ॥
(द्वतियाद्धं निःक्षिपति)

हुसुण्ड: । हे स्वामी कलंक तो आपनो काय राजकुमार घर घार में बहाय नाम हमारे कुल में लगायो अब मैं घर सों याको कंठो काटि रुधिर सों सो धोवत हों ॥ इतिधावति ॥

हितकारी । आवोआवो तिहारे कंठ काटि सिरन सितकंठ कंठ को कठुला करों ॥

रासभ: (स्वगतं) अरे यह तीनिमुखसों तीनि भुवन भक्षनकरनवारो जेसे हरसरतें त्रिपुर तैसे बालसर ज्वालमें जरि गयो आश्चर्य है ॥

पुन:हंताकृपीडद्धत्वासक्रोधं(प्रकाशं)थे धनुर्वेदअज्ञ राक्षस मारि गर्व न करो अब त्रैलोक्य विजयी सो कामपरो आपनो धनुर्विद्या देखायो ॥
(द्वतिसक्रोधंधावति)

आकाशे । देखो देखो हितकारी औरासभ के बान आकाश को अनवकाश करेंगे ॥

छंदतरंगिनी । दोटलरतअतिबरिवण्ड । शरतजतनुयमदण्ड ॥
बहुअखकृनसप्रचण्ड । बरषतअनलनवखण्ड ॥

लज्जा । अरे यह नीच स्वामी को सनाह धसर शरासन काटि डारयो हाय हाय अब कहा होय गो ॥

डीलधराधर: । धीर धरो हितकारी को जीतनवारो जगत में जाय मान नहीं है अब क्रुद्ध होइ मारे डारे है ॥

राक्षस: । अरे राजकुमार अब नहीं बचै है जाको सुमिरन होइ ताको सुमिर ले ॥

द्वितीयंधनु:सज्जीकृत्यहितकारी । श्याबास बीर श्याबास आछो पराक्रम कियो अब धनुष तें ये जे बान कढ़ै हैं तिनको पराक्रमदेखु ॥

नेपथ्ये । देखिये स्वामिनी पंच बान लिये स्वामी पंचबानहीं से पेखे परै हैं अब देखिये देखिये चारि बान तें चारि बाजि गिराये एक तें सिर काटि दियो ॥

राक्षस: । रथान्निपुत्य वृक्षमुत्पाटन आसुरास्त्रेण अभिमंत्र, राजकुमार यह अस्त्र तें तुम्हारो संहार करौं हौं ॥ इतिनिक्षिपति ॥

(वज्रास्त्रेणतन्निवार्य)

हितकारी । रेरे दुष्ट मुनिन को मारिमारि जेहि लोक पठाये हैं तेहिलोक तहूं जात है ॥

सक्रोधंराक्षस: । अरे राजन सों ऐसो कोऊ नहीं कहै है जैसो तैं कहै है जिन जिन राक्षसन को तू मारयो है तिनकी नारिन के आंसू आसु या गदा ते पोंछो हौं । इतिनि:क्षिपति ॥

(तांशरेणचूर्णीकृत्य)

हितकारी दोहा । जाके बलबलगे बहुत सोह्नै रेनु समान ।
मिथ्यावादी बैनसम कीनोगगनपयान ॥

(मुष्टिकावध्या राक्षस: सक्रोध मभिमुखं धावति)

आकाशे दोहा । हितकारीकेबानतें दूमिजरिभोयहछार ।
जिमिहरिनामउचारतें पातकपरमपहार ॥

(जयजयतिपुष्पवृष्टि:)

प्रविश्य मैत्रावरुण: । छंदमधुमती ।

जयजयतिहरे । रघुकुलभरे ॥ शरधनुषधरे । मुनिअभयकरे ॥

गद्य । पूर्णावतार तारण संसार सार बिज्ञान जनन मन करन करन क्रूरता हरन अघरन घरन घरन खलन संघरन घरन घरन तिहुलोक कीर्तिविस्तरत तरत तरतो जो करत प्रनाम नामररत रत रूप प्रकाशी काशी सदाशिव सदाशिव देत हैं ते आप आपनो मृदुहास प्रकाश प्रकाशवान मम मन करो ॥

नेपथ्ये छंद । यहिसमैमहिलाकहिनजातिनिहारिलेछविपीयकीधनु । अभिरफेरतसरसुनतअस्तुतिमनोमुनीयकी ॥ तनसुभगमोहतधरिकन अनुराजिराप्रमुनीयकी । अतिमुदित ललित तमालबैठीलसतिरंजनि ओयकी ॥ १ ॥ चलो अब समीप होतें शोभा निरखें ॥

(प्रविश्य महिला डीलधराधरौ स प्रमोदं प्रणमतः)

मैत्रावारुणिः । अब सब मुनि अभय भये तुम्हारी जय होइ हों अब आश्रम को जाउ हैं ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

हितकारी । डोलधराधर चलो स्नान करें ॥ इतिनिःक्रांतःसर्वे ॥

(सामात्यदिक्शिरः प्रवेशः)

दिक्शिरः । हेमंत्री जगत जैसा अवकाश भयो अब मेरे मनमें ऐसा आवै है की उदधि उलीचि गगन गंगा ल्याइ मीठो जल भरि दीजिये औ समर संताप शमित करत यह मयंक बड़ी सेवाकारी याहू को निःकलंक कीजिये अरु इष्टपद पूजन जायबे को दूर परैहै ताते कैलाश ह्यांई उठाय ल्यावो अरु आभरन अरुपि प्रसन्न करन हित शेषऊ को ल्यावो अघट कान तें कहो पृथ्वीपट वोढ़िसोवै जाय ॥

मंत्री । महाराज आप सब करन को समर्थ हैं यह कौन बड़ी बात है भलो मंत्र विचारनो ॥

(प्रविश्य दीर्घनखीपादयोः पतित्वा उच्चैरोदिति)

दिक्शिराःउत्थाप्यसक्रोधं । अरी ऐसी दशा तेरी करि कौन न मीचु को चुनौती दई ॥

(दीर्घनखी वाच्यावरुद्धकंठं)

छंदपद्धरी । अनुपमआयेद्वैनृपकुमार । रासभपुरढिगबनकियअगार ॥ तिनसंगसुंदरीछविअपार । तुवहेतुहरनमैंकियबिचार ॥ तिनहाल कियोऐसोहमार । हैंरासभपहंकोनिपुकार तिनसरनीउभोयुतसैन छार । जोकरनहोयकरियप्रकार ॥

दिक्शिराः । (आत्मगतं) काल दिगपाल ऐसो हाल हमारी भगिनी को न करैंगे विशालबल हमारे भुजन को जानै हैं ॥

विद्वार्य (स्वगतं) जान्यो जान्यो चक्र चलाय चक्रपानि मेरे काय

की कठिनता जानि नरनारायण रूपतें श्रीसंग वानप्रस्थ धर्म ठानि जय हेत बन निकेत किये हैं ॥

प्रकाशं छंद । ल्याउल्याउजान । सैनलैमहान ॥ मैंकरोंपयान । मेटि देहुंमान ॥ १ ॥

प्रविश्यदीर्घजठरः । महाराज आतुरी न कीजै उनकोबल प्रभाउ सुनि लीजै जहांजहां राक्षस भागिभागि गये तहांतहां उनकेबान तिनको हेरि मार डारे, हों भागि भूरि भागि तें प्रभु को भवन देख्यो ॥

छंदगीतिका । चाहैंधरनसोंविश्वजारैं चहैंफिरिसिरजैंनयो । पालैंसराहि सेदितेंहंसुखजोकबहुंकाहु पैनाहिंभयो ॥ त्रैलोक्यविजयीरासभैछनमाह सुतसैनाहयो । सगहुखरअंजोजंगयोधानाहिंजगतीललजयो ॥

दिक्शिराःस्वात्मगतं । रासभ मो सम बली अगार तासु संहार करन हार बिन परमईश कौन होइ जो भक्ति पंथ चलों तो दुरगम दिरंग वारी है तातें उनके घरगम मुक्ति सकुल पालई लेउं ॥

इतिविचिन्त्यप्रकाशं । अरे उहां तें भाजि कै मोकों डेरावै है

दीर्घजठरः । महाराज हों मंत्री धर्म बिचारि कहों हौं जो पै सिहीं व्याधि जाय तौ औषधि में श्रम काहे कीजै ॥

दिक्शिराः । अरे यह शत्रु बिन मृतु कैसें मरै गो ॥

दीर्घजठरः । महाराज प्रानहूं तें पियारी बाके नारी है ताको महामायावी घातिनी सुत को संग लै हरिल्याइये बिरह तें आपुही मरिजायगो ॥

दिक्शिराः । भली कही भली कही ॥ इतिनिःक्रांताःसर्वे ।

(ततः प्रविशति घातिनेयः)

घातिनेयः । आह आह बड़े बड़े अपगुन देखे परैं हैं धौं कहा होइ गो राक्षस कुल को कल्यान होय कल्यान होय ॥

(दिक्शिराःप्रवेशः)

प्रत्युत्थायघातिनेयः । पाद्य लीजै अर्घलीजै स्वामी को आगमन सेवक के सदन बड़ो भाग्य को फल है ॥

दिक्शिराः दोहा । शीसजटामृगचर्मधर पहिरिबलकलचीर ।
कबतोलियमुनिबेषयह कहैंकरि मतिधीर ॥

घातिनेयः । कछु दिन भये हम तीन राक्षस मृग बेष बनाये मुनिन भक्षन हित दण्डकारण्य गये रहैं तहां मुनिबेष बनाय कै राजकुमार आये देखि भक्ष लेखि हम धरनधाये उनमें एक हम सबको परेखि शर हनि द्वै को आसहीं असुइयो मोको धौं बचाय दियो तबतें देह अनित्य मानि तप ठानि इहां आनि बैठो हों आप को आगमन जेहिहेतु भयो सोइ सो आज्ञा दीजै माथे धरि करौं ॥

द्विकशिराः । मुनि बेष बनाये राजकुमार एक बन आये बिन अपराध मेरी भगिनी को कान नाक काटि ससैन्य रासभज को मारिडारयो चाहिये वेई सोइ बैर लेन हित तैं मृग रूप धारि उतहीं सिधारु उनको आश्रम ते ल्यावै निकारि तब मैं ताको प्रान प्यारी नारि हरि लेउंगो आपही मरि जायगो ॥

घातिनेयःसवैया । ऋषियपथनकहैंसुनैमंअहैंबलहुंअतिहुदुर्लभऐसे ।
जानतहौनाहिंकालकोपास परैगरमेंकियेकामअनैसे ॥
कालिकाराकसकेकुलकोंमहिजागृहआनिकैबाँचिहौंकैसे ।
पूछिकैबालबिचारिकरोतिहुंलोकनमंधीध्यानवाजैसे ॥ १ ॥

द्विकशिराः । तोसों सीख नहीं पूछौं हौं सासन देउं सो करु ॥

घातिनेयः । मोको तौ अब हरी दूब दुति देखत डर लगै है उनके सन्मुख कौन जाय ॥

द्विकशिराः । रे मूढ़ ह्वां मारि जाइ धौं न मरि जाइ न गये इहां तो मेरी कृपाण तें अबहीं मरै है ॥

घातिनेयः आत्मगतं । याके कर मरे कहा है उन्हईं के कर तीर तीर्थ तीर तन त्यागौं ॥

प्रकाशं । भुवन भट्टारक बहुत भली आप की आज्ञा कौन न करै ॥

द्विकशिराः । अब तुम अपनी प्रकृति में आये चलो ॥

इतिनिःक्रांतौ (सबंधु बधूहितकारिप्रवेशः)

डीलधराधरः । हों आखेट को जाउं हों ॥ इतिनिः क्रांतः

हितकारी । महिजा छाया महिजा इत राखि दिगशिर बधांत अग्नि में रहो ॥ महिजातथेति निःक्रांता ।

ततःप्रविश्य विविधच्छगप्रवेश:

(इतस्ततश्चरतिप्रविश्य (छाया महिजा)

पद । कहंअतिअदभुतमृगयहस्वामी । टेक ।

राजहिंरजतबिंदुसुबरनतन मणिखुरश्रृंगसुगामी ॥ चरतहरिततृन इतउतबिचरत लागतअधिकसुहाये ॥ विश्वनाथयुतयतनआसुगहि ल्यावहुमोहिंअतिभाये ॥

(ततःप्रविशतिडीलधराधरः)

हितकारी । भैया भले आये तुम अमित हो महिजा को ताके रहियो मैं या मृग के पीछू जाउं हों ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये । हा डीलधराधर हा डीलधराधर ॥

छायामहिजाआकर्ण्यसोद्वेगं । हे डीलधराधर पीतम को बड़ो कष्ट परो तब तुम को हा कहि टेरगो है तुम जाउ जाउ ॥

डीलधराधरः । हितकारी काहु के जीतिवे लायक नहीं है. यह कोई राक्षस छल करि बोल्यो है ॥

छायामहिजा । जात नहींहो प्रति उत्तर देतहो येही अभिलाष किये रहे हौ ॥

डीलधराधरःसखेदं कर्णौपिधाय । आः आः अरी मोंको अति श्रवण कटुवानी कहै है तूं महा चंडी है ॥

(इतिधनुः कोटयातत्परितोभिमंत्ररेखा मंडलंकृत्वा निःक्रांतः)

प्रविश्य चिदंडिवेषोदिक्शिरा:माता भिक्षां देहिमाताभिक्षां देहि॥

छायामहिजा । तोलों फल लेउ खाउ जोलों स्वामी आइ विशेषि आतिथ्य करैगे ॥

दिकशिरा: । बांधी भिक्षा हों नहीं लेउ हों ॥

(महिजानिःक्रम्यलेउदिकशिराःनिजरूप माख्यायरथेस्थित्वा)

हों दिकशिर हों जाके भयतें इन्द्रादिक देवता कपै है तुम को लैकै त्रिलोक की रानी करौगा ॥

छायामहिजा । आःपापभागुभागु अबहींपीउ आवतहैं नाशकैदेइगे ॥

दिकृशिरा: (आत्मगतं) जैसें बुध रोहिणी कों लैचलै ऐसे महिजा को लै चलौं ॥

(इतियानमारुह्यपरिक्रामति)

छायामहिजा। हाय हाय नाथ सहाय होहु खल हरे लीन्हे जात है॥

नेपथ्ये पुनिमाभैःमाभैः। हौंपहुंच्यो पहुंच्यो नीच नहीं जाय सकै ॥

प्रविश्य सौपर्णिः ॥

चामरछंद। तिष्ठतिष्ठदुष्टरिष्टपुष्टखूबखायकै । मुंचमुंचराजपुत्रिप्राप्र भोमैआयकै॥ मोरयाकठोरठोरकालदंडतें। नाहितैंवचैजोभाजिजा हिब्रह्मअंडतें॥

दिकृशिरा: दृष्ट्वा स्वगतं । यह कहा मै नाक है ॥

प्रकाशंसाट्टहासं। जान्यो जान्यो वृद्ध गृद्ध है मम कर तीर्थराज में तन त्यागो चहै है ॥

सौपर्णिः। सावधान हो अब वृद्ध गिद्ध सों युद्धपरत्रो आइ ॥

(इति चंचुचरणैः युद्धं नाटयति)

आकाशे।जिनतें यह हर गिरि उठाय लीनो ते बाम कर ठोर ते कतरि डारे अब बरवल जामें हैं। श्याबास बीर श्याबास तेरी जीबि होइ चुकी ॥

(दिकृशिरा:।अमोघखड्गेनपक्षौ छित्वा सत्वरंनिक्रांतः)

(ततःप्रविशतिहितकारी)

हितकारी। अहो मेरो ऐसो बिकल बैन राक्षस बोल्यो धौं कहा होय ॥ इतिसत्वरंपरिक्रामत।

(ततः प्रविशति डीलधराधरः)

हितकारी। अरे भाई महिजा को अकेलिहीं जाड़ि आयो या बड़ो अनर्थ कियो ॥

डीलधराधरः बाष्पावरुद्धकंठं। महाराज मायावी राक्षसको हा डीलधराधर यह बानी सुनि मेरो समुझायो न मानि महिजा मोकों प्रान नाशहू तें असह अति अनुचित बानी कही ॥

हितकारी। तुम नारी के बैन कान करि आये आछी नहीं करी अब महिजा बड़ी भाग्य तें मिलैगी बेगि चलो बेगि चलो ॥

(इति उभौ परिक्रामतः)

हितकारी । आश्रम में ये केश कुसुम परे हैं कोई लैगयो के हाँसी के छपीहो ? अहो तुम सर्व सहा की सुता हो होतो दिगजन को सुत हौं जिनके प्रान वन विरह होतहीं गये अस बिचारि बेगि प्रगटहु प्रगटहु ॥

(इतस्ततोन्वेषयंतौ परिक्रामतः)

हितकारी । अरे यह युद्ध जान चारिखर सूतशिर कटे परे हैं यातें जानै है कोई राक्षस रन कियो है अरे सौपर्णि कका काहे बिकल परो है ॥

(इति रत्नमुपहृत्य जटाभिस्संगमुन्मार्ज्य)

पद । काछुदिनताततातसुखदेहू । टेक ।
भूलिगयोवनवासप्रियादुख अतिदुखतकतदशातुवयेहू ॥
केहिखलकियअहहालतुम्हारो कोलैगयोभूमिकीजाई ।
विश्वनाथधरिधीरकहहुकाछुयहिऔसरमोहिधीरधराई ॥

सौपर्णिः दीर्घ मुच्छ्वस्य । दिगधिर हमारी हाल ऐसो करि महिजा को बिंदु मुहूर्त में लैगयो जो वह महूरत में चोरी करै है सो प्राण सहित बस्तु देइ है ॥

हितकारी । तात दिगशिर कौन है कहांवास है ॥

सौपर्णिः । निधिपति को बंधु है राक्षसपुरी बास है

(इतिमृत्युमभिनाटयति)

हितकारी । देखो डोलधराधर साधु परउपकारी तिरयग योनिहूं में होय हैं ऐसिहू अवस्था में ऐसो युद्ध करि महिजा मिलन को महूर्त शोधि शरीर छोड़यो ॥

(आःआःइतिरोदिति)

आकाशे । बड़ो आश्चर्य है बड़ो आश्चर्य है देखो गृद्ध को कृत्य करि हितकारी पिता को गति दीन्हो ॥

हितकारी । आश्रम मृग रोवत दक्षिण दिशि चले जाय हैं याते जानै है याही ओर लैगयो है चलो चलैं ॥

(इतिपरिक्रामतः)

हितकारी। (चकोरंदृष्ट्वा)

पद। कहहैतूचकोरचतुरमोकहुंसमुझाई। टेक।
तोकोकतमित्रमानि शीतलकरिदेतअनलकाहेममबिरहआगिदेत हैबढ़ाई॥ जान्योयहरजनीचरयानेहितचरचिचितलीन्होकारिनिपटरजनिचरनसोंमिताई। बिश्वनाथविधुअमिकरनाहकहोंनाम धरयोलखियगरलभरयोसोइबरवतझारिलाई॥

(चकोपंचंद्रंप्रति)

पद। रेरेचटुलचोरकेभाई विरहिनगनदुखकारी। टेक।
सकलभुवनसमभररकरतनुवतेजफैलिदिसिचारी॥ तहूंकलंकितमृग सहाययुतसार्वभौमनिशिचारी। बिश्वनाथतियबेगिबतावहि यहबर वाननिहारी॥

सरितमवलोक्य। हे सुभग सरिता तैहूं कृपकाय कहु महिजा है जो कहूं देखी होय तौ बताय देहु॥

(अशोकमवलोक्य)

छंद। महिजादेयबतायलोकमुददायकहै। होंनरनायकतहूंतरुनमेंनायकहै॥ नवपल्लवतवहियोसुरंगहिसोमधरे। मेरेहियनिरधूमबिरहअंगारभरे॥ तेरेसुमनसिलीमुखआवतभावतहैं। मेरेमनहिंमनोजसिलीमुखधावतहैं॥ समताईसबभांतिभेदयकहोतयहै। तोहिबिधिकीन अशोकमोहिंदियशोकमहै॥

डीलधराधरः। स्वामी धीर धरो धीर धरो शोक सरि तरिवे को धीरजही तरनी है॥

हितकारीदोहा। यहिछनधीरजतेकठिन शोकजेनिकसिराय। तऊ तोयअपहरनकी होयलाजकिमिजाय॥

(डीलधराधरः)

जलेनतंमुखं प्रक्षाल्य। सावधान होउ चाहिये तो ह्यां मधि यह अटवी अति घन देखी परे है॥ ... ल कोलाहल भूत

गद्य। गो गौर गवय भुजंग मातंग शार्दूल कोल ... लि डोलत कराल ब्याल बैताल समताल कर कपाल गल ...

ताल तमाल हिंताल प्रियाल रसाल आल वाल गजमद परिपूरण फलन धूरन धवल परिमल परिमलित ललित छबिकलित नभ लखियतु है ह्यां ढूंढ़िये ॥

(इतिनिःक्रांतौ) (यपस्वनी किरातीप्रवेशः)

(इतस्ततः संचरंती तपस्विनी गायति)

बिरहा। कबदेखिहोंइननैननभाईमेरेरेहितकारीकोरूप।नखसिखआनंदमयसबभांतिनमुनिबरबदतअनूप ॥ जटामुकुटसिरकरधनुसरउर फलनमालसुहाय। परमतपायअपानीपीघलततबतनितकिभांकिजाय॥ जाकोनिरखतरिपुराकसउमोहिरहतरनमांभ। सुमिरतजाहिहोतथंकरहियसमसावनकीसांभ ॥ बिचरतइतकबआइकढ़ैगे डोलधराधरसाथ। बिश्वनाथममभाग्यधरेंगेतीनतापहरहाथ ॥

(कुंजरमुनेर्गोपः प्रविश्यगायति)

चंदैनी। जैसेहोतचंदैमोहिर पततकिघनश्याम। ऐसेतैंअबहू हैआवतसुखमाधाम ॥ ढूंढ़तप्राणपिया डोलधराधरसंग। बिश्वनाथमैंनिरख्योंनखसिखशोभरमंग ॥ १ ॥

तपस्वनीसहर्षं। कहु कहु श्रवणामृत बानी कहांतें आये ॥

गोपः। दंडक कांतारि जब इत को चले तब मैं पहिलेहीं तो कों खबरि देन आयो हौं ॥

हितकारिप्रवेशः। (पादयोःपतित्वा तपस्वनी)

त्रिभंगी। जयजयहितकारीमहदुखहारीसरउपकारीबानिअहै ॥ करसरधनुधारीअधमउधारीजनडरकारीप्रेममहै ॥ मोंघावरिनारीगृहपगुधारीरीतिपसारीदीनहिं । क्रमिसकौउचारीजोहहमारीकीर्तितुम्हारीसुखअमितू ॥

महाराज जिन वृक्षन के मोठे फल मैं चाखे हैं तिनहीं के फल आपके हेत संचि राखे हैं ते लीजे ॥

करेंडी भुक्त्वा। अरी ऐसो स्वाद मोकों कुशलाउ के कराये को बताउ ॥ मिल्यो तैं बड़ी तपस्विनी है मोकौं राज कुमारि

तपस्विनी। महाराज या दरि में गिरि पर सुगल कीश है ताहूकी

नारी भाई हरि लई है यामों मिलिये या महिजा की खोज कराइ है आप तो सबके आत्मन के आत्मा हैं कहा नहीं जानत हैं कुंजर मुनि जब ब्रह्मलोक कों जान लगे तब मोकों कह्यो तैं ह्यांई टिको रहु हितकारी इहां आवेंगे तिनको दरश पाय मुक्त ह्वै जायगी आप षण खरे रहिये मैं शरीर त्यागों॥

(इतिशबर्य्ययोगाग्निनादेहदहनंनाटयति)

हितकारी। चलो डीलधराधर वा गिरी कों चलिये जा गिरि में सुगल कों अनुरागिनी बतायो है॥

इति निःक्रांताः सर्वे त्रितीयोंकः॥ ३॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके तृतीयोङ्कः॥ ३॥

अथ चतुर्थाङ्क प्रारम्भः॥

(ततः प्रविशति ससंची सुगलः)

सुगलः। हे चिरंजीव ऋच्छराज हमारे दुःखको अन्त कबहूं होयगो तुम ज्योतिष जान हौ यातें पूंछियतु है॥

ऋच्छपतिः। आछी सुघरी में प्रश्न करो है देखो तुम्हारे पूंछत हीं सेतफनो फनपर वह खंजरीट नचै है तातें अब तुम्हारे दुख को अन्त आयो॥

(सुगलः सत्वरमुत्थाय दूरतोऽवलोक्य)

(सांगुलिनिर्देशंसस्मितञ्च)

सुगलः। भो भो दस्वनंदनो दूरिदीठि करि देखो सगुन तो पेखोई परै है पैवे द्वै बीर शस्त्रधारी निःशंक चले आवत हैं मेरेजान अग्रज मेरे मारन को इनकों पठायो है भागो भागो॥ इति निःक्रांताः सर्वे।

(हितकारीप्रवेशः)

हितकारी। देखो तो डीलधराधर यह शैल की शोभा॥

छंदनराच । अनेकधातुरंगरंगअंगचंदनैदिये ।
झिरैंझिरन्नमोदआंसुभक्तिभासतीहिये ॥
सुश्रंगसीसमेंलताजटानमण्डलैकिये ।
लसैंविहंगमालमालशैलसंतखेलिये ॥

नेपथ्ये । स्वामी थम्हिये थम्हिये पहिचान कै भाजिये, चेतामल्ल तुम प्रवीन हो जाय परखि आवो ॥

प्रविश्य बटुबेष चेतामल्लः । आप कों सत्री मुनि बेष बिलोकि मोको संदेह होय है बुझाइ कहिये ॥

डीलधराधरः । (सर्ववृत्तान्तङ्कथयित्वा)

डीलधराधरः । तुम आपनी कथा कहो ॥

(चेतामल्लः पादयोः पतित्वा)

पद । जान्यो तुम्हैं नाथहितकारी । टेक ।
अहोप्रभोवनबसिनियरेहों दईदासकोसुरतबिसारी ॥
चलियेनिजनृपसुगलमिलाऊं हरिगईताकूकीनारी ।
विश्वनाथप्रभुदीनबंधुतुम अहेमिताईजोगतिहारी ॥ १ ॥

इति हितकारी डीलधराधरो स्कंधयो रारोप्य चेतामाल्लो निःक्रांतः ॥

प्रविश्यसुगलः । अरे यातो दूनो को कंध कियें ल्याई लिये आवै है धौं कहा कारण है ॥

प्रविश्यचेतामल्लः । आवो आवो स्वामी परम पराक्रमी लैआयो हौं ॥

(सुगलः आत्म सात्विकं भैव्यं कृत्वा रोदिति)

हितकारी । न शोक करो तुम्हारे तिय हारी कों एक ही शर तें मारों गो ॥

सुगलः । स्वामी एक बड़ो आश्चर्य देख्यो है ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

सुगलः । एक समय शैल शिखर पर मंत्रिन सहित मैं बैठो रहौं आकाश में ऐसे शब्द सुनो परौ हा हा हितकारी मोकों राक्षस हरे लिये जाय है फिर एक बसन में बंधे भूषण गिरे हौं दरी में धराय राख्यो ॥

(हितकारी हृष्ट सशोक मधरस्फुरणं नाटयति)

सुगलः। मित्र शोक काहे करौ हौ॥

(डौलधराधरः सर्वं वृत्तांतंकथयति)

सुगलः। बाप को सोंह आपकी प्रिया को आसुहीं खोज लगाय देउंगो औ आप के संग आपके तिय हारी को मारौंगो॥

हितकारी। चलो चलो तुम्हारे शत्रु को मारौं॥

सुगलः पद। बिन जाने बल प्रबल शत्रुसों किमि प्रियमीत लराऊं।

हितकारी। कहु देखराऊं कौन पराक्रम पुनि तोहि भूप बनाऊं॥

सुगलः। अग्र जु फेंकोहै दुंदुभि शिर ताको आप उठैये।

बिश्वनाथ तरु सात डोलावै तिन सर छेदि देखैये॥

हितकारी। बहुत भली॥ इति परिक्रम्य तथा करोति॥

सुगलः। सहर्ष लांगूल चुंविन्यो तृन्नुत्य। आश्चर्य है आश्चर्य है देह बल जैसो बान बल तैसो॥

हितकारी। अब चलो दुंदुभि रिपु पहं॥ इति निःक्रांताः सर्वे॥

(ततःप्रविशति समंत्रीबासविः) तालनाम मंत्री केयं)

बासविः बाचयति। स्वस्तिः श्री महाराजा धिराज श्री कपिराज श्री मित्र बासविः इतै श्री राक्षसेंद्र श्री महो महेंद्र श्री महेंद्र जयशान श्री विश्व बिजयी श्री दिगशिर को आशिष हमारी तुम्हारी अकुशल ब्रह्मा लिखिवोई नहीं कियो है एकै राजकुमार बलवानन मारन मन धरि तुम्हारे निकट के बन पयान करि सदल रासभ के प्रान हरि लीन्हें हैं पकरि मेरेपास पठायदीजिवो॥

मंत्री। महाराज आपकी शक्र शत्रुको मित्रता कैसे भई॥

बासविः। एक समय हौं पूरब समुद्र संध्या करन गयो हुतो तहां जगत जय करि मोहूंको जीतन हेत पीछू तें पकरन को पहुंच्यो हों। वाको जानि कांख दाबि फिरि तीनौ समुद्र संध्या करि आय बाग में छांड़ि दीन्हयो तबतें बलवान मानि मित्र बनाय गयो है॥

मंत्री। महाराज आप कहा जानि मित्र मान्यो॥

बासविः। वासों अस्त्र शस्त्र में जीतनवारो त्रिभुवन में कोई नहीं है॥

हितकारिप्रवेश: । मंत्री प्रहृष्य ॥ देखिये देखिये स्वामी रविनन्दन
हैं राजनन्दन सहाय लै आयो है ॥
बासवि: । अरे इनके तन बलवान ऐसे लगै हैं दुंदुभि शिर फेंकन
हार चाहिये तो येई होंय ॥
हितकारी । देखो डील धराधर ॥
कवित्त । कीन्हेनभगौनयाहिडड़िउड़पौनमाहिं परतदिगंतगिरि शृंगन
कोगाथहै । गिरतहींगाजगहिलेत कूदिबीचहींमें न्हाततजिदेत बेला
बारिनिधिपाथहै ॥ जासुबेगबिहदबखानैओंचासौंवायु जासुबलआय
अजमायोदिगमाथहै । मेरुसोशरीर रनधीर नखबज्रबीर सुगल कोजेठो
बीरबैठोकीशनाथहै ॥ १ ॥ याहि मोकों जनाय देहु ॥
(डीलधराधर: तथेति बासवि मुपसर्पति)
वासवि: । छंदतरंगिनी ॥ तुम कौनहो दोउभाय ।
डीलधराधर: । हमरविहैं कपिराय ॥
वासवि: । तकतैमो जानियजाय । सबिशेष देहुबुझाय ॥
डीलधराधर: छंद । येदिनजानसुवन हितकारी कीरतिजेहिक्षितिछाई ॥
बासवि: हितकारिणमवलोक्य । अतिसुन्दर मृदुअंगपरम बलरास
भइतिजयपाई ॥
हितकारी । तुमसमको बियवली बिश्वनें । बापबैर जिनलीन्यो ॥
बासवि: । तुमये कैवलवान जगत मैं रैनुकेय मदछीन्यो ॥ १ ॥ जोतुम
सें जयपाऊं । तोजग बलवान कहाऊं ॥
हितकारी । होंतो धनु सरवन्त खड़ोहों हौं तुमहूं हथियार लेहु ॥
वासवि: । कपिके आयुध दंत नख तरु पषान हीं हैं ॥

(इति लोललांगूलेन शैलमुत्पाट्य हंतुमिछति)

चेतमल्ल: । सुगल देखो देखो हितकारी के बान को पराक्रम आश्चर्य
है जाके बेगको सुर्पन हूं बांछा करै हैं सो बासवि जौलों उछलि
घात करन की इच्छा करै तौलों शर बिट्ठ छोनिहीं को घातकियो ॥
बासवि: । पद ॥ हितकारी सबके हितकारी परम पुरुष अवतारी ।
पशुधरी तारन सरमारी नाशीकुरूतहमारी ॥

सुतप्यारो मोसमबलवारो सौंपौंशरनतिहारो।
इषुकाढ़ीमोकों मुदबाढ़ो जाउं पुरीसुखवारी॥

(हितकारी शरंनि:सारयति)

(बासवि: तनुत्यागं नाटयति। नेपथ्य रोदनधुनि:)

हितकारी। सुगल तुम जाय नारिन को आश्वासन करि भुज भूषन के कर बासवि को पार लौकिकी क्रिया कराय के आवो डील धराधर तुमहूं जाउ जब कृत्य करि चुकैं तब सुगल को राज तिलक करि भुज भूषन कों युवराज करि लेवाये लिये आइयो॥

(तौ तथेतिनि:क्रांतौ। नेपथ्ये)

रुडिंडिमशब्दं। मुलुक सुगल को हुकुम भुजभूषन को।

(तत:प्रविशतिससुगलभुजभूषनोडीलधराधर:)

हितकारी। सूर्यनन्नु बहुत दिवस दुसह दुख भोग्यौ है मेरी आज्ञा मानि जाय अब सुख करी जौलौं बर्षा है हौंहूं डील धराधर साथ या परवत बसि दिन काटो हों बिन शरद आगमन महिजा मिलन को यतन अब अशक्य है॥

(सुगल भुजभूषणौ: तथेति नि:क्रांतौ)

(हितकारी डीलधराधरौ परिक्रामत:)

हितकारी। डीलधराधर या परवत बास करिये लायक है॥

छंदगीतका। झरनाझरैं मदधारशोसि अनेकधातुसिंगारहै।
आललित पल्लवलालभापी झूलचखसुखसार है॥
बहुघंटघंटीमुखर खगगनदंतदुति बकपाँत है।
परबतनहों यह बिहदवारन लखहुबिलसतमाति है॥

(इत्यारुह्यवासंनाटयति) हितकारी।

पद। घूमिघूमि घनउमड़ि घुमड़िकै घहरत दशदिशिघेरे। धुनिछन छनमन घनसोघमकातिबिपुइषु बूंदघनेरे॥ चहुंकितचमकिचमकि यहचपला हियरलकलगावै। बिश्वनाथको हायप्रियामुख शशियहि समयदेखावै॥

डीलधराधर:। धीर धरिये धीर धरिये शरद के चिन्ह अब पेखेपरै हैं॥

पद। जिमिशशिसहित अमलभो नभ तिमिरिपुहति प्रभूहिय ह्वै है।

बिलसहि बिगसित बारिज तिमि मुख सुखमा महि जाएहै ।
इनहंसनसद्रिसैगतिगहिअति उत्कंठितहिगजैहै ।
बिस्वनाथइनखंजनसेद्रिग देखिअमितमुदपैहै ॥

(नेपथ्ये गानवाद्यधुनिः)

हितकारी कर्णंदत्वा । डील धराधर या सुगल अबहूं हमारी
सुधि भुलाय कै राग सुनै है ॥
डील धराधरः सक्रोधं । मैं जाउं हौं बासबिकी दशा याहूकी करौंगो ॥
हितकारी । ऐसो क्रोध न करो जाउ समुझाय कै लेवाय ल्यावो
हौंहूं तौलौं परवत में सिद्धाश्रम न जाय चित बिश्राम करौं हौं ॥
(इतनिःक्रांतौलप्रवेषः) (मदारसुगलप्रवेशः)
मदाघूर्णितनेत्रःसुगलः । भभ्रवभ्रभर्णापापिये घुघुघुघूर्णतिमेदनी ॥
तारका । भभभ्रमतिभास्करोडपिनकेवलामेदिनी ॥
सुगल । हहाहमसिकंप्रियेववचार्णमानय ।
तारका । समाप्तिगगवाचके ॥
सुगलः । गगवाद्यमेवानया ॥

(प्रविश्य चेतामल्लः)

छंद । जोसबकाजसवांरनोतुरतहितेहि भुलायकपिराय ।
करिमदपानरहौमतवारैराजरहैकीजाय ॥
हमसचिवनकहंशोचहोतहैसमुझितिहारोनाथ ।
बिस्वनाथसुनिबिनयकरहुमोइजातेरहैबिलास ॥ १ ॥
इतिश्रुत्वा बिगतमदःसुगलःसभयं । बेगि बानरन कों पठाइ सप्त
दीप सैं ल्यावो ॥ चेतामल्लः तथेतिनिःक्रांतः ।
प्रविश्य भुजभूषणः । क्रुद्ध डील धराधर आय द्वार पर खड़े हैं ॥
ससंभ्रमं सुगल । तुम जाउ चेता मल्लको संग लै उनको शांत कराय
लेवाय ल्यावो ॥ भुज भूषणः तथेतिनिः क्रांतः ।
सुगलः । सुषेन सुता तुमहू अंतह पुरके द्वार लों जाय क्षमा कराय
लै आवो ॥ सुषेन सुता तथेतिपरिक्रमति ।

(ततःप्रविशतिचेतामल्लभुजभूषणाभ्यसिद्दितोडीलधराधरः)

(सुषेनतनयापुरोवलोक्य)

करनाटकी भाषा में पद । मैदन मंगल आगलि निनग ।
याकासिट्टमाडिदिइवतनन्नगण्डक्यलसइतग ॥
माडयानकोतिकलसिकोट्टाननीनुनडीवलग ।
विश्वनाथसिट्टविड्डअडूनीनुगतीनिनग ॥

तिलक । मैदन कहे देवर , मंगल कहे कल्याण, आगलि कहे होइ, निनग कहे तुम्हार ॥

दूसरतुक । या कहे काहे, सिट्ट कहे क्रोध, माडिदि कहे कीन्हा है, इवत कहे आजु, नन्नकहे हमार, गंड कहे पति, क्यलस कहे काज, इतग कहे इसका ॥

तीसरतुक । माड यान कहे करने हैं, कोति कहे कीश, कलसि कहे भेजि, कोट्टान कहे दिया है, नीनु कहे तुम, नडी कहे चलौ, वलग कहे भीतर ॥

चौथतुक । सिट्ट कहे क्रोध, बिड्डू कहे त्यागो, अडू कहे सब, नीनु कहे तुम्हार, गती कहे गति, निनग कहे हमका है ॥

(डील धराधरः अंतह पुर प्रवेशं नाटयति)

सुगलःसदारःपर्यंकात्स संभ्रमनुत्थाय। अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य ॥

डीलधराधरः सक्रोधं । अरे वह घर भुलाय सुरापान करि सुंदरिन संग बिहार करे है ॥

(सुगलः कंपते)

चेता मल्लः । आपको काज सुगल नहीं भुलायो युत्थपन बोलावन सब दिशन बानरन पठाये हैं ॥

सर्वतोवलोक्य सहर्षम् । यह देखिये मार्तंड मंडल को रज समूह पान ऐसो किये लेय है प्रलय पौन कैसो शोर होय है यातें मैं गुनौ हौं की बानरी सेना आवै है क्रोध काहे करियतु है सुगल हितकारी कों आपतें अधिक पिआरे हैं ॥

डीलधराधरःसस्मितं। सुगल हितकारी के पास चलो ॥

(इतिनि:क्रांता:सर्वे) (प्रविश्यहितकारी)

पद । पवनपरसिमहिजाअंगमेरो अंगअबपरसै । छनयहतापमिटायन्या करिनतु तन भ्करसै ॥ रबितुममकुलजेठकहहुकहं तियअपहारी । कैतेहिमायनिमालकरहुं विग्नुनाथसुखारी ॥

(ततः प्रविशति ससुगलो डोलधराधरः)

प्रणम्यसुगल: । यह सैना देखिये ॥

पद्धरीछंद । अर्बनखर्बनआवतकपीन । आकाशहोतअवकाशहीन ॥
वपुसमसुमेरुत्यपअनेक । त्रिकालहुकोनहिंडरतनेक ॥
जवजोरहुजिनसद्दशसुपर्ण । हैंबिबिधिदेशकेबिबिधिबर्ण ॥
निजतनअर्पोदलसहितनाथ । मोकरौंकाहियजोविश्वनाथ ॥

हितकारीसहर्षं । तुम सो मित्र पाय मैं अब शोक समुद्र पार होन चहत हौंइनको महिजा को खबरि लेन पठवो कहां है शरीरत्यागि दियो की जीवति है ॥

सुगल:अंजलिंबध्वा । बहुत भली बानरान्प्रति, तुम सब दिशि बिदिशि जाय महिजा की खबरि लै आवो औ भुज भूषन जेता मल्लादिकन को संग लै दच्छिन दिशा तुमहीं जाउ जो कोई मास भरे में खबरि न लै आवैगो सो मोरही करतें बद्ध होयगो ॥

हितकारी । जेतामल्ल यह मुंदरी सहिदानी लिये जाउ ॥

(तथेति निःक्रांता बानरा:)

सुगल: । महाराज जब मोकों अग्रज निकारि दियो तब मैं ताको महा अमर्षी जानि भयतें भाजत सकल महि मंडल अवलोकि आयो तहां तहां के गुप्त प्रगटस्थल मैं सब बताय दिये हैं खबरि लई आवैंगे तब मैं महासैन्य संग लै शत्रु संहार महिजा को लै आउंगो ॥

हितकारीउत्थायआलिंग्य । क्यों न कहो तुम सब करन को समर्थ हो ॥

ततःप्रविशंति । द्वीप द्वीप देश देश चिन्हानि गृहीत्वा बानराः ॥

सुगलसचिंतंस्वगतं । दक्षिण वोर तें भुजभूषन न आये मास बितीत ह्वै गयोधौं कहा है ॥

(प्रविश्य स्वप्रकाशिनीतापसी) द्राविड़ीबोलीमें ।

पद । अनकवरिकंनमलिपंडिरजैजैहितकारी ।
एल्लागुनपरंदडमउडमनूडबिडवियं नल्लकैयलविल्लुपिडिचिररोंवलि-
च्चुकारी॥एल्लालोकनादनखलकूटतकुन्नीरनीरमूनलोकदण्डीकेबरनल्ल
वेलपारू । संगरादिध्यानयश्मीनल्लसुखतअडंदालनल्लअडांघविश्व
नाथसज्जनन्तकारू ॥ १ ॥

(इतिप्रणम्य निःक्रांताः)

तिलक । अनकवरिकं कहे सबप्रानीको, नमलि कहे सुख, पंडिर कहे करवैयाहो, एल्लागुनपरंदडम कहे सब गुणनिधान हो, रड मनूडबिडबियं कहे शरीर संताप नाशकहो, नल्लकैयलविल्लु-पिडिचिर कहे सुन्दर हाथमें धनुष धारण कियेहो, रोंवलिच्चु कारी कहे बहुत प्रकाशकारीहो, एल्लालोकनादन कहे सब लोकनाथहो, खलकूटतकुन्नीरनी रकहे दुष्टसमूहकेमरैयाहो, मूनलोक कहे तीनलोकके, दंडीकेबर कहे शिक्षा करैयाहो, नल्लवेलपारू कहे शतकर्म्म करो, संगरादि ध्यानयश्मी कहे शिवादि ध्यान करिकै, नल्लसुखतअडंदाल कहे सुन्दर सुख पावतेहैं, नल्लअडांघिविश्वनाथ कहे सुन्दर रूपतें हेविश्वनाथ, सज्जनंतकारू कहे सज्जनन की पालनाकरो ॥ १

(हितकारी सुगलमवलोक्यते)

सुगलः । महाराज द्राविड़ देश के परवत में एक गुहा है तहां या स्वप्रकाशिनी तप करत हुती मेरे जान तहाँ गए कीश तिनसों आपकी खबरि पाय आय दरशन करि सुख छाय स्तुति करि शिर-नाइ कृतकृत्य भई गई ॥

(ततः प्रविशति गृद्धः)

गृद्धः प्रणम्य । महाराज मोकों आपके कृपापात्र बानर मिले तिनको दरश पाय पक्ष सहित ह्वै होंहूं प्रभु पद पदुम परसन आयो मेरो बड़ो भाग्य जगो जो मेरे भाई को काय आप के काज में लगो ॥

हितकारी । कहो सब कीश कुशल हैं महिजा की खबरि पाईकी नहीं ॥

गृद्धः । महाराज तिनको मैं संदेहित देखि राक्षसपुरी में महिजा को

बतायो सब मेरे बचन सुनि सिंधु पार जायबेमें असक्य देखे परे तब ध्यानस्थित जेतामल्ल पास ऋच्छपति जाय बृतांत जनाइ महाबल सुधि देवाई जेतामल्ल उर उत्साह भरि दीह देह धरि लंगूर महि मारि कह्यो पुकारि ॥

कवित्त । कहौतौउठायदीपबोरौंबीचबारिधमें कहौदिगसीससीसरोसि नोचिडारहूं । कहौमुष्टिकूटिकूटिरैनुकैत्रिकूटआजुगगनउड़ाय कैतमासोसोपसारहूं ॥ कहौक्रोधभारभूंजिभूंजिभूरिराक्षसानि सोईखाखधारिदेंहरुद्ररूपधारहूं । कहौतोलपेटिलूमल्याउंकुलिवाकोकुल आगेहितकारिहीकेमींजिमींजिमारहूं ॥ १ ॥

ऋच्छराज कह्यो तुम सब करन लायक हौ अबै जो आज्ञा भई है सोई करौ या सुनि उछलि पारही परौ, आज्ञा होइ तौ अब परिवार देखौं ॥ इति प्रणम्य निःक्रांतः ।

हितकारी । चलो संध्या बंदन करैं ॥

(इतिनिःक्रांताः सर्वे चतुर्थोऽङ्कः)

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंहजूदेव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके चतुर्थोऽङ्कः ॥ ४ ॥

———oo———

अथ पंचमाङ्क प्रारम्भः ॥

(समंची दिक्शिरःप्रवेशः)

दिक्शिराः संचिंप्रति । आजु हौं रैनिशेष सपनो देख्यो की एक मरकट खबरि लेन आइ जा सिंसुपा तर महिजा है तामें छप्यो बैठ्यो है सो जागि मैं महिजा के पास जाय बहुत भय दई ताके बिलाप की बातैं मेरे मन में अब लों गड़ी हैं ॥

संची । तो जागि रातिहीं दुख देन काहे गये ॥

दिक्शिराः । जाते वाकी दशा देखि दूत खबरि दै हितकारी कों आसुहीं ल्यावै ॥

प्रविश्यराक्षसी । महाराज मोकों ब्रह्मा कों बरदान रह्यो है जब लों कोई तेरो तिरस्कार न करैगो तौलों राक्षस पुरी को भय न छोड़गो सो काल्हि को रैनि में एक छोटो सो बानर आयो ताको मैं द्वार में रोक्यों मोको वा मुठिका मारयो मुरछित ह्वै गई जागि अस्तुति करि पूंछो तुम को हो कहां ते आये सो कह्यो हों हितकारी को दूत हौं महिजा की खबरि हेत आयो हों महिजा जहां रही सो थल भय सों बताय दियो औ तुमसों कह्यो हों हितकारी परम पुरुष हैं जो जीवन चाहौ तौ महिजा को लै शरण जाउ ॥

(इति निःक्रांता:)

प्रविश्य बाटिकापाल: । यक कपि महा प्रबल आय बाग बिध्वंसि पालकन मारि डारयो हों भागितें भागि खबरि देन आयो ॥

दिकशिरा: मंत्रिणंप्रात । सपनो सत्य भयो चलो पकरन को ततबीर करैं इतिनिःक्रांतौ ॥

(प्रविश्यचेतामल्ल: । इतस्ततःसंचरति)

नेपथ्ये कोलाहल: । रथ रथ हाथी हाथी घोरे घोरे धनु धनु ल्याव ल्याव धाउ धाउ ॥

(ततः प्रविशति स सैन्यो नयनकुमार:)

नयनकुमार: छन्दनराच । सबै सुभट्टधाइ धाइ घेरिलेहु कीश कों ॥
महान्‌रज्जुबांधियाहि देहु दिग्ग सीसकों ॥

सुभटा: । सबैहंथ्यारकैप्रहार अंधकार कीजिये ।
झपट्टिअंगअंगमेंलपट्टिबाँधिलीजिये ॥

(गृह्यतां गृह्यतामिति धावन्ति)

नयनकुमार: । अरे सूत यह तो बड़ो बलवान बंदर है बाग के प्रसाद को खंभ उपारि सब दल दलि डारयो हांकु मेरो रथ ॥

(इति शरान्निःक्षिपति)

चेतामल्ल:आत्मगतं । अरे यह तो बड़ो धनुर्द्धर है याके शरन सों हों सावकाश नहीं पावों हौं ॥

इत्युत्पत्यनिपत्यचरथंचूर्णयति।नयनकुमारःमल्लयुद्धंनाटयति॥

(चेतामल्लः पादयोर्गृहीत्वा भूमौताड़यति)

नेपथ्ये। महाराज नयनकुमार तो समर शयन कियो, वत्स वत्स इन्द्रमद मोरन काल है कि रुद्र है जो नयनकुमारई को मारि डारयो और कैसे जीतैगो ताते तुहीं जाइ बांधि ल्याउ ॥

चेतामल्लः आकर्ण्यस्वगतम्। रथन को घहरन गज घंटन को घन घन बाजि पैजनियन को झनझन भूषनन को खन खन एक ह्वै महा घोर सुन्यो परै है कोई बड़ो बीर आवै है॥

(ततः प्रविशति घनध्वनिःससैन्यंच)

चेतामल्लः सोत्साहं छंद तोटक ।

युगसर्पसदर्प्पलगरथमें । पसरैमनि पुंजप्रभापथमें ॥
फहरात अकाशपताकमहै । उतसाह भरो अति सूतअहै ॥ १ ॥

परम प्रतापी पुरहूत विजयीआवै है वाहवा वाहवा आछो युद्ध ह्वायगो ॥

(इति सिंहनादंकृत्वा उत्फुल्ल भुजमास्फोटयति)

(ततः सर्वतः सेनाप्रहरति)

घनध्वनिः सूतंप्रति। अरे याको पराक्रम देखै तो बारन उठाइ बारनन पैं डारि रथन सों रथन संहारि भटन गहि भटन को मारि इत उत दौरिदौरि सिर भुज तोरि तोरि करोरिन को निपात करि दियो हांकु तो याके सन्मुख मेरोरथ॥ इति शरजालं मुंचति ॥

(चेतामल्लः बाणान्वंचयित्वा पर्वतैः प्रहरति)

घनध्वनिः। देखै तो सूत याके पवारे परबत आकाश अनवकाश करत प्रलय पयोदही से पेखे परै हैं ॥

(इति शरैः पर्वतान्निवार्य्य आचम्य अस्त्राणिमुंचति)

चेतामल्लः स्वगतं। देखों तो याको पराक्रम कैसो है ॥

(इति निःचलस्सन्मुखं तिष्ठति)

घनध्वनिः। अरे सूत आश्चर्य है जे हमारे अस्त्र शस्त्र कालहू को बिथित करत रहे ते याको तन तनकउ नहीं असर करै हैं अब देखैं अमोघ ब्रह्मास्त्र तें बांधौं हौं ॥

(इति आचम्य निःश्वसिति)

चेतामल्लः आत्मगतम् । अब मैं ब्रह्मास्त्रकी मर्यादा राखि दिगशिरको देखौं ॥

(इति ब्रह्मास्त्र बद्धः पृथिव्यां पतति)

राक्षसाः सहर्षं रज्जुभिर्बध्वा स घनध्वनयो निःक्रांताः ।

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिरः)

दिक्शिरः । अरे द्वार में गलबल काहे को सुन्यो परे है ॥

प्रविश्य द्वारपालः । महाराज घनध्वनि वा बंदरको बांधि लै आयो हैं ताको सब पुरवासी हराषत ह्वै मारिमारि तारी दै दै सोरकरे हैं ॥

दिक्शिराः । अरे उन पैं कहै जाइ मारैं मति वाको ह्याँई लै आवैं ॥ द्वारपालस्तथेतिनिःक्रांतः ।

(प्रविशति करगृहीत रज्जुबद्ध चेतामल्लो घनध्वनिः)

चेतामल्लः आत्मगतम् । अहो याके बदनन में महा प्रकाश है सुर्य्यशिष्य जो मैं ताहू के नैन निरखत में मूंदि आवै हैं ॥

नेपथ्ये छन्दनराच । कृशानु जाइ पाक भौनबेगि पाककों करैं ।
बहारि आउ वायु बाट फेरि मन्द संचरैं ॥
चलेस ल्याउ गंगपाथ दिग्गशीस न्हानकों ।
धनेश धाइ छोड़ल्याउ निद्धिनित्य दानकों ॥

चेतामल्लः श्रुत्वा सविस्मयं स्वगतम् । आश्चर्य है ऐसी आज्ञा ईश हू की नहीं सुनी ॥ दिक्शिरमोऽभिप्रायंज्ञात्वा ॥

मंत्री । रे बंदर कालरुद्र बिष्णु पठायो आयो होइ तो साँच कहि जाय तोको छोड़ि ताही को देखि लेडुंगे ॥

चेतामल्लः दिक्शिर संप्रति । मोको तिहारे बंधु सुगल ने पठायो है या कह्यो है हमको हित चाहै हैं जो कोई अनीति करे है ताको बिनाश बेगिही होइ है तुम हितकारी की नारी हरी है सो दै राखो तुम्हारे तो वेद शास्त्र सब जाने है बहुत समुझन वारे सों बहुत कहै तें का है ॥

दिक्शिराः । हम तो हितकारी की नारि हरि लयाये हैं उन को यामें कहा परी है ॥

त्रेतामल्लः दोहा । विष्णु स्वयंभू शंभु हू तीनि तीनि तनधारि ।
कोरछहि हितकारिरिपु सकै न मीचु नेवारि ॥

दिक्शिराः सक्रोधम् । क्रोध कटुभाषो को मारि नहीं डारत हौ सुनत कहा हौ ॥

भयानकः दिक्शिरसंप्रणम्य । महाराज दूत अवध्य है मेरे मन में एक मंत्र आछो आयो है सो सुनि लीजै ॥

दिक्शिराः । कहिजाइ ॥

भयानकः । बानर को लंगूर परम पियारो होइ है सो लाय छोड़ि दीजिये जो उनके पराक्रम होयगो तो याको हाल देखवेई आवैंगे तिनहीं पै प्रहार करैंगे ॥

दिक्शिराः । आछी कही ॥

पुनश्च राक्षसान्प्रति । भो राक्षसौ याको लैजाइ लंगूर पट लपटाइ आगि लगाइ बाजन बजवाइ राक्षसपुरी के चारों ओर फिराइ छोड़ि देउ ॥

राक्षसास्तथेति त्रेतामल्लं गृहीत्वा निःक्रांतः ॥

(नेपथ्ये महान कोलाहलः)

छंदनराच । अलातचक्रकं प्रभासबैअनाथसेजरैं ।
लचीमहासुबर्णभूप्रसादपर्णघिलैंढरैं ॥
त्रानकोबिधाननाहिंप्रानआसुनिस्सरैं ।
भभांतभौनभांड़भांड़हायहायकाकरैं ॥ १ ॥

आकाशे । अरे अरे राक्षसपुरी की लपटैं तो स्वर्गहू लों आईं चलो चलो ब्रह्म लोक कों ॥

दिक्शिराः ससंभ्रमं । देखो तो देखोतो कहा होइ है ॥

द्वारपालः । महाराज वा बंदर ने ऐसो लंगूर पसारो की पुर भरे में पट घृत तेल न रह्यो जो लेस्यो सो छोटो होइ पास ते छूटि बड़ो शरीर धारि रक्षा करन बारे राक्षसन को संहारि पुर जारि डारयो ॥

दिक्शिराः ससंभ्रमं सर्वैर्मुखैः । अरे धावो धावो कुल सहित सकल दल पुष्पक चढ़ावो सागर पहुंचावो होहूं घटकान को उठाय आय पहुंचत हों ॥ इतिनि ःक्रांताः सर्वे ॥

(ततः प्रविशति मल्हिजाराक्षस्य)

मल्हिजा । बड़ा कोलाहल सुनो परै है कहा है ॥

सुनेपैशाचीबोली में पद । जेवनलेघनलवेनबंधिए ।
सेद्गिलजालियलंगूलेलरबुलूयंधलितुनंमुंचिए ॥ इदोतदोधावन्ते
जालइपुलंलस्कसीचंपइलुंचइ ॥
ताइइमेहुंमहाकलकलेविस्सनाहपियतमेंसुनिज्जइ ॥

टीका । जेवन लेकहे जो बानर, घनलवेन कहे घननाद करिकै, बंधिये
कहे बांधिगा, से कहे सो, दिगल कहे दिगभीत करिकै, जालिय
लंगूल कहे जराई गैलांगूलजेहि करि, लरबुलूयंधलितुनंमुं चिए कहे लघु-
रूप धारन करिकै छूट, इदोतदो धावंते कहे इहां उहां धावत,
जालइ पुलं कहे पुरकोजावत है, लस्कसीचंपइलुंचइ कहे राक्षसिन
कह चावत है नोचत है, ताइइमें कहे तेकर, याहुं कहे
निश्चय करिकै, महाकलकले कहे महा कलकल शब्द, विस्सना-
हपियतमें, कहे हेविश्वनाथ पियतमें, सुमिज्जइ कहे सुनोपरत है ॥

(मल्हिजासशोकं)

दोहा । हायहायकरतारअब जोकछुनकृतिहमारि ।
तालेकपिकारोमिजपावकसकैनजारि ॥

प्रविश्यचेतामल्लःप्रणम्य । अम्ब बृतांत सब सुनिबोई कियो होइगो
आप के प्रभाव तें पावकहू पायही सो लग्यो पयोधिमें पूंछि बुझाइ
पद पंकज परसन आयो आज्ञा पाऊं तो हितकारी पास जाऊं ॥

मजिा सहर्षं । यहचूड़ामति सहिदानी लेउ, तिहारो मारग सिद्धि
होइ ॥ चेतामल्लः प्रणम्य निःक्रांताः ।

मल्हिजाराक्षसींप्रति । यहां राक्षस पुरी के खाख तें कछ देख्यो
नहीं परै है चलो तड़ाग में चलि बिश्राम करैं ॥

इतिनिः क्रांताः । (ततः प्रविशति ससैन्यो भुजभूषणः)

भुजभूषणः चिरंजीवी कच्छराजंप्रति । चेतामल्लको बिलंब
बड़ो भई धों कहा भयो होइ ॥

कच्छराजः । सगुन बड़े बड़े होय हैं चाहिये चेता मल्ल खबरि लिये

कुशल आवतै होय देखो देखो या दक्षिण ओर तें आंधी आवै है औ किलकिला शब्द सुनो परै है ॥

(ततः प्रविशति चेतामल्लः)

भुजभूषणः सहर्षं सुत्थाय लांगूलं चुमित्वा । अरे चेतामल्ल तो आयही गये ॥

सभुजभूषणाः सर्वैः बानराः सहर्षं चेतामल्लमालिङ्गति ।

चेतामल्लः सर्वैं यथेचितं मिलित्वा सर्व वृत्तांतं कथयति ।

भुजभूषणः । जो खबरि पाय बिन बिन लिये गये तो सब की भरता की भार होइगयो यातें चलो दिक्शिर को मारि महिजा को लिये चलिये ॥

विभराजः । तुम बासवि के तो पुत्र हो काहेनकहौ भैहितकारी की आज्ञा खबरि ही लेन को रही है तातें चलो सो सुनाय फिरि उनहीं के साथ आय पराक्रम करियो ॥

भुजभूषणः । बहुत भलो ॥ इति सर्वे निष्क्रान्ताः ।

(ततःप्रविशति स सुगल डीलधराधरो हितकारी)

सुगलः । चेतामल्ल अकेले राक्षस पुरी को गयो वहां शत्रु बड़े बरिबण्ड है धों कहा भयो होय ॥

डीलधराधरः । प्रभु प्रताप तें सब आछो होइगो ॥

प्रविश्यदधिवदनः । भो महाराज तिहारो रखायो रह्यो जो माक्षिक कानन ताके फल भुजभूषन सब बानरन को खवाइ दये औ तोरि तोरि महि डारन लगे तब मैं चलि अधिक रोक्यो तो मधुमत मोकों प्रहार कीन्हो भाजि आइ आप को जनायो ॥

सुगलः सहर्षं । महाराज महिजा की खबरि आई जो खबरि न लैआवते तो माक्षिक बन के फल न खाते ॥

(प्रविश्य सर्वेबानराः प्रणमति)

(भुजभूषणः सर्ववृत्तांतं कथयति ।

हितकारी सहर्षं । चेतामल्ल महिजा को वृत्तांत आपनेमुख तुमहू कहिजाउ ॥

पद । चेतामल्लपरमहितकीनो । टेक ।

द्रुततरउदधिउलंघित्यायसुधि सोऽकसमुद्रसुतरैकरिदीनो ॥
ताहिदेवेलायकत्रिभुवनमें वेरतहोतिमेरिमतिहीनो ।
विश्वनाथसमहिंहिमा हंप्रिय सदहिरहहिममरसमतिभीनो ॥

चेतामल्ल: । जलधितो आपकी कृपा जहाजही पार कीनो औ राक्षस पुरी तो महिजा की महा शोकाग्नि हीं ते जरिगई महाराज मैं कहाकरन लायक हुतो ॥

हितकारीसवाष्पावरुद्धकंठम् । महिजा शरीर रहन को कारण कहि जाउ ॥

चेतामल्ल: । महाराज दिगंगिर पुरमें काल की गति नहीं है महिजाउ यह चूड़ामनि सहिजानी दई है औ कही है की इन्द्र सूनु काक की बेरि जो कृपा मेरे पर करी सो कहां गई ॥

गृहीत्वा हितकारी । यह चूड़ामनि देखे मोको महाराज द्रिग कमल ओझील करु की सुधि आइ गई ॥

दूत्यधरत् फुर्णाविटयत्वा धैर्य्यमभिनीय । रिपुको रूप पराक्रम कहि जाउ ॥

चेतामल्ल: कवित्त । लागेहैंत्रकासदशसीसशैलशृंगएेसे बीसभुजविपुल अहीशसमभायेहैं । विष्णुचक्रबज्रवासीवारनकेदन्तनके दोरघहियमें कनेघायठविछायेहैं ॥ एकबलवानऔसुजानबेदशास्त्रन में सारअरु सस्त्रजाको शिवहीपढ़ायेहैं । लोकनकेनायककेलायकरहेतोवाही पापीजानित्रजइन्द्रआदिकबनायेहैं ॥

सुगल: । महाराज अब धीर्य को अवस है मुहूर्त करिये चलिये

हितकारी विचार्य । विजय मुहूर्त अबहीं है ॥

(इति चेतामल्ल मारुह्य डोलधराधर: भुजंगूषणमारुह्य सर्वे व्यूह बध्वा परिक्रांति ।

आकाशे गद्य । सुगल बल अति अविरल दल भूरिभार छिति तल कूहल हलत पल पल शैल उसलत जलधिजल खल भलत बेल थलतजल कहलि कहलि कोलकच्छ कलम लात अकुलात चटपटात गात पिसे से जात दरित रदन दरद दिगदुरदन चीतकार अपार धूरिधार धुंधकार दिन भरतार नाल खाटत अरमित उड़ात

प्लवंगनपानि लांगूल लीला उन्मूलित उच्छालित शृंग समूल वृक्ष वृन्द इन्द्र पेखो पेखो रिपु पर प्रभु पयान कीन करि सुरन मुरन आनंद देन चाहत है॥

सुगल:। प्रभु पेखिये तीर तरुन तरुन तरुन तति सरित पतिको जवनिकासी शोभित होइ है॥

हितकारी। राक्षस पुरी समीप है यातें सावधान डेरा करो॥

आकाशेपद। सबलेकसरन्यहितकारी। टेक।
अतिदयाल समरथसवभांतिन शरनशरन मेंशरन तिहारी॥
बंधुबिचारिदेनहितमहिजा दिगशिरकोंहठिमंत्रहिदीनो।
कोपिलातमारयोमोहिंमैतबचलिविश्वनाथचरणचितकीनो॥

पर्वतानुत्पाटयप्रहर्तुं सन्नद्धान्वानरान्दृष्ट्वा हितकारीङ्कारेण वारयति (सर्वे वानरास्तथैवतिष्ठति)

समंचीसुगल:। महाराज राक्षस बड़े छली होइहैं आइभेदकरिवेई प्रहार करैंगे॥

चेतामल्ल:। महाराज तेरोमत तो ऐसो है जो कपट कलित होय है सो ऐसी सरल बाणी नहीं कहै है॥

हितकारी पद। शरनागतपालकममबानो। टेक।
मित्रभावकरिकोउआवै तजहुंनकबहूं असतु मजानो॥
नखतेंकोटिसकोंखलदलसब राक्षसकाकरिसकतहमारो।
विश्वनाथजोहोइदिगशिरहू तऊलयावोकछुनबिचारो १॥

सुगल:। महाराज जो बाणी मैंकही सो आपकी शरणागत बानिप्रकट करन के हेत अबयाको मेरो समकरि दीजिये इति न:क्रांत:।

(प्रविश्यसुगलोभयानक:चत्वारो मंचिणश्चप्रणमति)

भयानक: हितकारी पादयो: पतित्वा। हेसर्व भूत के शरण्य पाहि पाहि शरण शरण॥

हितकारीउत्थाप्य। तुम तो हमारे बंधु समहो हम तुम को अभयदई सुगल जलनिधि जल ल्यावो इनको राक्षसपुरीको तिलक याही छनकरों॥ सुगलस्तथाकरोति॥

हितकारीअभिषिच्य। पारावार पारजानको विचार करो॥

भयानक: । आप के शरै सेतु करन शोषण समर्थ हैं पै आप के पु- रषन की बनायी है यातेंविनय करि मानराखिये वाही सों यतन पूंछिये ॥ हितकारी तथाकारोति ॥

डोंलधराधर: । तीन दिन आप कों विनय करत भये यह आपनी जड़ताइही जाहिर करै है ॥

हितकारीधनुर्गृहीत्वा । जोनहीं प्रकट होइ है तौ या शरतेंशोषे लेउंहीं ॥ नेपथ्ये पाहि पाहीत महान् शब्द: ॥

(तत: प्रविशतिसाभार्य:सागर:)

सागर:सभयं । महाराज मोकों आपही जड़ बनायो है मेरीकहाचूक है आपके सैन्यमें बिश्वकर्मा को सुत है तासों सेतुबंधाइ लीजिये मैं धारण करोंगो ॥ इति निक्रांत: ॥

सुगल: । हे वैश्वकर्म चलो वेगि सेतुबिरचो हम सब शैल लै आवैहैं इति सर्वे बानरा:निक्रांता: ।

आकाशे । छप्पै ॥ वृन्दवृन्दकपिइन्द्रलियेअनिलोंहिइवआवत ।
शैलसमूहहुसहितगगनभूतलसमभावत ॥
पटतजलधिखलभलतहलनअँचिपतिनिकेत है ।
अमितअंबुउच्छलतछहरिछितिछायलेत है ॥
तर्जितजिदहार द्रुतमीनगन भभरिभभरि भागतअहैं ॥
असकौतुकभारीदेखिनहिं जसहितकारीकरतहैं ॥

प्रविश्यसुगल: । महाराज सेतुतयार है ॥

(हितकारीबालुकामयंशिवलिंगंस्थापयित्वा)

सहर्षं । चलौ पारावार पारको ॥

इतिनि:क्रांता:सर्वेपंचमोंक: ॥ ५ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देवकृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके पंचमोंक: ॥

अथ षष्टमोङ्क प्रारम्भः ॥

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः)

दिक्शिराः विहस्य । सुनियतु है बानर बहुत समिटे हैं औ साग-र तजि मोसों रन करन विचार करै हैं सो कौन आश्चर्य है पतंग प्रदीप में जरन कहा नहीं आवैं हैं कीर दूत तें जाइ खबरि लै आवै ॥

कीरः । महाराज बहुत भली ॥ इति निःक्रांतः ।

(नेपथ्ये महाकलकलः)

दिक्शिराः संचिंत्यमति । सोर बड़ो सुनो परै है कहा बानर उ-तरि आये ॥

प्रविश्य कीरः । महाराज बानरी सैन सेतु करि उतरी आवै है ॥

दिक्शिराः सत्वरं । चलो तो ऊंचे चढ़ि देखैं ॥

(इतिपरिक्रामति)

कीरः । महाराज यह देखिये दूजो उदधि ऐसो कपि दल देखो परै है ॥

दिक्शिराः । संख्या तो कहु ॥

कीरः । छंदतरंगिनी ॥ राक्सपुरीचहुबेर । कपिमार्छिनहिंअसठोर ॥ चाकलकोसचालीस । मतचारिलामनतीस ॥ कपिबांधिसंघसमेत । कोउतकेउतरनतेत ॥ आकाशहूदशकोस । कपिभीरभरी सरोस ॥

दोहा । भूपभूपय हिसैनकेरविलजीतनहार । शेषनसंख्याकरिसकेंगनैनोंअपहार ॥

दिक्शिराः । अरे यातो बड़ो कौतुक लख्यो ॥

कीरः । महाराज पहिले हितकारी के उतरत बड़ो कौतुक भयो ॥

गद्य । आहव आल्हाद बदन बिलसत बिलसत एक एक के आगे बिहँसि बहुत हँसि बहुत बिनोद किलकिला कोला हल करत कर तरु गिरि गहेन चढ़त गिरि परत गिरि परत जलधि जलहलहलत हलहल तहां

कै। शब्द दिशन भरत भरत खंड मैं कछु सुनि न परत भयो ॥
छंद । बिबिधिजातितरुफलभोजनहितउसलतसबजलजीवभये । हित
कारीसरूपताकिछकिछकिछ्रै जड़इवतहंसकलगये ॥ तिनचढ़िचढ़िबहु
क पदलउतरभेतोकौतुकप्रभुकहंलोकहों । सुमिरिसुमिरिवहअघटित
घटनाअघहूलौंमैंठगिसोरहों ॥
दिक्शिरा: । अरे लखाउ हितकारी कौन है ॥
कीर: । महाराज जाकी काय में कोटि मरकत मनि कांति पेखी
परे है सोई त्रिभुवन में एक धनु धारी हितकारी है ॥
दिक्शिरा: सक्रोधं । अरे मो को डरपावै है भागु दुष्ट ह्यांते ॥

(कीर:सत्वर सभयं निःक्रात:)

दिक्शिरा: आत्मगतं । अब नृत्य निरखन को समै है ॥
इति निःक्रांत: (तत:प्रविशतिससैन्योहितकारी)
हितकारी । सुगल संध्या भई यह सुबेल पैं डेरा करियेमोर देखि
-तेइंगे॥

नृत्य पविशंति । (सेनना:)

पद । लेहुसकलकपिलाचनकोफल आजुसुछबिअतिभारी । कीसनाहके
गोदसीस धरि पौढ़ेहैं हितकारी ॥ भुजभूषनअनिलजपददाबत दहिने
डीलधराधर । विस्वनाथबांएकछुभाषत मंत्रभयानकजयकर ॥ १ ॥
हितकारी चंद्रमवलोक्य । याके मध्य स्यामता नहीं है होंया
अनुमान करो हों पूबहीं स्यामा सर्बरी बियोगते पंचबान के बान
याहू को हियो फोरि गये हैं तिनके छिद्र हैं ॥

(डीलधराधर:)

पद । य कीकिरिनिपरसिकोऊबिरहीकेरमनलजगायो ।
किरनहिंकिरनधाइआगीयहि ट्रकोइलोबनायो ॥
सुगल: । ऊपरस्वच्छमलिनताभीतर सोइदरशातहियेहै ॥
चतामल्ल: । विस्वनाथप्रभुदुखहिदुखितसोभिहालाहलहिंपियेहै ॥

(नेपथ्ये ध्वनि:)

हितकारी । हेभयानक दक्षिणवोर कहा मंद मंद मेघगरजैहै ॥

भयानकः । महाराज मेघ नहीं है दिग्शिर नाच होवै है तहां की मृदंगध्वनि है ॥

(हितकारी धनुरारोप्य प्रविनिक्षिपति)

सुगलः । प्रभु प्राची दिशि तिमिरारि कैसे उदित होत आवे हैं जैसे अज्ञान को नाश करत साधक के हृदय में ज्ञान ॥

हितकारी । व्यूह बांधि चलो ॥ इति सर्वे निःक्रांताः ।

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः)

दिक्शिराः संचिंत्यप्रति । अरे बड़ो आश्चर्य है मेरो छत्र चमर सब संगाविके आभरन राति नट सार में आकस्मात् ई काटि गिरिपरे

सशंकमंत्री । महाराज या कछू अशगुन सो सूचित होइ है कपि दलो सुवेल उतरि आयो ॥

दिक्शिराः विहस्य: । अरे तिर्यगयोनि में मरकट महा पशु होइ हैं आपनो मरिवोऊ जाने हैं पै मूठो ते मटरो नहीं छोड़े हैं फंदि जाइ हैं ॥

प्रविश्यचारः । महाराज राक्षस पुरी चारों वोर ते घेर गई या कोशन को शब्द आपहू सुनत होइगे जेहिते सप्रवत पारावार धरा डोलै है

दिक्शिराः । यह सैन शब्द सुनि मोकों कैसे सुख होइ है जैसे नवीन नायका की नूपुर ध्वनिसुनि ॥

नेपथ्ये । हाय हाय अवधों कहा है एक कीश पुनि पुर पैठि आयो ॥

प्रविश्यद्वारपालः । महाराज द्वार पैं एक बंदर खड़ो है कहै है मैं सुगल को पठायो आयो हौं ॥

दिक्शिराः नेत्रसंज्ञया तमाकारयति ।

(द्वारपालो निःक्रांतः)

ततःप्रविशतिभुजभूषणः । (भुजभूषणः इतस्ततोविलोक्य)

छंद । तिय चोर कहां है ॥

दिक्शिराः । भुजआंखिनहीं है ॥

भुजभूषणः । निरलज्जतहीं है ॥

दिक्शिरः कटुभाषनहीं है ॥

भुजभूषण: । हौंतो यथार्थई कह्यो है पै प्रियहू सुनै प्रभु भयानकको राक्षस पुरेश कियो सो कलंक तें डेराय प्रभु मों विनय करि अबहूं दूत पठाये जो बिरोध छांड़ि महिजा को देराखैतो राक्षसेश वही बनो रहै सो सुनि प्रभु की सुख पाय सुगल कहा या कहल मोहिं पठायो है की तुम हमारे बंधु को मित्र हो यातें सीख दीजियतु है दशन तृन गहि प्रभु शरन आवो नातो तुम्हारे नामनै प्रभु शर सप्तमी बहुव्रीहि समास करैगे ॥

दिक्शिरा: छंद । असमोनोंकोऊकह्योनिकबहूंजैसीसीखसुनावै ।
अहोमहाअचरजडेरवावैबैनरबंदरजगरावै ॥
काकोमुततैंकहैबेगिहौंयाकहिकहापरीहै ।
भूखोहोइमंगाइदेउंफलदेननरनारिहरीहै ॥ १ ॥

भुजभूषण: छंद तोमर ।

कियमीतदैजगजोति । तेहितनयमैंप्रियरीति ॥

दिक्शिरा: । कहु कहु कुशल मम अंग ॥

भुजभूषण: ॥ भोवानवन्हि पतंग ॥

दिक्शिरा: । कहु कौन मारन हार ॥

भुजभूषण: । किय राम भहि जेहि छार ॥

दिक्शिरा: । पितु बैर तैं नहिं लीन ॥

भुजभूषण: । प्रभु दीन तेहि फल कौन ॥

दिक्शिरा: । धिक धिक अरे बाप के वैरी प्रभु कहै है ॥

भुजभूषण: छंद । सुनु शठ सबके प्रभु हितकारी । शंभु धनुष जिन भंग किओ ॥

दिक्शिरा: । रेमतिमंद हरहु युत हरगिरि मैंकरिनिज करकौल लियो ॥

भुजभूषण: । जोतोहि बांधिजानि दुज छोंड्यो तेहिनृप बिनजिय करि जोदियो । तेहिमुनि मउमोरन हितकारी बीसनयन सूझत न हियो ॥

(दिक्शिरा: सक्रोधं)

दोहा । दिगशिर जैहै समर महि तब ह्वै है बल ख्यात ॥

भुजभूषण: । छठैं बरन दैअरध विधु ऊतरू गनु निजवात ॥ १ ॥

दिक्शिरा: साट्टहासं । अरे मरकट भटाई करै है जान्यो जान्यो

तेरे बाप को मारडारनो है यातें तेरे जाम बेई बलवान है ॥

छंदनराच । कराल काल दंडविष्णु चक्रधार वक्रहै ।

लई बिचारि कायकी कठोर तामोअंग छै ॥

संग्र सेइ बंदि मोर जोर खूब जान तो ।

अयानतें प्रशंसि राजपुत्र मोन मानलो ॥

(भुजभूषणः सक्रोधं)

दोहा । हितकारी सों रननहीं परो न कहुं खलराय ।

नीतिबिचारेंसुरअसुरबैठेन्यनब ताय ॥

दिक्षिराः छंद । परबलबलवानै । ममभनितनमानै ॥

भुजभूषणः सक्रोधम् । यहहैपरमानै । अवहींखलजानै ॥

सवैया । अपनोपगमैंमहिरोपतहौं सबभट्टतिलोभरटारहिंजो ।

तहं जोआकवीहमसत्यगनैं अवलैातिनकोगनुहारहिंजो ॥

दिक्षिराः भटान्प्रति । तुमबैठे कहाकरौबीरसबै यह बंदरठाढो

प्रचारहिजो ।दिगनायकआजुहमैंकरिहौंयहिकोगहिपायपछारहिजो ॥

भुजभूषणः आत्मगतं । एकहीं बार ये हजारन सुभट मेरी पग एटावे

हैं पै तिलो भरि नहीं डोलै सो हितकारी की कृपा है ॥

(दिक्षिराः सक्रोधं सिंहासनादुत्थाय)

रेरेकीशहौं पाइ गहि सागर में फेंकोहीं अब बल कारि रोप आपनो पग ॥

भुजभूषणः । अरे मेरे पाइ गहे कहा है हितकारी के पाइ गहे जातें

बिनाश न होइ ॥

(दिक्षिराः सलज्जंसिंहासने उपविश्यसक्रोधम्)

दिक्षिराः बांधो बांधो कीश कटुभाषी जान न पावै ॥

भुजभूषणः । अरे शठ सीखनहीं माने है अब हितकारी के भूंखे

बान तेरे कंठ श्रोणित पान करि अघाइंगे ॥

(इतिचागत्य ष्टलवलश्चतुरोराक्षसान्हत्वा निःक्रांतः)

दिकशिराः । ये बानर बहुत ढीठ होय गये चलो अब इनके शिकार

खेलन की तदबीर करें ॥ इतिसपरिकरोनिःक्रांतः ॥

(ततः प्रविशति हितकारीसैन्यञ्च)

हितकारीभवानकंप्रति । अब कहा कियो चाहिये ॥

भयानकः। हां ऐसी खबरि पाई है की दिगशिर अपने सेनानी कों पूर्व द्वार में टिकायो है तहां श्याम सेनानी को पठाइये दक्षिण द्वार में कुलिशरद कों राख्यो है तहां भुज भूषण को पठाइये, पश्चिम द्वार में कुनयन कों राख्यो है तिनकी सहाय में घनध्वनि कों टिकायो है तहां चेतामल्लकों पठाइये उत्तर द्वार में दिक्शिर आपई है याते हम सुगल आप ह्यांई टिके रहैं॥

(हितकारी नेत्रसंज्ञया ज्ञापयति प्रत्यक्षते निःक्रांताः)

नेपथ्ये। अरे एक कपि प्रबल आइ लूम पुर लाय लाय कीन बिकल भल अब कपिन दल कोलाहल हहल हहल हालत महल हाय हाय कहा होय॥

पुनर्नेपथ्ये। पाइ रथ दशगल चढ़ि चढ़ि बहल जहल पहल तन अति बल राक्षस नदल कढ़त धूरि धुंधकार मार्तण्ड मढ़त बाजिन बढ़त देखो कैसो युद्ध होइ है॥

प्रविश्यचयोबानरा:। महाराज कुनयन औ अचल कों चेता मल्ल कुलिशरद कों भुजभूषण औ दिगशिर के सेनानी कों आपको सेनानी संयमनीपुरी निवासी करि दियो॥

सुगलः सहर्षं। कहि दीजियो जो निकसै ताकों याही भांति मारिडारैंगे॥

(नेपथ्ये महाहलहला शब्दः)

(ततः प्रविशंति श्याम भुजभूषणचेतामल्लः)

सुगलः। कौन कारण तुम आये॥

त्रयोभटाः। उत्तर द्वार ह्वै दिगशिर कढ़ै है याते अपने अपने द्वार में भारी सेना टिकाय हम आये हैं॥

(ततःप्रविशतिदिक्शिरः सैन्यञ्च)

हितकारी। हे भयानक यह दल के महा भटन को चिन्हावो॥

भयानकः छंद। रसवीरसोमुखलाल। करिकंधपरसमकाल॥
घनसजलसरसशरीर। दूजोअचलयहवीर॥
प्रलयागिसमजेहिदेह। मातंगजेहिसमनेह॥
बलअहैसमपुरहूत। नक्राचरासभपूत॥

करशूलकरसुरशूल । सुरकालनामअतूल ॥
जोचढ़ोबारनबीर । अतिउदरयहरणधीर ॥
करशूल वृषअसवार । त्र्यमुण्डदिगशिरवार ॥
अहिलिखोध्वुजबलवान । बड़अभैसुतघटकान ॥
करशक्तिहयसमनट्ट । यहमानवांतकभट्ट ॥
करपरिघबलसमशुंभ । हैनिघटसुतश्रुतिकुंभ ॥
गिरितीनसमहिशरीर । अतिबलधरेधनुतीर ॥
बाढ़तरहतसबयाम । अतिडीलयाकोनाम ॥
केहरीअंकपताक । याकीचहूंकितसाक ॥
जोहिजोरजगतसभीत । घनध्वनिअहैसुरजीत ॥
नभलगेजोहिदशमाथ । धनुबानबीसहुहाथ ॥
बहुभूतरयचहुंओर । हैयहैदिगशिरघोर ॥

हितकारी सखितम् । याको जैसो सुनत रहे तैसोई है सहस्र सहस्र कर सम प्रकाश सों याके आनन नीकी भांति निहारे नहीं जाइ है जैसो यह निशिचर परिवार पालन हार बल पारावार है ऐसो दूजो संसार में बिचार में नहीं आवै है अधरम अगार जो न होतो तो याको संहार करन हार कौन हुतो ॥

दोहा । बहुतकियेश्रमडीठिपथ परनोआजुदिगशीश ।
बीसबिसेंमुददेतमोहि धरिधनुशरभुजबीश ॥

दिगशिरा: । अरे महा सुभटो सुनो जानि जो बानर किलामें पैठि जाई तो न बनै यातें तुम सबलौटि जाव मैं अकेलहीं मारि लेउंगो ॥

सर्वे तथेति नि:क्रान्ता:

(दिक्शिरा: सक्रोधं धावति)

सुगल:स्वगतं । पद । आजुबखतरप्रभुफूलेनसमातुहैं । देखिदेखि दिगशिरफेरतस्वकरशरधनुषकपाइबारबारमुसुक्यातहैं ॥ रोमरोममेंद छायेदेवनकोभलभाये छनछनसुछबिलटनअधिकातहैं । बिश्वनाथ मनयहिओसरमेंदेखौपरैआपैआसुखलसोंजराईलेनजातहैं ॥
सोअवहमहींआगेहोंय ॥

(इतिगिरि तरु कर सैन्यसहितो धावति)

हितकारी । डीलधराधर देखो बानरन के चलाये गिरितरु समूहनतें दिगभिर कैसो मंदिगयो जैसे बर्षा कालके मेघन तें महा महीधर । फिरि बानन तें गिरितरु काटिकैसें निकसि आयो जैसे सूर्य नीहारतें ॥

डीलधराधर: । देखिये महाराज सुगल कों तो एकहीं बान तें मूर्छित करि दियो आज्ञा होइ तो मैं जाउं ॥

हितकारी । यह त्रैलोक्य बिजयी है सावधान युद्ध करियो ॥

भयानक: श्यामंप्रति । श्याम जोलों डीलधराधर प्रभु को प्रदक्षिणा दे प्रणाम करि चलों चहै तोलों चेतामल्ल दिगभिर को शर बचाइ देखो नियरेहीं खड़ो भयो जाइ ॥

चेतामल्ल: । तोको बड़ो बलवान सुन्यो है सो मेरे उरमें एक मुठका लगाउ तो मैं देखौं केतो बल है ॥

दिक्भिरा: पवन को बल तो मेरा तोलो है तोहू को बलवान सुनो है यातें तैंही मेरे उर में मुठका लगाइ ले फेरितो प्रेतपति पासहीं पहुंचैगो ॥

चेतामल्ल: । अरे नयनकुमार को खबरि करै ॥

दिक्भिरा: । सक्रोधं मुष्टिकांप्रहरति चेतामल्ल: घूर्णतन्नाटयति ॥

(पुन:धर्य्यमास्थाय तत्प्रहारंकरोति)

दिक्भिरा: सकंपम् ।श्याबास बीर श्याबास आछो बल है तेरो ॥

चेतामल्ल: । धिक्कार मोकों है जोतूं मेरे मूठका तें न नि:प्राण भयो अब तूं प्रहार करि ले फेरि जो बचैगो तो सराहिलेइगो ॥

दिक्भिरा: सक्रोधं सबीम मुष्टिकाभ: प्रहरति ।

(चेतामल्ल:मूर्छांनाटयति)

दिक्भिरा: । सूत मेरो रथ सेनानी हंताके सनमुख करै ॥

(इतिश्यामं बाणैराछादयति)

हितकारी । पद ॥ तबकहुभयानककंपितनभूधर ।
बानबचाइघालकरिघूमत कहुंधुजकहुंभुजकहुंशिरऊपर ॥
बीसहुभुजसींगहननपावत सोनितमयतनकियोकीभर ।
कपिकल्यानबिभुनाथहोइअब रोषितखलअनलास्वलियोकर ॥

दिक्शिरा: । ध्यामूं भजिभजि बच्यो है जो या बान ते बाचे तौ तोको बीर कहौं ॥

(इतिशरं निक्षिपति श्यामःमूर्छां नाटयति)
ततो वलोक्य डीलधराधरः धावति
दिक्शिराः बाणधारामुंचति ॥

आकाशे । गद्य ॥ दोनो बरिबंड दोर दंड धरि कोदंड करि मंडलाकार परम प्रचंड कालदंड सम बानन सों मारतंड मंडल मढ़िमही नवखण्ड पूरत हैं देखोदेखो डीलधराधर तो या शर सों दिगशिर को मूर्छित करिदियो ॥

(दिक्शिरा: उत्थाय शक्ति मातोल्य सातिक्रोधं)

डीलधराधर । सावधानहोउ यह ब्रह्मदत्तशक्तिसों तुमको धराडीलधर करत हौं ॥ इतिमुंचति ।

आकाशे । आश्चर्य है आश्चर्य है यह परम अमोघ महा ज्वलत शक्ति चेता मल्ल बीचही में गहि समुद्र में डारि दियो । नारद मेरी दई शक्ति निःफल देखि क्रुद्ध दिक्शिर मरही पर न धावै याते तुम जाइ चेतामल्ल को भोलाइ रण बाहिर ल्याइ बातन लगाइ राखो मैं सूक्षम रूप बनाइ दिगशिर पास जाइ उत्साह बढ़ाइ फेरि शक्ति चलवाइ देउंगो ॥

बहुतभलो । दिक्शिरा: सोत्साहंशक्तिंमुंचति ॥

(डीलधराधरः मुर्छांन्नाटयति)
(दिक्शिरा: रथादुत्तीर्य्य डीलधराधर मुत्थापयति)

सूत:स्वगतं । अरे जौन कैलाश उठायो ताको उठायो नरनुनु नहीं उठै अहो महा आश्चर्य है ॥

चेतामल्ल आगत्य । अरे जौलौं मैं मुनि सों बात करौं तौ लों बड़ो अनर्थ होइ गयो ॥

(इति सातिक्रोधंमुष्टिकयादिक्शिरसोवक्षसि प्रहरात)

सूत:आत्मगतं । छंदनराच । प्रहारवज्ज्रवत्तकीत्विचानलोहितोभई । सोएकमुष्टिकेलगैगिरयोरथैविसंज्ञई ॥ अहोमहाअचर्ज्जोदिग्गशीसतोलि हारिगो । उठाइताहिनाथपाशकोशकांखधारिगो ॥

दिक्शिराः उत्थाय । हांकु हांकु मेरा रथ निर्वानरी उर्वी करि देउं ॥
चेतामल्लः । महाराज जैसे बिष्णु गरुड़ की पीठ चढ़ि दैत्यन को संहार करै हैं तैसे मेरी पीठि चढ़ि आप खल को संहार करिये ॥
(हितकारी तथाकृत्वा धावति)
भयानकः सुगलंप्रति । अरे चेतामल्ल तो दिक्शिरके समीपहींपहुंचगो ॥
सुगलः । देखो देखो हितकारी की हस्तलाघवी आश्चर्य है आश्चर्य है ॥
पद । छनमेंदिगशिरकेधनुधररथ हयसारथिधुजबखतर ।
छत्रचमरसबमुकुटकाटिदिय शतसरसरउरपर ॥
अयखलविकलमुनेकचढाढ़ो जिमिपविहतपरगिरिवर ।
बिश्वनाथजैजैहितकारी बिलसतरनधरिधनुधर ॥
हितकारी । आछो पुरषारथ कियो अब जाउ सेन साजि फेरि आइयो ॥
दिगशिराः सलज्जं निक्रांतः ।
(हितकारीडीलधराधरमुत्थाप्यालिंग्य बाष्पावरुद्धकंठं)
पद । रहैहहमारेप्रानछिपाई । टेक ।
तुअयहदशाजियतमैंकाहि यहअचरजअधिकाई ॥
दैहौंकहाजननिकोउतर जबपुछिहैअकुलाई ।
विश्वनाथहहहहजगकारी बिनकोहोइसहाई ॥
चेतामल्लः सगर्वम् पद । नाथनेकुजोशासनपाऊं ।
नागसुरनरजीतिअमृतलै डीलधराधरज्याऊं ॥
मृत्युपासकोतोरितुरतसब जगतैअभैबनाऊं ।
होइजोबंधुकालउदरहुतो फारिकाढ़िलैआऊं ॥
दिगशिरसोंखलनोरितोरिग्रहि हारहरछिपहिराऊं ।
राक्षसपुरीमिपरिजनरजकरि वारिधबीचबहाऊं ॥
छलकरिबिंधदीनोमोहिंधोखो तिनहुंकहंसमभाऊं ।
विश्वनाथपदसपथकोरिफल समत्रलोंडाहिखाऊं ॥
हितकारी । ये पराक्रमनते तो विश्व को अपकाराई है ॥
वैद्यकपिः । महाराज देवासुर संग्राम में वृहस्पति द्रोनाचल ते औषधी ल्यायदेवन जिवावत रहे हैं सो चौंसठि हजार योजन पर है जो रात्रि भरे में औषधी आवै तो डीलधराधर जीवै ॥

चेतामल्लः । महाराज मोकों आज्ञा दीजिये जौलौं तेज तै लागि मैं सरिसो फूटै है तौलौं लय ऊंगो ॥

हितकारी । जाव अपराजिताकू की खबरि लेत आइयो ॥

(चेतामल्ल स्वयंति निःक्रांतः)

हितकारी । देरवड़ीभई चेतामल्ल न आयो कछू कारण है ॥

(ततःप्रविशतिचेतामल्लः)

वैद्य कपिः । प्रभो यह तो शैलही लै आयो औषधि पौन परसि सकल कपि दल जियो डीलधराधर औषधि सुंघाये जिये अहो महाअमोघा शक्ति हुती ॥

डीलधराधरः । कहां कहां दिगम्बिर रण प्रचारि मारों ॥

हितकारीगाढ़मालिंगति । डीलधराधरः पादयो पतति ॥

(हितकारीसखेहंचेतामल्लमालिंग्य)

पद । तुममममबंधुप्राणकेदाता । टेक ।

कहादेउंतोहिजगमेंविरच्यो यहउपकारअमोलबिधाता ॥

चेतामल्लः । जोमोपरप्रभुकृपाभांतियहि दुर्लभकहामोहिंसुखत्राता ।

बिश्वनाथजेहिचहहुदेहुयवे होंतुमहींत्रिभुवनकेत्राता ॥

हितकारी । चेतामल्ल विलंब तुमको काहेते लगी ॥

चेतामल्लः । इहां ते जाइ अचल उटाइ आवत आड़िवे आये अमरन सों समर जय पाय अपराजिता ऊपर आयो तहाँ हहहह जगकारी होम करत हुते तिन कोनो विघ्न मानि बाण मारयो मैं हा हित-कारी कहि महि परयो तव धाइ पास आइ अति पछिताइ बहुत विलाप करनलगे तव जोनिज आइयाही अद्रितें औषधी लै जिआय दियो तब मैं इहां की खबरि सुनाइ या कह्यो बान लगे मोमे पराक्रम तैसोनहीं है तब उनकह्यो मेर बानमें चढ़ि छनहींमें जाय तब मैं बड़ो रूपधरि शैल समेत चढ़यो जबउन श्रवण लगि खैंचयो तब मैं उतरि गर्व त्यागि विनयकरी आप हितकारी के तो भाई हैं या कौन बड़ो आश्चर्य है अबमैं आपकी कृपैसों छन में पहुंचौंगो याकहि सबको कुशल लहि प्रभु पद पदुम परस्यो आया ॥

(बानराःनपथ्यमवलोक्यकोलाहलमाभीनयन्तोकौतिपलायन्ते)

भयानकः । अरे भगो मति दिगंभिर यह बिभीका खड़ी करी है ॥

हितकारी । श्याम जाय दल को स्थापन करे ॥

भयानकांश्रित ।

दो० । लगेबलाहकजासुकटि लहतकाछनीसोभ ।

कहहुभयानककौनयह करतकपिनदलछोभ ॥

भयानकः । यह दिगंभिर ते छोटो मेरो बेटो भाई घटकान है आप के बाणतें पीड़ित डेराय दिगंभिर याकों बड़े यत्नतें जगवायो है सो यह ताके पास जाइ है ॥

हितकारी । याको पराक्रमहू तो अपूर्वई होइगो ॥

भयानकः । छंद ॥ नन्दनवनअपसरनखाइ लियवासव गजचढ़िधाये ।

यहिहेरावलरहैखेंचि उर हन्योंरुधि महिआये ॥

जगिभगिपिपियितविनयकियविधिसोतिनहसतिहुंनबोलाये ।

विश्वनाथ दिय श्राप याहि यह जगहि न बिना जगाये ॥

फिर दिगंबर के अस्तुति किये या कह्यो वर्ष में द्वै रोज जागे ॥

(ततः प्रविशति घटकर्णः । बानराः दृष्ट्वापलायन्ते)

(चेतालाक्षुलगतो भुजभूषणःअजमुत्यबोधैः)

कवित्त । बलकिबलकानिजबाहुनकेबलबड़े कहुँयु । इतआयेबीरता बढ़ाइकै । संगकुलकानिसबबैननिबिसारिदीन्हे दशएककमासकहा चले ही पराइकै ॥ धीरजको धारि मारिगिरिनिगिरावो याहि भाजि कवलों जोहौमुख दारनदेखाइकै । जीतिजगविजयबारोयमहै अनूप यारो मरे मोदभारीमारतण्डभेदिजाइकै ॥ १ ॥

खिल्लाबानराः । कवित्त ॥ कैधों दिगधीसकाल रैनजायजीतिल्यायो सोईहिरनाक्षधायेरासितसहाइकै । कैधौंबंदीखानेजाइकालहोकों खोलिदीन्हो धायेआवैभक्षनकोबदनबढ़ाइकै ॥ कैधौंनिजगर्वजानि बलिजूलोयचिल्यायो बाढ़िधायेबावनयेवीररंग छाइकै । कैधों सोई पूजाकरिरुद्रकोरिभाइलीन्हो नैईप्रलय इतआयेयलकरलाइकै ॥ २ ॥

भुजभूषणयासोंसिरिवीतिभिभांतिभाईकोह्रिदिसैहै ॥

भुजभूषणः । एक तो समर फिरि हितकारीकि पृथी शरीर छनभंगुरई

है यातें हम सब को सनमुख ह्वै पराक्रम करिबोई उचित है नातरु हितकारी वानरन्हि में पतंगई होय है फिरि पछितवई हाथ रहि जायगो ॥

श्वेतामल्लः । अरे डरो कहा है आवो आवो मेरे पीछे तो चलो ॥

(इतिमुखल्य एकौघं तदग्रतो धावति)

हितकारी । देखो सुगल याके वपु में परवत पुंज कैसे परै हैं जैसे परवत पर बोरे ॥

सुगलः । मरकटन लिपटे तन कैसो शोभित होइ है जैसे रोम रोम ब्रह्मांडन कलित महा विराट ॥

भयानकः । बिलोकिये मरकटनको कैसे झारि देइ है जैसे मत मातंग महावतन को औ मुख भरि भरि कपि भालु भारी भटन कैसे भखै है जैसे दीर्घ दावाग्नि द्रुमन ॥

श्वेतामल्लः घटकर्णंप्रति । खबर दार होय यह गिरि मेरो फेंको आवै है ॥ (इतिनिक्षिपति)

भयानकः । श्याबास श्वेतामल्ल श्याबास जाको बज्र न बाधा कियो सो घटकान तेरे प्रहार तें भूमि में जानु भरि आइ रुधिर बमन करि दियो ॥

घटकर्णः उत्थाय बिहस्य । श्याबास श्वेता मल्ल या मुठका सहै ॥ इतिप्रहरति । श्वेतामल्लः मूर्छांनाटयति ॥

(भअभूषणः एकौघंमुष्टिकयाप्रहरति)

सुगलः । देखो देखो घटकान तो भूमि कै एकही मुठिका ते भुजगपगाऊ कों भूमि भेंटाय सकल कपिकुल कलेवई सो किये लेइ है ॥

इतिर [illegible] । अरे नीच कहा तुच्छ कपिन को पुच्छ पकरि पकरि चरण कचरि कचरि बिचरि बिचरि रन बीच शोणित कीच करै है मेरेसन्मुख आवै ॥

घटकर्णः विहस्य । श्याबास बीर श्याबास ऐसोमोमों कोई नहींकह्यो ॥ इति शूलंनिक्षिपति । (कौश सैन्य हाहाध्वनिः)

श्या. म: पद । अचरजश्वेतामल्लकियो । टेक ।

महाशूलघटकानपवारो तेहिगहिकरिद्वै टूकदियो ॥

अहयहखलमलयाचलकेरी शृंगकढ़ैये जनकोलियो ।
विश्वनाथविधिकहाकरैधौं तकिमेरीअतिडरतहियो ॥

घटकर्णः प्रहरति । (सुगलः मूर्च्छांनाटयति)

कच्छराजः । हाय हाय सुगल को कांख दाबि घट लिये जाय है ॥

डीलधराधरः । पद ॥ चेत मल्ल आतुअतिभावत ।
थापतफिरतभटनधरिभूधर रन त्सा घडबढ़ावत ॥
आस्बिरहमनहुंसगरमधि दघनधरनिधरिधावत ।
विश्वनाथसोंसभैसैनको अभयैआसुबनावत ॥ १ ॥

चेतामल्लः आत्मगतम् । जो मैं युद्ध करि घटकान तें सुगल कों छोड़ाइ ले आऊं तो स्वामी अयश को पताका कहाऊं जब अगि तें तब हितकारी के कृपा ते पराक्रम के छुटिहो आवैगो ॥

(ततः प्रविशति सुगलः)

हितकारी सहर्ष मालिंग्य । मित्र कैसे छुटि आये ॥

सुगलः । राजन नगरी की अटारिन नारिन ते परिसित दधि अक्षत सुमनादि शीतलता तें मेरी मूर्छा जागी तब छोटो रूप करि कांख तें निकरि निज पगन ते पांजर पकरि रदन तें नाक काटि करन ते करन छांटि नट नाटन करि उछलि आप पग पर यो ॥

हितकारी । श्याबास मित्र श्याबास बड़ो विक्रम कियो ॥

(ततः प्रविशति सातिक्रोधं घटकर्णः)

हितकारी । अब तो अधिक भयानक देखा परे है ॥

सुगलः । महाराज या केतन को मुख में भरि लेइ है केते नाककान की राह भजे हैं तिनहूं को गहि अंग में अंगराग करि लेइ है केतेन को पाद प्रहारई ते मही मिलाय देइ है यह खल कपिकुल को कुपित कालई सो है ॥

डीलधराधरः सक्रोधमुपद्रुत्य । अरे तुच्छ ये विचारे वानरन को कहा मारे है मो वीर आव । इति शरान् मुंचति ॥

घटकर्णः । तुम्हारे वानन मों मैं संतुष्ट हो तुम बड़े वीर हो पै या समय मो हितकारिही के युद्ध की बांछा है ॥

डीलधराधरः सानुजिनिहं सम् । जेहि काय मरकत कूट कांति

धारी कर शर धनु धारी भयानक तिलक कारी हितकारी वह हरे हैं ॥

(षट्कर्णः उपसृत्य शैलं निःक्षिपति)

भुजभूषणः । देखो देखो हितकारी शर शरन तें शैल धूरि ह्वै गयो अब शत्रु को शरीर मक्खी कैसो होइ गयो ॥

षट्कर्णः दोहा । घातिनेयरासभनहीं नमैंइन्द्रसुतकोश ।
हैं।षट्कानमहाबली जोहडरदारिनदिगीश ॥

इति धावति ।

हितकारी शरक्षुकत्वा । देखो जिन बानन तें तालन कोछेद्यो रासभ को इन्द्रसुत को मारनो तें याके शरीर में पीड़ा नहीं करै हैं सांवर्ड विश्व में सदा बलवान है ॥

इति सक्रोधं शरं मुञ्चति ॥

युगलः । देखो ससैल दक्षिन कर याको हितकारी काटि डारनो तातें महा परवताकार ह्वै हजार योधा दबि मरे ॥

भुजभूषणः । काका देखो देखो बामहूं कर काटि डारनो ॥

(षट्कर्णः मुखं प्रसार्य धावति)

आकाशे । देखो देखो हितकारी शरने काट्यो याको शिर हर कि हिम गिरि चपायो अब धर गरे भरत खंड की धौं कहा दशा होन चहै है ॥ (भयानकः)

भजन । हितकारी लक्षपाइपवनसुत अतिअचरजयाहिसमयकियो ।
हेमहु डोलनपेलिलुसंपं पवनभ्रमनमहंफोंकिदियो ॥
भरतखंडकोशिरोभोजन होतबिनाअबचाहलियो ।
विश्वनाशयाहिसनमधारी सुन्योनदेख्योविश्वजियो ॥

(नेपथ्ये रोदनशब्दः)

तत प्रविशति त्रिमुंड मनवान्तकदुरान्तकात्युतराति पार्श्वदीर्घदेहाः ॥

(मनवान्तकः अश्वं संचाल्य शस्त्रं न प्रहरति)

युगलः । अरे यह दुर्गाधिर सुवन आपनी अवतारहूं ते तरल हय चलाय कपि भालन भाला तें ऐसो भेदै है जातें न युद्ध करि सकैं न भय सों भाजि ही सकैं पुन भुजभूषण तुमहूं तो देखो ॥

भुजभूषण: उपकुल्य । अरे नीच ये तुच्छ बारन की कहा मीच करै है मेरे उर में प्रहार करै देखो तो कैसो तेरो भाला है ॥
अत्युदर: सुरान्तकंप्रति । अरे अमोघ भालो याकपिके उर लगि टूट गयो औ अम्बहू याही थापर को भयो ॥
त्रिमुंड: । अरे देखो देखो मानवांतक के मुष्टिका प्रहार तें बिकल भुजभूषण रुधिर उगिलि फेरि मुठका बांधो धौं कहा होइ ॥
अत्युदर: । अरे याको तो कपि अंतई करि दियो चलो तीनों मिलि याहि मारैं ॥ इति गजं प्रेरयति ॥
(त्रिमुंड: रथंचालयति सुरांतक: परिघ मुद्यम्यधावति)
श्वेतामल्ल: । श्याम देखो भुजभूषण को पराक्रम तीनों अतिरथिन के प्रहारन कों निवारन करि अत्युदर के बारन को बिदारन कियो पै अकेले हैं हमहूं शिरितरु धारन करि खल बिकारारन महारन में मारिये ॥ इत्युभौ धावत: ॥
श्वेतामल्ल: त्रिमुंडस्य हयान् हत्वा रथं चूर्णयति ॥
त्रिमुंड: खड्गेनप्रहरति ।
सुरान्तक आत्मगतम् । अहो बड़ो बलवान बली मुख है करते कृपाण छीन त्रिमुंड कों अमुंडकियो ॥ इतिसक्रोधंधावति ॥
श्याम: अरे नीच मेरी ओर आव ॥

(अत्युदर: मुष्टिकया प्रहरति)

अतिकार्श्व: स्वगतं । अहो श्याम नखन तें नर सिंहई इव याको उदर बिदारि डारयो ये बड़े बलवान तीनों है ॥
इति मुगलंप्रति धावति । वृषभकपि:मध्ये गृह्णाति ॥
(अतिपार्श्व: । गदयाप्रहरति । वृषभ:मुर्च्छांनाटयति)
सुगल: भयानकंप्रति । देखो तो याको पराक्रम जौलों मूर्छित करि अतिपार्श्व मेरे पास आवै तौलों याही की गदा लेवाही को शिर फेरि डारों ॥
श्याम वृषभ भुजभूषण श्वेतामल्ला: हितकारिणमुपसृत्य प्रणमति)
सुगल हितकारिणौ । श्याबास श्याबास ॥

(ततो दीर्घदेहः रथं चालयति)

बानरः। सम्मुखं धावंति हितकारी । याही बड़े बलवान बि लोको परे है एकही एक बान तें हनुमान गिराय दियो बिकल सकल कपिदल ऐसो भाषन भाजो आवै है घटकानहीं तो नहीं है प्रान धरि यान चढ़ि आयो यह कौन है ॥

भयानकः पद । सुरअपसर तियहपैदा दिगशिरकोहैपूत ।
अभैकियेभुजबलत्रयहयपुर जीतिकालपुरहूत ॥
हैधरमज्ञकृतज्ञमत्ययुत बिद्यापढ़ीअभंग ।
ज्ञानवानविष्णुनाथकहे यहकरतरहतसतसंग ॥

यो बड़ो धनुर्द्धर है बड़ो अकम्पन वारो है याहै तो छन में संहार करै याते बेगहीं ततबीर करिये ॥

दीर्घदेहः सैन्यमुपलक्ष्य। जिन बानन बासव बारन कुंभ बिदारनकियो ते बानरन के ऊपर संधानत शरम आवै है य. सैनमें जो कोई बड़ो बली होइ सो निकरि आवै ॥

(डीलधराधरः धनुर्विस्फार्य उपद्रुत्य तत्पुरतस्तिष्ठति)

दीर्घदेहः । अरे हितकारी बड़ो निर्दय है काल समजो मैं ताके आगे बाल खड़ो करि दियो है अब तुम धनुष बान धरि जाव मैं तुमको प्रान दान दियो ॥

डीलधराधरः । अरे मैं ऐसो बालक हौं जैसे बामन ॥

(उभौपरस्परं निक्षिप्य युद्धं नाटयति)

भयानकः सुगलंप्रति ।

गद्य । देखो तो क्षुर क्षुरप्र नालीक नाराच वत्सदंत दंदबक्त्र नतपर्व बाराहकर्णी कर्णी विकर्णी बैतस्तिक अर्द्धचंद्र भल्ल बाण बृन्दन तें आकाश अनवकाश ह्वै गयो ॥

दोहा । पटपटशब्द्पताकको चापचटचटाशेर ।
घंघटचक्रनघहर रथ्योएकह्वैवेर ॥ १ ॥

देखो याके मण्डलाकार उद्दंड कोदण्ड ते कालदाढ़ सम बाणबृन्द व्योम मढ़तई देखेपरै हैं ॥

सुगलः । देखोतो डीलधराधर की हस्त लाघवी तेहि घरन समूहन

को निज धरणा तीन तीन टूकनी देखावै है याको दीर्घ देह धर जाल ते ऐसे छावै है की अंतराल हू ते नहीं पेखो परै ॥

भयानकः । देखो दीर्घ देह धरन काटि कैसे कढ़ि आयो जैसे निहार ते सूर्य सो अब आचमन लै दिव्यास्त्रन को प्रयोग कियो चहै है ॥

आकाशे । हाय हाय महा प्रलय देखाय है वायु तुम जाय वेगि डीलधराधर के कान लगि कहौ याको बध बिधि ब्रह्मास्त्र हो ते विरचनो है बिलंब किये बड़े बड़े अस्त्रन ते ब्रह्माण्ड बरो जाय है ॥

डीलधराधरः दीर्घदेहस्य शिरः सत्वरञ्छिनत्ति ।

वानराः सहर्षं जयजयेत्युच्चन्ति ॥

(नेपथ्ये रोदन शब्दः)

पुनस्तत्रैव । आप शोक तजि सबको समुझाइये मैं मुहूर्तहू में मारि आवो हौं ॥

आकाशे । हवन करि घन ध्वनि अदृश्य भयो अबधौं कहा करै ॥

सुगलः । यह महा अंधकार होइ गयो अस्त्र शस्त्र को बर्षा चारनौ ओर ते होय है अहो कहा है ॥

भयानकः । यह घन धुनि की माया है ॥

डीलधराधरः सक्रोधं । यह खल छल करि बानन सों बानरन को बध कियो याते मैं अपने अस्त्रन सों सकुल निश्चर संहार करो हौं ॥

हितकारी । याको ब्रह्मा को बर है याते तुमहूं हमारी नाई मूर्छित ह्वै मान मर्याद मानो जो कछु कारन होइगो सो पीछे करैंगे ॥

(इतिसानुजः मूर्छामाटयति)

घनध्वनिः । अरे राक्षसो जिनके भय तें पितु भीत रह्यो चलोतिनको बिनाश सुन हू हर्ष पुन करौं ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

आकाशे । हाय हाय अबकैसे बचैंगे ॥

भयानकः उल्कांप्रज्वाल्य सेनामवलोकयते ।

(चेतामल्लः भयानकस्य समीपं गत्वा उत्थाय)

भाई भयानक कहौ कहो कौन कौन बचे ॥

भयानकः । चलो देखैं

(इत्युभौ परिक्रम्य चिरंजीवि ऋच्छं विकलं दृष्ट्वा)

भयानकः । ऋच्छराज तुम्हारो हाल कहा है ॥

ऋच्छराजः । घायन तें अति विकल तुम्है बोलहीते चीन्होहीं कहै चेत मल्लजियै है ॥

भयानकः । चेतामल्लहीके पूंछिवे में कहा कारन ॥

ऋच्छराजः । जोचेत मल्ल जीवत होइगो तो सब जीवतई है ॥

चेतामल्लःपादयोपतित्वा । आज्ञा होइ ॥

ऋच्छराजः । तात जाइ औषधि गिरि ल्याइ सबन जियावो ॥

चेतामल्लः प्रणम्यनिःक्रांतः ।

नेपथ्य । अहो राक्षस पुरी आकस्मात डगमगातभई कहाउतपात है ॥

(ततः प्रविशति धवलगिरिपाणि चेतामल्लः)

सुगलः । अहो औषधि पौन परसत हमारी सब सैन उठि खड़ीभई राक्षस नहीं जिये यो बड़ो आश्चर्यहै ॥

भयानकः । दिगंबिर मृतक राक्षसन के शरीर समुद्र में डराइदेइहै ॥

सुगलः । याकुभट निपट कपटकारि कुलि कपि सुभटन कटक काटि पुहुमि पाटिगयो भुजभूषण तुम भारी कपि भालुन लैभूरिभूरहनवारि वारिविभावरीचरनभौनभस्म करिदेउ ॥ भुजभूषणास्तथेति निःक्रांतः ॥

(नेपथ्ये कोलाहलः)

छंद । करालकोश कोपिकैलुटल्याइल्याइकै । दईलगाइ आगि चारि ओरधाइधाइकै ॥ सुवर्णऐनव्योमलौंसबैमहाबरैंढरैं । नबाटभाजि जानजातजानहायकाकरैं ॥

प्रविश्यसंभ्रांतचारकपिः । महाराज दिगंबिर शासन पाय लै विकट कटक घटकान सुत घटनिघट धाइ आइ भटित शरन चलाय बढ़े बानर न हटाय दियो निज भटनबीर रस बढ़ाय भुजभूषण कट कटाय उदभट कूरन कूटिघटही सो जाय भिर सो बीर बानन सों बली बानरन व्यथित करि भुजभूषण भालका खाल काटि डारी येबाम करसों सो उठायो नैन मूंदिवो बचायेयुद्धकरैहै वह छन छन मूर्छित करैहै ॥

सोद्वेगंसुगलः । चिरंजीवी चिरंजीवी ऋच्छ बानरन लै धावो धावो
भुज भूषण की सहाय करि शठहिसमर सोवावो ॥

(श्रुत्वा तथेति निःक्रांता:)

सुगलः । अरे अब युद्धको सब खबरि-कहि जाय ॥

चारः । महाराज बड़ो युद्ध भयो जामें बानरन राक्षसन को बड़ो संहार भयो ॥

(सुगलः ततस्ततः)

चारः । तीन राक्षस बड़े बलवान बड़ो युद्ध कियो तामें एक कों भुजभूषण मारनो द्वैको पकरि चले तिनको आश्विनेय दोनों भाई बीचही बड़ोयुद्ध करिमारनो ॥

(सुगलः ततस्ततः)

चारः । क्रुद्ध होइ घट रथ चलाय सब को बानन सों बिकल कियो ॥

प्रविश्य ससंभ्रमं द्वितीय चारः । महाराज जो सेना आप पठाई सो भुजभूषन पास नहीं पहुंचन पाई घट बानन सों बीचहीं आड़ि अचल बनाई ॥

सुगलः स्वगतं । अरेबड़ो बलवान है ॥ इतिसत्वरंनिःक्रांतः ॥

नेपथ्य । अरे घठ तैं धनुर्द्धर आपने काका की बरोबर है देह बल बाप कैसो है धौं नहीं, अरे कोष शरीर शक्तिहू समुझाये देउं हौं ॥

(पुनश्चटचटाशब्दः)

प्रविश्य चारः । सुगल प्रभु समीप तें सिधारि घट को प्रचारि मल्ल युद्ध धारि ताको सागर में पवारि दियो सो ओदोही धोती धाय धरनि कंपाय सुगल शिर मुठका लगाइ निज भटन उत्साह बढ़ाइ महा गरज्यो सुगल सम्हारि रद अधर धरि एकही मुठका प्रहारि घट शिर घटहो सो विघरित करि केहरि नादकियो ताको निधन निरखि निघट धायो त्रेतामल्ल बीचहीं हुंकारनो सो परिघ मारनो सो टूटि टूक बिपुल बिपुल उलका बेष धारनो ॥

(हितकारी ततस्ततः)

चारः छप्पय । कुपित नीच बलवान कपिहि गहि पुरदिशि दौरनो ।
त्रेतामल्ल बिहस्सि मारि मुठका कर छोरनो ॥

पुनि गहि पांइ पछारि कूदि तेहि हृदय मझारी ।
तोरयो शीश भवांइ फेंकि दिगशिरहि अगारी ॥
पुनि पटकि लंगूरहि हरषिभट कटाटकइरव अति कियो ।
सबशैलनसरित समुद्रयुत डगमग महितल करि दियो ॥

(ततः प्रविशंतिसुगलादयः सर्वेवानराः)

सहर्षंहितकारी । ये राक्षस सुरासुरन के जीतन लायक नहीं रहे तुम आश्चर्य कियो ॥

सुगल: । यह आप की कृपा है हम केहि लायक हैं ॥

नेपथ्ये । बाप को बयर लेन कह्यो हुतो सो कब लेउगे ॥

(प्रविश्य ग्राहनयनःतोटकछंद)

वहराक्षसकोमयपूतकहौं । हितकारिहमोंइतयुद्धचहौं ॥
करिइन्दसंग्रःमहिवैरसबै । हनिगलहिलेउंनिवारिअबै ॥

(हितकारीवक्तुः रुकीशल्य पुरोधस्थल्य)

छंदसंखनारी । रहैनोचठाढ़ो । सहैबानगाढ़ो ॥
कहागालमारे । पितापैसिधारे ॥

(ग्राहनयनः शराञ्चिक्षिपति)

सुगल: । देखो भयानक हितकारी को अरु ग्राहनयन को कैसो युद्ध होइ है मानो द्वै मार्तंड आपनी किरिनन सों लरैं हैं ॥

भयानकः । हितकारी सम युद्ध करि याको खेलावै हैं ॥

सुगल: । सांच कही देखो शरसों शरासन सूत अश्व स्यन्दन बिन करि दियो ॥

ग्राहनयनः शूलमुद्धाम्य । मोपितु बधकारी हितकारी यह शंभु दई शूल सों नहीं बचो हौ ॥ इति निःक्षिपति ॥

आकाशे । हा हा शब्दः ॥

(हितकारी शरैः छिनत्ति)

सुगल: । श्याबास महाराज श्याबास याको बड़ो गरब रह्यो है आपु सहजही में शिर काटि लियो ॥

नेपथ्ये । हे इन्द्र मदहारी पुत्र या हितकारी धनुधारी बड़ो शत्रु है सो अब जैसे मरै तैसें शीघ्रही मारो नहीं तो सेना नाश कै देइगो ॥

सुनैं पच्यौ। पिता मोको पिता मह्यं ऐसो कहि मंत्र दियो हुतो की निकुंभिला में जप किये निरविघ्न समाप्त ह्वै है तो तैं सबते अजै ह्वै हैं सो सिद्धि करि जीते लेउ हों॥

प्रविश्यसबाष्यकंठभेतानकः। महाराज घनध्वनि पश्चिम द्वार ह्वै महिजा को लये निकसो तेहि मैं बहुत समझायो न मान्यो जौलों मैं छीनबे को निकट जाउं तौलों तरवारि चलायही दई वृथा युद्ध श्रम जानि आप को खबरि जनावनि आयो॥ इतिरोदिति।

(हितकारी विकलतांनाटयति)

भयानकः। महाराज वेगि सावधान हूजिये अवसर शोक को नहीं है जातें सब विकल ह्वै विघ्न करन न आवैं यह विचारि घनध्वनि माया महिजा मारि निकुंभिला में जप करन गये। है यह मैं निहचै खबरि पाई है मंत्र सिद्ध भये काहू को मारो न मरैगो, तातें डोलधराधर भुज भूषण चेता मल्ल को सैन संग मेरे साथ भेजिये॥

हितकारी। दुसह दुख दहन दहत देह मेरी, पर तेरी बानी सुधा वृष्टि सी करी, डोलधराधर तुम्हारो कल्यान होइ जाव॥

डोलधराधरः। भयानक आजु प्रभु पास ते हों जाउहों देखो मेरे सन्मुख खल कैसी बरदानी माया करै है॥

(इति हितकारिणं परिक्रम्यप्रणम्यचनिःक्रांतः)

हितकारीनिश्वस्य। सुगल बार बड़ी भई कछु खबरि न पाई धौं कहा भयो होइ॥

(ततःप्रविशतिचारः)

चारः। महाराज डोलधराधर बड़ो युद्ध कियो तहां घनध्वनि एक आश्चर्य काम कियो॥

हितकारी। किंकिम्॥

चारः। डोलधराधर शरन तें सारथि सैंधव स्यन्दन सिलाह काटिगये झटित शरपटित ऐसो आकाश कियो की जौलों शरांधकार खुलै तौलों पुर जाइ रथ सवार आइगयो॥

(ततः प्रविशति डोलधराधरः)

सुगलः। देखो महाराज चेतामल्ल भुजभूषण के पानि गहे घायन तें

व्यथित डीलधराधर चले आवै हैं मुखश्री तें जानि परै है की मारि आये ॥ डीलधराधरः पादयोः पतति ।

(हितकारी मस्तक आघ्रायालिंग्य)

वैद्यकर्षि प्रति । विशल्यकरणी औषधी जे संचि राखी हैं तिनतें सब को वेगि विशल्य करौ ॥ स तथाकरोति ।

हितकारी भयानकंप्रति । युद्धको कछु विशेष वृतांत कहिजाउ ॥

भयानकः । प्रभु पासतें चपल चलि हम चहूंघा निकुंभिला घेरे चुपानि जो निशाचर चमू तापै अचलन ढलाइ सचल बनाइ दई घनध्वनि विचलत चरचि जप तजि सजि कोपकरि चाप धरि चटकनि करि आये दोऊ कटक भट दोऊ धनुर्द्धर उदभट तीनि दिन प्रस्वेद पोंछन सावकाश न पायो डीलधराधर घनध्वनि को भुवन भयकारी रनभयो ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

महावीरदोऊमहायुद्धरोखे । हनेअर्बखर्बैनराचानिचोखे ॥
हमैदेखिमेघारिशूलैपवारयो । द्रुतैयेतहाँतीरसोकाटिडारयो ॥
हौंहूं हाथभारीगदाधारिधायो । सबैबाजिताकेछनैमारिआयो ॥
सोलैदापचारोदिशाबानछाये । महाअस्त्रकेतेअमोघैचलाये ॥

दोहा । डीलधराधरआशुसब अस्त्रसमितकरदीन ।
महाकोपकरिबानवर तेहिवधहितकरलीन ॥ १ ॥

कह्यो जो हितकारी सत्यवक्ता होइ तौ या शर याको सिर छीन लेइ ॥

छंद चौपैया ।

फिरताहिपचारीसोशरमारीशीससकुण्डलछीनलियो ।
जैजैसुरकीनेभवसुखभीनोनिशिचरहाहाकारकियो ॥
कहिमैःयुधजैतोलख्योनतैसोऐसेहुरनहमसबहिबचे ।
चखसुखजलबरषेकपिसबहरषेघूमिघूमिलंगूरनचे ॥ १ ॥

फेरि आप के पास आये ॥

हितकारी । तुमसब मघवारिको नहींमारो महिजाहीको लैआये ॥

(नेपथ्ये महारोदनध्वनि)

पद । जीवतभानबानसोवेध्यो अबहुंप्रानसोवेधिगयो । टेक ।

मेरोउरकुलिशहुनहिंछेद्यो तेरेदुखसोंछेदभयो ॥
यद्यपिप्रातबिजयरथचढ़िमैं बखतरपहिरअभेदमहै ।
अच्छयकसिनिखंगद्रुतजंगहि जितिहौंपैसुखकछुनअहै ॥
प्रविश्यराक्षसाः । दिगद्विर को आज्ञा है तुम अकेले हितकारही सो युद्ध करिकै मारि आवो जो हितकारी रासभारि साँचे होइ तो अकेलहीं कढ़ि हमसों युद्ध करैं ॥

(धनुः सज्जीकृत्य हितकारी धावति)

श्वेतमल्लः । भुजभूषण देखो तो हितकारी के मण्डलाकार चापतें चारोओर कैसे शर कढ़ै हैं जैसे चरखी तें अनलके फुहारे सनमुख धाइधाइ सेना कैसी नाश होतजाइहै जैसें वाड़वबन्हि में बारिधिबारि॥
भुजभूषणः । श्वेतामल्ल देखोदेखो अस्त्र छोड़ि स्वामी बड़ो कौतुककियो ये निश्चर परस्पर परपेखि आपुसिही में लरि मरि गये ॥

(जयजयेति सर्वे हितकारिणं पूजयन्ति)

सुगलः । महाराज अपूर्ब यह अस्त्र कौन है ॥
हितकारी । यह गंधर्वास्त्र मोकों कोहरे को आवै है ॥
नेपथ्ये कवित्त । लीन्है धनुबानभुजबीशदिगशीषजात को।पितगिरीश मानोनाशकोकढ़तहै । चाकनदचकचेपजचकि लचकिलागेकोठपीठ मानोंकालदण्डनेगढ़तहै ॥ कोलडाढ़कोल छोनीजातसीफिरनलागी जागी आगि धूमकढ़िअंबरमढ़तहै ।दैत्य अकुलाने देव सकलसकाने भीतिदहभानभाने भाननाकनाचढ़त है ॥ १ ॥
सवैया । जृम्भिगयेमनकेगजहैं दशकुंजरदिग्गनकेअबलैहै । सेतबंधोयह देखतहींनिजरीसहुताशनैंसिंधुसुखैहै॥होतयहैनिहचैअबहीं बिनहींनर बन्दरविखवनैहै ॥ दासतादैदिगदेबनकोंहमको सबकोदिगदेवकहैहै ॥

(ततःप्रविशतिसरौन्योदिक्शिराः)

आकाशे कवित्त।देखोदेखोदेखिदिगशीशकोअसंख्यसैनकोशनकोसैन अतिचैनअधिकातहै । तालतनलोल लूमजहरैंविशालललालबिलसोबदनफलोजालजलजातहै ॥ रोमराजिभाईसोईसैबूलसघनताईहहहही डोठिकोपरागसरसातहै । रसकोउमंगअंबुकितकैबिहंगबोलजोहनख दंतदोहमीननकोब्रतहै ॥ १ ॥

रोलाछन्द। महामोदकोंउमंगअंगभारिहुंसमातिनहि ।
उछलिउछलिअङ्गपिलेपादपपहारगहि ॥
जनुतकिप्रभुमुखचन्दवीररसबारिधिभाये ।
सहितसैनदिगभीमबेलथलवीरनधाये ॥
देखोदेखोराचमनहूंको ॥
छन्दनराच । लियेसोवानबिज्जुचापचापदेववर्ज्जसो ।
लसेसुभट्टतर्ज्जितर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जसो ॥
पिलेसग्रामकेउछाहपौनसोरमंडिकै ।
अनंदकेअनंतमेहज्योंचलैंधुमंडिकै ॥

(सबहोआइंदिक्षिरा:)

सूतंप्रति । करु मेरो रथ आगे ॥
सुगल: । भुजभूषण देखो तो यह दिगधिर हमारी सैना में कैसे परो जैसे सूखे बन आगि ॥

(इतिधावंति)

हितकारी । देखो डीलधराधर हमारो मित्र महा बिशाल ताजतरु लिये दंडकर कराल कालईसो देखो परैहै ॥
डीलधराधर: भयानकंप्रति । कहो ये तीन राक्षस कौनहैं जे बानरन बिचलाइ सुगल भुज भूषण सों भिरे आइ ॥
भयानक: । येकुम्भपाच दीर्घोदर दीर्घपार्श्वहैं ॥
डीलधराधर: । देखोदेखो इ को तो बड़ो युद्ध करि सुगल मारयो एककों भुजभूषन बड़े क्रोध सों मारयो बड़ो आश्चर्य कियो ये भट सुरासुरन जीतन वारे रहे हैं ॥
सुगल: । उच्चै: स्वरेण सेनांप्रति ॥ धावो धावो भटो दिगधिर हितकारीपैं जाइहै ॥ बानराधावन्ति ।
डीलधराधर: । अरे यहतो राक्षशास्त्र सों सिगरी बानरी सैना जारि दई उड़त खाक देखो परैहै ॥

(इतिसक्रोधंधावति)

दिकधिरा:सूतंप्रति । मैं बानकाटत जावहौं तैइनकों बामदै मोकों हितकारी सों जोरिदे ॥ सतथाकरोति ।

आकाशेगङ्गा । दिगशिर धनुधारी हितकारी डीलधराधर शर परंपरा भरानभधरा पारावार विकल करा कारागार सोहु गयोबीसभुज भुजन ते जेते शर चलावैहै तिनते चौगुन हित कारी है भुजहीति चलावै हैं बड़ो आश्चर्य है इनौं कों इनते तीछन तीरन लेत रोंदा में देत खैंचि हनि देत कोई नहीं देखै ॥

छन्दनराच । चलेअनंतबानव्योमफोंकनोकसोंगसी ।
शरीरलोंटुट्टूनकेसुदंडपांतिशीलसी ॥
कछूसंघट्टिबानवृन्दवन्हिआपुजारहीं ।
कुकर्मिज्योंकुकर्मकैकुलैकोंनाशिडारहीं ॥

डीलधराधर: । अरे मेरो अनादर करि हितकारीसों जुरेआइ ताको फल देत हैं ॥ इति शरान्निःक्षिपति ॥

(दिक्शिरा: सज्ञामूर्छांनाटयति)

भयानक: । याको ऐसोकोऊ कबहूं नहींकियो श्याबास तुमको है ॥

उत्थाय सक्रोधं दिक्शिरा: । आ: पाप तूं अब प्रशंसा करन कों नहीं रहै ॥

(इति अमोघांशक्तिं निक्षिपति)

कपिसैन्ये हाहाशब्द: ।

आकाशे । देखो देखो डीलधराधर की भक्त वत्सलता भयानककों पीछे करि आपु सनमुख ह्वै उर सांगि सही ॥

(उरोनिःसृतांशक्तिंडीलधराधरःमूर्छांन्नाटयति)

हितकारी । त्रेतामल्ल तुम सब शक्ति निकारो हो युद्धकरो हौ ॥

आकाशे । देखो त्रेतामल्ल भुजभूषन आदि भटन को निकारो शक्ति न निकारी सो हितकारी दिगशिर के शर सहत बामकर ते गहि निकारी आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

सुगलः भयानकंप्रति ।

भजन । अद्भुतरूपआजुहितकारी । टेक ।
क्रोधअरुनदुखजलपरिपूरन ऐसेहुदृगमोहहिंसुरनारी ॥
कालसरिसतकिप्रभुतनदिगशिरशरनिफवावतरुधिरफुहारे ।
विश्वनाथप्रभुलखिउत्साहित हंसिसुरअस्तुतिवचनउचारे ॥

चेतामल्ल: भुजभूषणंप्रति । देखो तो आजु हितकारी के बान
आकाशकोपियेले लेइहैं जे अस्त्र दिग्गशिर चलावे है तिनको हितकारी
कैसे समित करै है जैसे शीतन को शंकानिको समीचीन वक्ता ॥

छन्दतरंगिनी । खलखैंचिदसकोदंड । लियमूंदिनभशरचंड ॥
जनुविरचिविवियब्रह्मण्ड । विधिबंधमोरद्दंड ॥ १ ॥

भुजभूषण: । देखो देखो ॥

छन्द । प्रभुकोटिसरमुमक्यात । निजशरक्रियेनभसात ॥
सोउनाशिप्रभुशरदीन । शिरशिव्वताकियपीन ॥

हितकारी । अरे मैं सहजहीं शर सों बंधु बदलो लेउंहो ॥
(इति निःक्षिपति) (**दिक्शिरा: सहतोमूर्च्छां नाटयति**)

(**वानरीसेना जयजयेतिकथति**)

सूत: आत्मगतं । हौं आपनो धर्म राखौं ॥

(**इति रथं परावर्त्य निःक्रांत:**)

हितकारी । चेतामल्ल बेगि औषधि ल्याइ डीलधराधर को हर-
पित करो ॥ सतथाकरोति ॥

नेपथ्ये ॥ अरे यह कहा कियो । महाराज मैं आपनो धर्म राख्यो है ।
अरे मूढ़ या शत्रु शरन ते पूजिबे लायक है याको समर परम सुख-
दायक है हांकु हांकु मेरो रथ ॥

(**तत: प्रविशति ससैन्यो दिक्शिरा:**)

(**वानरा: गिरिवृक्षानगृहीत्वा धावंति**)

आकाशे । देखो देखो ॥

अन्तर्ध्वनि: । जहंतुररिपुतहंकोपिले रंगिकोशरनरंग ।
मारुमारुभनिभटभिरे अंगगिरतसुजंग ॥
अंगगिरतसुजंगगगरब हमंगगगनतन ।
ठट्टट्टुहेंहुंसुभट्टट्टिकतकुभट्टट्टरतन ॥
रथ्थथिथ्थुरतसमथ्थथ्थपरनरथ्थथ्थुरिरर ।
मज्जज्जजहिनिमज्जज्जोगिनिभयज्जज्जहुंउर १ ॥
जमजङ्गजगयहतसनकहि करैकालिकाकूक ।
लगीश्रगालीभषनपल कोककरिकारिमूक ॥

कौकक्करिक्करिमुक्क थुक्कुरिअतंकक्कियहरि ।
लक्खक्खलदलअक्खक्खयचतनक्खक्खरलरि ॥
क्कुद्दुदुमरितुयुद्दुरनिविरुद्दुदुरिअंग ।
भज्जज्जमसमगज्जज्जहंतहंसज्जज्जसजग ॥ ७ ॥

कुंडलिया । करनैजयनिजउछलिकपि लरहिंमनहुं नृपपक्षि ।
कोउसहाइनहिंचहत हैं निशिचर गनतनलक्षि ॥
निशिचरगनतनलक्षिभक्षिकपिअंतदखावै ।
गज्जिगज्जिकरनरज्जितज्जिनभभयउपजावै ॥
कपिहुभालुखलदलनदलतप्रभुजयजयवरनै ।
कोहुशिरलेतउपारिकोहू चरनैकोहुकरनै ॥ १ ॥

(दिक्शिराः सक्रोधं शरान्मुंचति)

आकाशे । आश्चर्यहैआश्चर्य देखो देखो वानरनकी बीरता काहूकोशिर कटिगयो है धरही धायो जाइ है हितकारी के काज में मानो आपहू कटनजाइ है काहूकोधर सर समूहनतेपरमानु परमानु ह्वै उड़िगये शिर दिगशिर रथ मैं परयो मानो धर को बैरई लेनगयो ॥

कवित्त । शरनसमूहनसोंकाहूको चरम गयो रहिगयोमासपिंडश्रोनितसो पूरो है । सनमुखबानबृन्दसहतसो दौरोजाइ पीठि मासनोचिनोचिखातगीधकूरो है ॥ गहिगहि आंतकाकखैंचतवकतसोई काटि नखधावै कहिखलनाहिं दूरोहै । काटिजातपाइकर शीस दिगशी-सैओर ढरिढरि जातबीरकरोहै सूरोहै ॥ १ ॥

(प्रविश्य रथादवतीर्य पुष्कलसूतः)

सूतः । महाराज या रथ सुरपति पठायो है अरु यह कह्यो है कि यामें चढ़ि दिगशिर को मारि मोहूंको बड़ाई देइं ॥

(हितकारी परिक्रम्य रथमारोहति)

सुगलः । भयानक देखो देखो तमीचर तमहारी रथारूढ़ हितकारी प्रभाकर पेखि पेखि कपिन दृग अरबिंद अति प्रफुल्लित भये हैं ॥

भयानकः । सुगल देखो देखो सूत प्रेरित हितकारी दिगशिर के रथ दौरि प्रभंजन प्रेरित प्रलय पयोदई से दूरि गये हैं अरु दुहुन के धुजा फहरि मिलि है सरभसे समर करैं हैं ॥

सुगल: । देखो हितकारी अश्वनि आभातें अरुन रण अवनी हरित बरन बिलसै है अब देखो दुहुनके रथ मण्डल करत आलात चक्रई से ह्वै गये दोऊवोर मण्डलाकार कारमुकन तें कैवर कदम्ब कैसे बढ़े हैं जैसें कंदरन तें टीड़ी ॥

आकाशे । देखो देखो दिगशिर यह असुरास्त्र छोंडनो ताते तोमर मोगर शक्ति शूल शर असि आदि आयुध सैन पर बरषे है । देखो हितकारी एकही बाण तें निवृत्त कियो फिरि देखो ॥

छंद । अतिक्रुद्धह्वैदिगशीश । धरिधनुषशरकरिबीश ॥
किर्यविकलसकलकपीश । गहिगिरिनधायेकीश ॥ १ ॥

देखो दिगशिर देह लागि टूक टूक ह्वै गिरि कैसे गिरे हैं जैसे गगन तें मास लोभित गृद्धगन देखो दिगशिर शरनते कटे कपिनके शिर कैसे गिरे हैं जैसें तालतरुनतें फल देखो हितकारी क्रुद्ध ह्वै शरनसों छाय लियो दिगशिर कैसे कढ़ि आयो जैसे निबिड़ बारिद बीच ते विवस्वान ॥

दिक्शिरा: शूलिदत्त शूलमुद्यम्य । हितकारी नहीं बचौ हौ ॥
इतिनि:क्षिपति ।

(हितकारी शक्रशल्या निवारति)

ऋच्छराज: । देखो भयानक दोऊ भट भयानक युद्ध करि रहे हैं ऐसो मैं कबहूं नहीं देख्यो ॥

छन्द । नहिं रोदनजोरतजोहिपरैं । दुहुंओरनिबानसमूहभरैं ॥
भटसारथिबाजिनलोमनते । ध्वजस्यंदनचक्रकिधौंमनते ॥
निकसैंनसिराइघनेसरसैं । दसदिग्गहिआशुकिधौंबरसैं ॥
सबचित्रलिखीसमसैनभई । अबआशुकहाबिरचैधौंदई ॥

आकाशे । हितकारी अरु दिगशिर के बानन ते अब भाजिबे की बाट नहीं है हाय हाय नाहकहीं मरे अब की बार जो बचि जाय तो नियराइ न निरखैं ॥

पुन: । देखो देखो शंक न करो हितकारी रोस करि दिगशिर के शिर भुज काटि शरन तें गिरन नहीं देइ है ते आकाश में कैसे शोभित होइ हैं मानौं शठ की सहाइ को बहुत राहु केतु आये हैं ॥

सूत: । याके हृदय में अमृत कुण्ड है ताते शिर भुज जामत जाय है सो ब्रह्मास्त्र तें सोखि लीजिये ॥

(हितकारी तथाकरोति)

सुगल: स्वगतं । अब एक शिर द्वै भुज रहि गये तौ अधिक युद्ध करन लग्यो बड़ो आश्चर्य है ॥

दोहा । यकशिरछोड़तव्योमपथ लक्षकरततेंहिंसाथ ।
काटतकोटिनसंगकरि कोटिनकोशनमाथ ॥

छन्द । दोउबीरकरैंजहँयुद्धनहीं । नहिंदेखिपरैंअसठौरकहीं ॥
बहुभांतिनअस्त्रनादिग्गवरैं । गुनियेछनमैंसबलोकजरैं ॥

आकाशे दो० । हरिसमहरिहरिभक्तसम हरिभक्तहितिहुंकाल ।
तिमिर्याहिरनसमरनयही भयोनहोवनवाल ॥

चेतामल्ल: सुगलंप्रति । देखो सूत को शिर हितकारी छीनि लियो दिग्शिरपाइ अंगूठासों बागले त्योहीं युद्धकरै है श्याबास श्याबास ॥

डीलधराधर: । देखो देखो हितकारी महा अमोघ बान कर कियो ॥

हितकारी । अरे नोच अब नहींबचैहै ॥ इतिशराग्निः क्षिपति: ॥

(धरो दिक्शिर: उरोभित्वा पुनस्तूणीरेप्रविशति)

आकाशे भजन । देखोदेखोश्रवनश्रवनलगि शिवगनयेकछुबरनैं ।
केसुरछितकैसुपतिकियेभ्रम छुवतिमीचुमहिंकरनैं ॥
याहीनैदिग्शिरअंगफरकत असहमनिजमनगुनिये ।
विश्वनाथजयनिहचैभयअब कोशनजयजयसुनिये ॥ १ ॥

तत: पुष्पवृष्टि: ।

चेतामल्ल: भुजभूषणं प्रति ।

पद । समरभूमिसोहतहितकारी ।
जयश्रीसहितपानिसरफेरत अभिरेधनुषसुछबिअतिभारी ॥
कहुंकहुंसोनितविंदुविराजत सुभगसरीसजगतदुखहारी ।
विश्वनाथजनुहरितअवनिमें इन्द्रबधूबिचरैसुखकारी ॥

(तत: प्रविशंति वदन्त्य: क्षमोदय्योद्यानार्य्य:)

हितकारी । डीलधराधर तुम सबको समुझाइ राक्षसपुरी को लै जाउ भयानक को तिलक करि आवो ॥

(तथेति निःक्रांतः)

हितकारी । चेतामल्ल तुम जाइ महिजा की खबरि लै आवो ॥

चेतामल्लः । बहुत भली ॥ इतिनिःक्रांतः ।

सुगलः । महाराज दिगशिर के जूझे आजु सब लोक अभय भये या आपुही के मारिबे लायक रहयो है ॥

हितकारी । तुम सो मित्र जाके होइ ताको सब सुगमै है ॥

(ततः प्रविशति चेतामल्लः प्रणम्यसबाष्पकंठं)

भजन । बूड़तशोकसमुद्रमेंमहिजा ममप्रुखसुधिसमतीरलही ।
पुनिसुखसागरमाहमगनह्वै धरिकनआयोकछुकहकही ॥
पुनिकहतेरेबोल मोलकहंकोनिछुवस्तुनअहहिकहौ ।
विश्वनाथमैंकयोसदहिमैंतुम्हरी केवलकृपाहिचहौं ॥ १ ॥
महराज महिजा को आपु के चरण देखिबे को अब अति उत कंठा है ॥

हितकारी । जाव भयानक सों पूंछि डीलधराधर के संग लेवाइ लै आवो ॥ तथेतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये । फरक फरक ॥ इतिकोलाहलः ॥

ततःप्रविशंति डीलधराधरभयानकचेतामल्लः शिविकारूढ़ा महिजाच ॥

(दर्शनलालसा वानरास्त्वयंति)

हितकारी । भुजभूषण महिजा सों कहो माता पुत्रन सों परदा नहीं करै है प्यादहीं आवै ॥

(महिजातथाकृत्वाहितकारिणंप्रणमति)

हितकारी । मपथव्याजेन प्रज्वलिताग्नि मीहिजानिः साश्र्यमिलति ।

आकाशे । पद । यह दोउ मिलनि लखहु किन भाई ।
किधो चहत दूजो जल निधि जनु सुखआसुन झरिलाई ॥
पुलक कदंब कदंब कुसुमतन बचन संकत गरआई ।
विश्वनाथ प्रभुसम बिधुनार्याहि अब अरधंग बनाई ॥ १ ॥

सुगलः । आजु हमारो सब को सब श्रम सफल भयोमहिजा हितकारी को एक सिंहासन बैठे देख कृत कृत्य भये ॥

(प्रविश्य सर्वेसुरास्तुवन्ति)

हितकारीसहचाद्यंप्रति । सुधा बरसि हमारे बानरन जियावो ॥

तथाकरोति ।

(बानरा:सर्वेसमुत्थाय सहर्षं जयजयेत्युच्चारयन्ति)

देवाः । अब आपको जब तिलक ह्वै है तब आय नैन सफल करिहैं ॥

(इतिनिःक्रांता:) (हितकारीसवाच्यकंठं)

भजन । द्वै दिन रहे अवधि के बाकी पुरपहुचन नहिंजात निहारी ।
बिन पहुंचे डहडह जगकारी तन तजि है अब यह दुखभारी ॥

भयानक: । रखिहौंअसबिमानप्रभुआगे आजुहिसदलतहां पहुंचावै ।
विश्वनायहोहूंसंगचलिहौं लखिहौंराजतिलकमनभावै ॥

(ततः प्रविशतिपुष्पकं)

भयानकः । महाराज यह विमान हजूर में हाज़िर है ॥

(सनयासहतदारुह्य)

हितकारी । श्रेतामल्ल मोकों याज्ञवल्क्य शिष्य के ह्यां कुछु दिरंग
लगैगी तुम आगे ते खबरि जनावो ॥

तथेतिनिःक्रान्तः ।

विमानंसंचाल्य सर्वे निःक्रांताः इतिषष्टमोंकः ॥ ६ ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराज विश्वनाथ
सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्दन नाम नाटके षष्ठमाङ्कः ॥

अथ सप्तमोङ्कः प्रारम्भः ॥

प्रविश्यडहडहजगकारी । कोई है ॥

नेपथ्ये । आज्ञापायतु ॥

डहडहजगकारी । गुरु सों बिनय करै कृपा करि पाव धारि मम
अयन पवित्र करैं ॥

ततःप्रविशतिजगद्योनिजःडहडहजगकारीप्रणम्यसंपूज्यच।
अब हितकारी के आवन की अवधि काल्हिही है खबरि बहुत

दूरि भरि नहीं मिले अवधि टरे मेरे प्राण नहीं रहैंगे सो आप को राज सौपों हौं आप यां कुल के सकल काम सवांरत आये हैं सो सम्हार लेइंगे ॥

जगद्योनिजः । आजुकाल्हि सगुन बहुत होय हैं याते हितकारी आवन चहै हैं तुम सोच न करो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

(डहडहजगकारी सशोक मात्मगतं)

पद । मोसमअधमकौनयहिजगमेंबीततअवधिजोप्रानरहै ।
धरिहौंहाथमाथमेरेकब बिरहजातसबअंगदहै ॥
त्यागिहुंतनकेहिलोकजाउंगोजगतमबैसमभारबरै ।
विश्वनाथहितकारीतुमबिनमोकहंकछुनहिंसूझिपरै ॥ १ ॥

(ततः प्रविशतिचेतामल्लः)

चेतामल्लः स्वगतम् । आश्चर्य है आश्चर्य है ऐसो देख्यो न सुन्यो ॥

पद । तनमहंरह्योनपलकछुयांकोपरसिपवनधौंनभउड़िहै ।
सिरजतसेदनआसुनसागर धौंयहिओसरयहिबुड़िहै ॥
स्वासखलायंतधौंकज्वलितअति कैडरआगिहिमजारिहै ।
विश्वनाथसुमिरतहितकारी हितकारीतनधौंधरिहै ॥ १ ॥

अबजो मोकों सुधि कहत छन बिलंब लगै है तो ये सुनन को रहैं धौं न रहैं ॥ (प्रकाशं सर्वंहत्तान्तंकथयति)

डहडहजगकारी नेत्रउन्मील्य । मृत तुल्य जो मैं ताके कानमें अमृत तुल्य बानी जो तैं डारो सो भाई नीके नहीं सुनि परी फेरि कहु फेरि कहु ॥

चेतामल्लः पुनस्तदेवकथयति ।

(डहडहजगकारी समहाहर्षं मिलित्वा सवाचनकंठम्)

पद । तेरेबोलमोलमनमेरेमिलतनकरेकरहुंकहा ।
नहिंकछुसर्वलोकमोहिंदुर्लभमांगिलेहिकपिमनहिचहा ॥

चेतामल्लः । डहडहजगकारीमैंतुम्हारो केवलदायासदाहिचहौं ।
विश्वनाथहितकारीसमतुम होतुहरोसेवकाहिअहौं ॥ १ ॥

डहडहजगकारी । कहो कहो केते बखत आइ हैं ॥

चेतामल्लः । सूर्योदय बेला में ॥

(डहडहजगकारी चारंप्रति)

गद्य । मातन सों खबरि जनाइ डिंभोदर सों कहियो अपराजिता को वीथिन भराइ सुगंध जल सिंचवाइ मोतिन कुम कुमन चौकें पुर- वाइ दधि दूब लाजन छिटवाइ प्रति द्वार कनक कलसन धरवाइ सैन सजवाइ प्रजन लेवाइ गुरु संग भोर होत होत इत आइयो ॥

सतथेतिन:क्रांत: ।

डहडहजगकारी । चेतामल्ल सूर्य्य संध्या में अनुराग को प्राप्त ह्वै समुद्र में क्रीड़ा करै है अब काहे को रात्रि होइगी ॥

चेतामल्ल: पद । नभमेंयेनहिंशशिअरुतारे ।
आवतहितकारीगुनिबासब अरिगजमुक्तामनिनकतारे ॥
पठईनजरफटीखितमोटी छिद्रश्यामताईमधिदेखो ।
बिश्वनाथफैलोचहुंकितघन बिलसतसोईप्रभुकिनपेखो ॥ १ ॥

डहडहजगकारी । कैसो कैसो युद्ध भयो सो कहि तो जाव ॥

(चेतामल्ल: सर्वं विस्तरेण कथयति)

डहडहजगकारी चेतामल्ल कहा रवि सागर में बूड़ि गये ॥

चेतामल्ल: आत्मगतं । प्रेम आश्चर्य्य है आश्चर्य्य है जिन को रजनि अपहू कई कल्प सो लगै है ॥

प्रकाशं दोहा । नाथलखियपरकाशयहनिकसोप्राचीओर ।
कहाउदयगिरिखानिकोलालजालदुतिजोर ॥ १ ॥

नेपथ्ये कोलाहल: ।(चेतामल्ल)

छंद । रथनचक्रघरघरात घंटनग नघनघनात बाजिनपैंजनिय धुनिनझन झनातसुनिये । बहुपताकफरफरातशब्दहोत सरसरातखरखरात सांकरिबहुबारनकरगुनिये ॥ धरधरातधरनीअतिलहलहातसैलस- कलखलभलातसिंधुसातहरिरवउड़ावै । बिश्वनाथहितकारितकन नयनतरफरातहरबरातप्रजनभोरडिंभोदरआवै ॥ १ ॥

नेपथ्ये । (अनेकवाद्यमंगलगानकोलाहल:)

ताते महाराज कुमार यह निस्संदेह दिनकर करन ही को विलास है ॥

तत: प्रविशति सगुरुडिंभोदर: ।

डहडहजगकारी गुरुं संपूज्य । महाराज आप की कृपा ते

हितकारी आवै हैं सो आप ह्यां रहिये मैं आगे ह्वै आऊं ॥

इति शिरसि पादुकेनिधाय सबंधुर्निःक्रान्तः ।

आकाशे पद । आनंदअवधिआजअयनहितकारी आवत ।
बालवृद्धयुवतकनहितहितननेइवधावत ॥
कलसमालयेंबरनारिलसहिंकलमंगलगावत ।
जनप्रतिदशानविश्वनाथकहिपारहिपावत ॥ १ ॥

नेपथ्ये । देखिये उद्दड्जगकारी हितकारी की अवाई भई सूखे तरु हरित होइ आये ॥

उद्दड्जगकारी । प्रान दाता श्वेतामल्ल एक आश्चर्य और देखो परे है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ किं कम ॥

उद्दड्जगकारी । प्राची दिशि में सूर्योदय भयो दाक्षन दिशिउदित निशाकर प्रभाकर प्रकाश जीतत आवै है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ यह पुष्पक विमान है हितकारी आये आये ॥

जगद्योनिजः सहर्षमिष्यं प्रति ।

आये आयें धुनि भुवनमें पूरि रही सो मेरे मनको ऐसे हरषावैहैजैसे मेघध्वनि चातक कों ॥

आकाशे पद । लखिविमानउद्दड्जगकारीप्रेमउमगिअतिछायो । सजलजलजवखपनसलरिसतनसबजगजियनिबनायो ॥अदभुतमिलनिबंधुदोउकोयहप्रजनप्रमोदमहाई।विश्वनाथभरिनयननिनिरखहुवय-नानिबरनिनजाई ॥ १ ॥

देखो देखो सानुज हितकारी मैयन पांय परसन जाय हैं ॥

पद । तकिसुतमैयधाइं धाईं। सांझआइनिरखतनिजबछरनजैसेगाइलेवाईं ॥ करतप्रनामसूंघिपूतनशिरपयसिंचितकारिदीन्हीं । विश्वनाथनृपपदको प्रथमहिंजनुअभिषेकहिकीन्हीं ॥

(प्रविश्यसपरिकरोहितकारीगुरुपादौप्रणमति)

गुरुःआशिषंदत्वा । वत्स हितकारी नीके रहे ॥

हितकारी । महाराज जाकेंपर आपकी कृपा है ताको सर्व काल कुशल है ॥

जगद्योनिज: । वत्स आजु सुघरी है जाइ जटा खोलाइ पसाक करि आवो ॥ हितकारीप्रणम्यसपरिकरोनिःक्रांत: ।

जगद्योनिज: शिष्यंपश्यति ।

सनिःक्रांत: प्रविश्यमंत्रीप्रनमति ॥ गुरु: ॥ तुम कुशलादि देखिन लेवाइ अपराजिता जाय तिलक की ततबीर करो ॥

मंत्रीप्रनम्यनिक्रांता: ।

आकाशे पद । इहइहजगकारीकिंकरसोंवांछितफलसबलीन्हे ।
हितकारीसोंलितदानदुजललकपरसकरकीन्हे ॥
रतनाकरधनदहुकीनहिंशन जसप्रतिकपिनदेवायो ।
विश्वनाथअधरजहियबाढ़तकहुनेधौंयहआयो ॥ १ ॥

नेपथ्ये (अनेक बाद्य मङ्गल गान कोलाहल:)

आकाशे । लेहुलोचनलहुआजुसुरभामिनी रतिहुनिदरतपियहिचहितिमोपरपरहिसकृतहितकारिकीडिठिअभिरामिनी । सुरंगचीरोखिजत लसतसिरपेचमधिजटितमनिबिबिधरंगगथितमुकतावली। सुछबिछहरातिछजतिहंसतिबिघुनाथजनुसरसुतीन्हातिहूललितनखतावली ॥१॥

(प्रविश्यहितकारीगुरुपादौप्रणमति)

गुरु:आशिषंदत्वा । चलो अपराजिता को तुम्हारे तिलक को आजु ही सुदिन है ॥

इतिसर्वेनिःक्रांता: । (तत:प्रविशतिसपरिकरोमंत्री)

गद्य । मारगें सुगंध सलिल सिंचावो केसर कलंबक मारिलेपवावो देवालें अतरनि तर करावो कस्तूरी कपूर चंदन चूर उड़वावो लाजा दधि दूब छिटवावो चौकनि गजमुक्तन चौकें पुरवावो सदीप पुष्प माल पल्लव कनक कलशनि धरवावो कलशन परम विचित्र पताक सजवावो करकुसुम कलिन ललिन ललितअटानि बैठवावो,तोपन भरवावो नौबतन बजवावो अगवानी सजवावो महाराजआवे हैं ॥

(परिचारकास्तथेतिनिःक्रांता:)

प्रविश्यचार: । महाराज ह्वांते चले ॥

ससंभ्रममंत्री बंधुंप्रात । तुम ह्यां की ततबीर करो हों आगू ते लेन जाउं हों ॥

दूतिनिःक्रांतः । (आकाशे)

आकाशे गद्य । महल महल चहल पहल बहल मै गलन गैलगैल को लाहल सैल उसलत चलत अरावन खलभलित भल सिंधु जल उच्छलत हहल हहल भूगोल कोल कल मलित बोल मुखन कढ़त लोल शीश व्याल ईशहू भयो ॥

कवित्त । उसलिउसलिछैछैछज्जनछबीलेअंगकढ़ततुरंगरंगरंगसुखबारेहैं।
लसतललितमदगलितगयंदमद सोंचतगलीनतनमेघहूलेकारेहैं ॥
जूथनिसुगथरथपथ मनमानौरचेतिनमेंबिर।जैधीरबीरअनियारेहैं ।
मंगलकोचारद्वारद्वारमेंअनूपहोतगावैंगीतनारीप्यारीमहामोदधारेहैं१॥

सोरठा । बकसतधननसमूह लेनजातहितकारिकों । देखोयहजनजूह मनहुंकलपतरुचलविपिन ॥ १ ॥

देखो देखो बानर नरबेष धरि पोशाक करि करिन चढ़ि मोद मढ़ि महा मंडे हैं, डहडहजगकारी सारथिकारी डिंभोदर छत्रधारी ढोलधराधर चौंर संचारी रथारूढ़ हितकारी छबि किमि कहैं उचारी छकत नैन निहारी यह हमारी भारी भाग्य को फल है॥

नेपथ्ये । चक्रवर्ती महाराज सलामत अपराजिताधिराज सलामत अशरन शरन सलामत सर्व सस्वामी सलामत बढ़े जाव साहिबा मुलाहिजे सों अदब सों क़ाइदे सों फ़रक फ़रक करक ॥

(प्रविशति सपरिकरो हितकारी)

जगद्योनिजः । सिंहासनस्थौ महिजा हितकारिणौ सबिधि अभिषिंचति ॥

(वैदिकाःपठंति गायकागायंति प्रविश्यद्वारपालः)

कवित्त । गन है गजानन को बिपुल षड़ानन को जल चतुरानन को ठाढ़ो रनबस है।
बहुतधनेशऔजलेशओमहेशकेते कैकैकारकहौंयमजूहजोआयोजस है ॥
दशमहाविद्यन को व्यूह व्योमछितपूरे औरसबशक्तिनसमूहराजैतस है ।
कोटिनब्रह्माण्डनतेभेंटलैलैआयेद्वारइंदुऔदिनेंद्रइंद्रवृन्दकसमस है१॥

हितकारिनेचसंज्ञयाज्ञप्तोद्वारपालःक्रमशः सर्वान्प्रवेशयति ।

(देवाःउपानंदत्वास्तुवंति)

जमक पद । अधनधनदधरधरमपरमप्रभुप्रभुनईशहितहितके ।

मोहनमोहनसनसनमुखकारिरं जनजनसोकितके ॥ अकालकालपतक तरुन तरनिसमसमनपापतमअतिके । भवभवपालनहरहरपितकर विश्वनाथमतिमतिके ॥ १ ॥

इतिनिःक्रांता:। (महिजाअमूल्यहारं)

चेतामल्लश्चकंठेनिःक्षिपति (चेतामल्लःएकैकांमुक्तांदंतैस्फोटयित्वाभूमौनिःक्षिपति)

सुगलः। चेता मल्ल जो हार विलोकत सबही बांछा किये हते सो पाइ मुक्ता फोरि फोरि तुम मही मेलि दिये आखिर जात स्वभाई प्रगट कियो ॥

चेतामल्लः। याहितकारी नामांकित नहीं रह्यो ॥

सुगलः। तुम्हारो शरीर कब नामांकित है ॥

आकाशे। आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

पद। कोकीरतिकाहिसकेप्रेमके धामको। खैंचित्वचाकियप्रगटनिशानी नामको॥ ताकिपीनशकोकर्मठगेकपिईशहैं। विश्वनाथमुनिसाधुकिये तरसीस हैं ॥ १ ॥

ततःप्रविशतिमैत्रावरुणिः। (हितकारीप्रणम्यसंपूज्यच)

शुभ आगमन भयो आपको, आछे रहे ॥

मैत्रावरुणिः। जहां तुमसो राजा है जिन घन ध्वनि को बन्धु कर हताइ त्रैलोक्य अभय करि दियो तहां हमारी सबकी कुशलहै ॥

हितकारी। घनध्वनिहीं को आप गन्यो यामें कहा हेतु है ॥

(मैत्रावरुणिः दिक्शिरोदिक्विजयेघनध्वनेरिन्द्रबन्धन मेवकथयति)

हितकारी। जैसोंकाल शक्र बिष्णु को पराक्रम श्रवणनमें नहीं सुन्यो तैसो चेतामल्ल को पराक्रम नैननि निरख्यो ॥

मैत्रावरुणिः। महाराज यह बालहीको ऐसो है ॥

हितकारी। इनको उत्पत्ति औ चरित्र कहि जाइये औ सुगलादिकनहूं की उत्पत्ति कहिजाइये ॥

(मैत्रावरुणिः)

सर्वंकथयितित्वा। अबमोकों संध्या बन्दन करनो है ॥

(हितकारीप्रणमति)

मैत्रावरुणि: । आशिदर्षत्वानि:क्रांत: ॥

हितकारी । सुगल ये भुजभूषण चेतामल्ल तुम्हारे परम हितकारी हैं इनको प्रानके बरोबर राखियो तुम्हारे बल सों मैं दिग्गिर को मारो तुम्हारे सबके एक एक उपकार को मैं उऋन नहींहौं ॥

इति वस्त्रधनंदत्वासर्वान्नृपान्प्रेषयति ।

(सुगल:वाच्यावरुद्धकंठ चतुरोभ्राटन्
प्रणम्यसर्वेभ्योनि:क्रान्त:)

तत:प्रविशंत्यप्सरसोगन्धर्वाश्च ।

(सर्वेमहिजाहितकारिणौप्रणम्यनृत्यमारभंते)

उहउह्नगकारी । देखिये महाराज पुष्पांजलि लेए सिगरों संकुचित भाव सों गति धरि इष्ट देवता को सुमिरन करि कछु कुसुम महि कछु आप के पगन पहिं कछु दोऊ बगल सभा सदनपैं कछु पीछे वाद्य करन पैं तालही में मेलत भई आश्चर्य है ये वाद्यकारन पैं कैसेझमकि गईं जैसे एकहीं बार चपला चप चमकि जाइ ॥

प्रविश्यचेतामल्ल:प्रणम्य । महाराज मो कों सुगल उकीलत लिये आपके पास टिकवे को पठायो है ॥

हितकारीसस्मितं । आवो आवो भले आये अब तुम्हे चाहि हमैं चैन चौगुनो भयो नृत्य देख्यो ॥

(उर्वशीगतिंगृहीत्वाउपसर्पति)

गन्धर्वागायन्ति । याकेशीलगुवतसोनैनन । सकुचतचलतिमंजुमुखमोरतिउरअतिप्रेमखुलतकछुवैनन ॥ कोनेहुंपतिअपकारगनतिनाहिं पग परिपरिआपुहिसमुझावै । विश्वनाथप्रभुसद्गुन्नलायक यहसुकियाको अनुपमभावै ॥ १ ॥

सुकेशीउपसर्पति गन्धर्वा: । अंगननवलतरुनिमाआई । रह्योनठौर आइनैननपथनिकसनचहतिमनहुलरिकाई ॥ रसशृंगारगीतिकेबैननि कछुकछुसुननलगीश्रुतिलाई । विश्वनाथकरिकैसुघराई नाचतिमुग्धा भावदिखाई ॥ २ ॥

मेनकाउपसर्पतिगंधर्बी: । अबमैंक्योंकरिखेलनजैहौं । काहूकेकरये नसमैहैंकैसेनैनमुदैहौं ॥ भयोकहाबाढ़गोतनसै.रभ छिपेहुंसखिनबोलावै । विश्वनाथअज्ञातयोबना कीयहकलादेखावै ॥ ३ ॥

रंभाउपसर्पतिगंधर्बी: । अबटरअंचलमूंदनलागी । करिसिंगारआरसोनिहारति तजिख्यालनयोबनरसपागी ॥ निरखतनिजअंगअंगलोनाई आपुहिंरीझिजातिमुमक्याई । विश्वनाथयहनृत्यकरतिहै ज्ञातयौबनाचरितदेखाई ॥ ४ ॥

मंजुघोषाउपसर्पतिगंधर्बी: । यहतोभ्भकतितकिपरछाहीं । समुझायहुंसमुझतिनहिंकेहूं मुरिबैठतिक रिनाहीं ॥ चलुघरकहतरूदति नहिंजैहौं कहिकहिपानिडोलावै । विश्वनाथयहप्रगटकरतिहै ललितनवोढ़ाभावै ॥ ५ ॥

तिलोत्तमाउपसर्पतिगंधर्बी: । बैरिनिभईनिगोड़ीलाज । उरअकुतईनलखनदेतिपियपीरपरैयहिउपरगाज ॥ योंकहिफेरतिअंगुरिअपोलन घूंघुटकरिचलिभावैआज । मुरिचितवतियाकोमध्यापन लखिये विश्वनाथमहराज ॥ ६ ॥

घृताचीउपसर्पतिगंधर्बी: । ससिमुखलैलैकमललगावति । लीलहि प्यारेकेश्रुतिमूंदति लालसिखाकीधुनिहिछपावत। तनमुगंधनिजस्वसवायुते प्रातहोतकोयवनदबावति । विश्वनाथजोसबनिशिबिहरी प्रौढ़ाकीयहकलनिलखावति ॥ ७ ॥

कलकंठीउपसर्पतिगंधर्बी: । आलसलखहुंआपकेगात । मोहिंदुखयहैसौंहभाईकी औरनहींकछुबात ॥ निजतनकर्महिंबचाइकरियजोइतोइमोहूंकोभावै । विश्वनाथकरिनचतिचातुरी प्रगटतिधीराभावै ८॥

आनंदलतिकाउपसर्पतिगंधर्बी: । बोलिबोलायकहोंसो लायक। जेहिगुनबसीबसीहियरेतुव तितहिंजावहुमनायक ॥ येगुनभरेरहोततताके ढिग बैठबउचितन होई । नाचतिभावअधीराकेविश्वनाथलोजियेजोई९॥

मदनमंजरीउपसर्पतिगंधर्बी: । गईयहआजुसौतिकेसाथ । चोरमिहीचनिखेलिआंखितेहिमूंदिलईपियहाथ ॥ यककरसोंयाकोकुचपरस्योअपनीप्रीतिजनाई। नाचतिजेष्ठकनिष्ठाभावहिविश्वनाथदरसाई॥१०॥

अनंगसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्बी: । लजततकिकायकोटिसतकाम ।

मोकोंलाखकहैकिनश्राई हैइनहोंमोंकाम ॥ भारपरकुलकानिजाइ अ-
बलहिहौंतुखउरलाय। विश्वनाथयहथरकिरहीहैऊढ़ाभावदेखाय॥११॥

चंचलाचीउपसर्पतिगंधर्बी: । चलावतिदूरश्याहमेंमाई सुठिसु-
न्दरकुलवन्तबैससम बमेंापरोसबिहाई ॥ मेरेउरयहशोचबड़ोअलिको
उनकहतसमुभाई विश्वनाथयहभावअनूढ़ा प्रगटतिनाचतिभाई १२ ॥

चन्द्रमुखीउपसर्पतिगंधर्बी: । लेनजलपठयोबरनतमाई । बिछलि
गिरीइनआनिउठायो भलेतहूंइतआई ॥ नातरुकहत और कोऔरै
यहपुरलोगचवाई । विश्वनाथयहनाचिरहीहैगुप्ताभावबताई ॥ १३ ॥

शशिप्रभाउपसर्पतिगंधर्बी: । सुनलखिछोरिबाछरुआई । द्वारेबे-
लिबतायोकरमें निरखिननदियाधाई ॥ भीतरभौननिशंकलालसंग
करीआपनीभाई। विश्वनाथयहक्रियाबिदग्धाभावकरतछबिछाई १४॥

चन्द्रकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । तेरेमिलनहेतहोंआई । अबनोरैनअं-
धेरीछाईराखीबातलगाई ॥ पठैदेहिनिजपियपहुंचावनमेरोहियोडेराई।
विश्वनाथयहबचनबिदग्धा नचतिभावदरसाई ॥ १५ ॥

चंचलाउपसर्पतिगंधर्बी: । करनसुखश्राटनारिसखिजानै। यहरस
जान्योमैंश्रीबिजुरी जोबहुघनसंगठानै ॥ अबकहुकाकोंत्रसहुंसहरसब
लियनिजबसहिबसाई । विश्वनाथयहनाचतिहरषित कुलटाकलनि
लखाई ॥ १६ ॥

शशिकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । जननिकहपूजिभवानीआवै । यहि
अहीरसंगअबहींगमनै बनडरमननहिंल्यावै ॥ सोसुनि अंगसमाति न
फूली चलीथारकरलीन्हे । विश्वनाथयहनाचतिमुदिता केगुनप्रगटै
कीन्हे ॥ १७ ॥

कलावतीउपसर्पतिगंधर्बी: । तनसुवासिनिजमंघिसूंघितै कहा
आजसकुचाती। होंजानीमेबातसखीयह मज्जनहूंनहिंजाती ॥ सुनि
मुसक्याइनचाइनैनदिय ताहूनैननवाई । विश्वनाथयहनाचिलचिता
भावरहे दरसाई ॥ १८ ॥

विलासवतीउपसर्पतिगंधर्बी: । करिपरदेशश्यारिहूलैसंग कोउपर-
देशीआयो। मूनोअपनभराइआपनो रुचिरकपाटलगायो। सोसुनिलत

उसासबालनिज नैननिबारिबहावै। विश्वनाथअनुशयनाभावहिनाचत प्रगटदेखावै ॥ १९ ॥

चंद्रलेखाउपसर्पतिगंधर्वी: । छिगुनीछुवतबिछौनेपरछल छंदअनेककरै । कहुंमुसक्यातितनतिकहुंभौंहैं कहुंतकिभयहिंभरै ॥ कहुंरिसिकरतिमिलनकहुं नाहति बहुतसराहिहरै। विश्वनाथलखियेनाचतियह गणिकाभावधरै ॥ २० ॥

कुन्ददन्तिकाउपसर्पतिगंधर्वी: । तोममऔरहितूकोहोवै। सच्चोहमासहितजेतोदुख जातबदननहिंगोवै ॥ तनकंटकछदस्वेदहिबूड़ी अजहुंस्वास अधिकाई । विश्वनाथ यहनचति देखावति अन्य सुरति दुखिताई ॥ २१ ॥

नवमल्लिकाउपसर्पतिगंधर्वी: । ठाढ़ेबलैयायेलेतपियनेबोलैनसजनी। अबैनमेरीकह्योकरति हैरहैगीदोउकरमीजि फिरितैंबीतिगयेरजनी ॥ जाकोलखिबेकौंललकतितीसोई हहाआगेखातउठुमिलुउढ़ीसमुझनी।विश्वनाथयहनचतिमानिनीकेभावनदरसाइबांकीभ्रुकुटिकोररिझनी २२॥

कनकसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्वी: । पिकममप्राणगणअपनोदोउ अलियेकैकरिराखे ॥ कहाकरैगीसिखनिसबैअब नहींहोतकछुमाखे। करत रहैबैठीघरहीमेंरिसजारैनिजछाती । बिश्वनाथयहप्रेमगर्बिता नचत प्रेमरंगराती ॥ २३ ॥

अनुरागिणीउपसर्पतिगंधर्वी: । चलिमुसक्यातलखतिपरछाहीं। अंगुरीसोंनेहिहरषिलखातिपियगलकरनिजबाहीं ॥सांचकहौंऐसीकहुंदूजी नरसुरनारिनमाहीं । विश्वनाथयहनचतिदेखावतिरूपगर्बिताकाहीं ॥ २४ ॥

रत्नकलाउपसर्पतिगंधर्वी: । सखिमैंपतिदेवताकोशासनकोनीभांतिनसऊं । गुणनेअगुणनाकजिय आयोनिशिदिन कलनहिंपाऊं ॥ बिरचनीविधिनहिंबियगुनभाजन कोहिकोहकाहपढ़ाऊं । नाचतिगुनगर्बिताकेभावन यहविश्वनाथअगाऊं २५ ॥

काममंजरीउपसर्पतिगंधर्वी: । तकतहरिअंगनमेंपिअरोपरिआई। चूरोगिरोमूंदरीचूरोकरपहिराई ॥ याकोस्वासलपटअनुजरिमैनभघनकारे। बिश्वनाथयहनचतिबिरहिनीभावहिधारे ॥ २६ ॥

रूपमंजरीउपसर्पतिगंधर्वी: । कापैंपरमप्रीतितुवलाल । हियतें उमगिनैननोइलखियतु छलकछोटकछुछाजतिभाल ॥ कज्जलमिसि कलंककहँधारनो मुखसशिसमहिवनायो । विश्वनाथयहभावखंडिता नाचतमाइदिखायो ॥ २० ॥

विचलेखाउपसर्पतिगंधर्वी: । मोंजिमेंजिकरक्योंपछिताई । जब प्यारोआपहिआयोहोंबहुविधिससुभाई ॥ तबतोएकबात नहिंमानी करीअपनीभाई । विश्वनाथयहनाचतिकलहंतरिताभावबताई ॥ २८ ॥

प्रभावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । सजिसिंगारपीतममिलिबेहितआजुस- खीघनकुंजगई । मिल्योनसोअशिउदैजानिरविदुखितभीतहँभजतभई ॥ ज्यौंत्यौंकरिपहुंचीतुआहिगलौं होतवहीजोलिखतदई । विश्वनाथयह विप्रलब्धकी कलनिनचतिअंत मदनछई ॥ २९ ॥

पद्मावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । यामिनीयामबितीतभईरी । पीत मनहिंआयेघनआये येकारिहैंमहिअंबुमईरी । आवतविलमघरिकजो लागत तितहिमिलनगमनैंमोमानै । विश्वनाथयहनाचतभावतपर- गटउत्काभावहिठानै ॥ ३० ॥

कलहंसीउपसर्पतिगंधर्वी: । आजुकहासजिसकलसिंगारनरचति सेजनिजहाथै । पुनिपुनितकतिपंथहियरेमें नहिंसमातसुखगाथै ॥ छनमैंकढ़तिछनहिगृहआवति लखियतुअतिअकुताई । विश्वनाथय- हबासकशय्या नाचतभावजनाई ॥ ३१ ॥

चम्पकप्रभाउपसर्पतिगंधर्वी: । निशिदिननिरखतरुखढिगभावै । स- खियांकाजकरन नहिं पावैं आप करत सुखपावै ॥ पियहियनैनटरतसेव- काई सौतिनमुखपियराई । विश्वनाथस्वाधीनपियतमा नाचतिअति छविछाई ॥ ३२ ॥

लीलावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । पियमिलिवेहितनिरखिआरसी हर- षितसकलसिंगारसंवारी । करिकैमंदमसालमयंकहिगमनीमुखमयंक उजियारी ॥ तेहिछनजिजगयंदगतिनिन्दतिपीयमिलिनकीअतिअतु- राई । विश्वनाथयहनाचतबिलसतअभिसारिकाभावदरसाई ॥ ३३ ॥

अनंगसेनाउपसर्पतिगंधर्वी: । चलतपीउबालजानिगदगदगरथकित बानिकछुनहिंतहंकहतबन्योहियेशोकभोनो । भीतरघरजाइनिजेज-

नमकुंहलीलखाइ अतिहोंबिलखायपीयअगेधरिदीनो ॥ साहसकरि कछोरीनमोहिंयुभाइकरोगोन जोतिबिदलिखीजोनआयभूटसांचो । लखियविश्वनाथनाथरीभिबूझआयहाय प्रेयसीप्रवेहिस्थितेकेभावकलित नाथी ॥ ३४ ॥

रसालमंजरीउपस्थितिगंधर्वी: । छनआंगनछनचढ़तिअटारी छन कढ़िकेबाहरमगजोहति रोंकतिनैननिश्वतिलबारी ॥ टूटतिबन्दफटति अंगियाउरनहिंअमातआनन्दअतिभारी । विश्वनाथयहरचतिनबेली आगतपतिकाभावहिधारी ॥ ३५ ॥

हितकारी । इन को मन काम ते अधिक इनाम देवाइदेउ ॥

ततःसप्रमोदंअगाध्यसाधुरसोगंधर्वी निःक्रांतः ॥

(प्रविश्यगुरुखड देशीयोनर्तकः)

प्रगाध्यन्त्यतिगायतिच । एकिंगंहितकारीमाईडियरवेरी । लिवरे लएण्डबरेववीरटिरी ॥ गुडइसप्रेडमाइसिनटापलाड । गुडआलटैम विश्नुनाथआफगाड ॥ १ ॥

अर्थ । एकिंग बादशाहों का बादशाह हितकारी भगवान माई हमार डियर पियारा वेरी बहुत परस्पर प्यारा लिवरि दातों का दाता एण्ड और बरेव सूर वीरों का सरदार वीरटिरी सुर तरु दोनों जहान का गुड इसप्रेड अच्छा बकसने वाला माइसिन हमारे तकसीर टापलाड सरदारों का सरदार गुडआलटैम अच्छा एकरस सब समै विश्नुनाथ आफगाड विश्वनाथ का ईश्वर ॥ १ ॥

हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥

गुरुखड:प्रगाध्यनि:क्रांत: । प्रविश्यअर्बदेशीय: ॥

प्रगाध्यन्त्यतिगायतिच । हाजलाहितकारीनूरनूरलूअलाहू कुलबुल बरीदवोदफहमुलजुकाहू ॥ उंजुरबिलकलबिकुल्लअनसुहीते । फहुवा विश्वनाथअकदमतलबबसीते ॥ १ ॥

अर्थ । हालजाहितकारी यह भगवान नूरनूरलूअलाहू प्रकाशी बड़े उंचे प्रकाश के हैं कुलबुलबरीदनगीच हैं गरदन मे वोदफहमुलजुकाहू औ दूरि हैं ज्ञान औ बुद्धि मे उंजुर बिलकलबि देखु दिलकी दृष्टि कुल्लसैयनमुहीते सब वस्तु में पूर्ण है फहुवा येई विश्वनाथ अकद

मतलबबसीते बिश्वनाथ मतलब की गाठैं खोलने वाले हैं ॥ १ ॥

हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥

(अर्धदेशियःप्रग्राम्यानिःक्रांतः)

प्रविश्यतुष्करदेशियः प्रसद्धब्लतिगायतिच । कुलचातिंगरीहित-
तकारी फुलू । फकरंचीमोजकंचटलू ॥ दीजरिवतिंगरीसुकुरफुली ।
फुनविश्वनाथजूकजूनछली ॥ १ ॥

अर्थ । कुलचातिंगरी एक ईश्वर हितकारी भगवानफूलूहै फकरंची
सब का मालिक मोजउसबिनाकांचटलू सब बे काम दीज भीतर
तिंगरी भगवान सुकुरप्रकाशमान है फुली देखो दिलकी आंखि से
फुन पाया विश्वनाथ ने जूकउसको जून मेहरबानगीउलीउसीकेसे ॥ १ ॥

हितकारी । इनकोइनामदेवाइदेउ ॥ तुरकदेशीयप्रग्राम्यानिःक्रांतः ॥

प्रविश्यमरुदेशीयाबारबधूटी ॥

प्रसद्धब्लतिगायतिच । म्हाथारेहिगापूगीछेम्हारोराज । थांकोता
घनेठेवायादुखियाकिम्होछेराजणकोसिरताज ॥ इट्टाको सुजसम्हारे
देशगाइयाछेगुनियासमाज । विश्वनाथथांयुगयुगजीवीपूजेछेम्हारे
काज ॥ १ ॥

हितकारी । मन बांछित इनाम देवाइ देउ ॥ नर्तकीनिःक्रांता ॥

हितकारी । उद्दउद्दजगकारी तुम राज्य की ततबीरकरो । डोलधरा-
धर तुम कोष की ततबीर करो । डिंभोदर तुम सेन की ततबीर
करो । हौं गृह बाग बिहार करन जावहौं ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वे । (ततःप्रविशतःस्वधुनीब्रह्मकुण्डजे)

स्वधुनी । हे ब्रह्मकुण्डजे तुम उदासी ऐसी काहे हो ॥

ब्रह्मकुण्डजा । एकादश सहस बरिस पुहुमि संचरित अब अपराजिता
पुरी प्रजन कीटपतंग उधारि हितकारी परम पुरुष हरि परम प्रकाशी
रूप कारि परम धाम बिश्राम करन लगेहौं अकेले नहीं खुली हौं ॥

स्वधुनी । सखि हितकारी प्रगट ते अप्रगट होइगये हैं तिहारे निकट
अपराजिता में हितकारी सदै रहैं सखि तोहूं को दुरावै है ॥

इतिसरितनिःक्रांते । (ततःप्रविशतिसूत्रधारः सूत्रधारः)

प्रबंधः । जयजयरघुनंदनकरुणाकुरूहे । ताड़कातनुभंजनखलदलगंजन

है। पिनाकखण्डनजमरंजनहे ॥ सीताविवाहनसुखावगाहनहे। सौ-
शील्योदार्यादिकुनभाजनहे ॥

रेरे सनिरेरे सनि सानि निपप्पप्पमगरेसाम म्मम्मपप्पप्पधपमधनिधधपाथो
दिगदिगदिगथोदिगदिगदिग तकतकतकतक थुंतकथुंठग नंगनंगनंगनंग
नंगनंगनंगनंगतथुन्नथैया ॥ १ ॥

श्री रघुनंदनः । मांगु मांगु ॥

सूत्रधारः भजन । छूटैमनमलीनतासारीकामादिकमिटिजाहीं । होय
विवेकनसैंदुखसिगरेगहौआपममबाहीं ॥ अतिनिर्मलचितह्वै प्रभुपदमें
लगैसहितहगभावै । परमप्रेमरघुनाथआपकोविश्वनाथअबपावै ॥ १ ॥
जोलोंकीरतिचलैतिहारी । तौलौंचलैनाथयहनाटक सुनिसबहोंइसुखारी ॥
जोयंहकहैसहैधनधानिहुंअन्तसुगतितेहिहोवै।विश्वनाथकोप्रगटराहि-
यमनसुभगतिहारोजोवै ॥ १ ॥

(**श्रीरघुनन्दनःतथासूत्रधारःप्रणम्यसहर्षनिःक्रांताः**)

श्रीरघुनन्दनः । चलो महलन चलिये ॥

(**इतिनिःक्रांताःसर्वेसप्तमोंकःइति**)

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराजविश्वनाथसिंहजू
देवकृत आनन्दरघुनन्दन नामनाटके सप्तमांकः ॥

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ब्रजविलास	अमृत सागर	अक्षरावली	मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी
ब्रजविलास छोटा	वैद्य मनोत्सव	स्वयम्बोध	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
राग	**ज्योतिष**	ज्ञान चालीसी	मुहूर्त दीपक
राग प्रकाश	जातक चन्द्रिका	दोहावली	वृहज्जातक सटीक
लावनी	जातकालंकार	बाला बोध	जातकालंकार सटीक
शृंगार बत्तीसी	दैवज्ञाभरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	जातकाभरण
क़िस्सा वग़ैरह	ज्ञान स्वरोदय	किताब जंत्री	होरामकरंद
नानार्थ नो संग्रहावली	रमलसार	गणित कामधेनु	**संस्कृत उर्दू टीका स·**
ब्रह्मसार	इन्द्रजाल	लीलावती	मनुस्मृति
शिवसिंह सरोज	**मुतफ़र्रकात**	पटवारियों की पुस्तक अ·	विष्णु हारीत
भक्तमाल	शनिश्चर की कथा	**संस्कृत की पुस्तकें**	महिम्न स्तोत्र
रामाभिषेक नाटक	ज्ञान माला	लघु कौमुदी	**संस्कृत भाषा टी· स·**
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमरकोश
विक्रमविलास	कथा श्री गंगा जी	अमरकोष तीनों कांड स·	याज्ञवल्क्य स्मृति
वैताल पच्चीसी	अवध यात्रा	पंच महायज्ञ	संध्या पद्धति
सिंहासन बत्तीसी	भरतरी गीत	निर्णयसिन्धु	व्रतार्क
पद्मावती खण्ड	दानलीला व नागलीला	संग्रह शिरोमणि	भगवद्गीता टी· हरवंश
शुक बहत्तरी	दोहावली रत्नावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी· आनंदगिरि
बकावली सुमन	गोकर्ण माहात्म्य	दुर्गापाठ सटीक	गीत गोविंद
चहार दरवेश	श्री गोपाल सहस्रनाम	विष्णु भागवत	कथा सत्यनारायण
क़िस्सह हातमताई	कथा सत्यनारायण स·	भविष्योत्तर पुराण	परमार्थ सार
अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक	अपराध भंजन स्तोत्र	शार्ङ्गधर संहिता
क़िस्सा गुल सनोवर	जनक पच्चीसी	दुर्गा स्तोत्र	पाराशरी
सहस्र रजनी चरित्र	आनन्दाऽमृतवर्षिणी	कायस्थ कुल भास्कर	शीघ्रबोध
राबिन्सन का इतिहास	वनयात्रा	कायस्थ धर्म निरूपण	लघुजातक
वैद्यक	कायस्थ वर्ण निर्णय	तथा छोटा	षट्पंचाशिका
निघण्ट भाषा	विहार विन्द्रावन	मथुरा सभा	सामुद्रिक
अमर विनोद	समर विहार विन्द्रावन	**ज्योतिष**	**सरिश्तेतालीम की**
वैद्य जीवन	कल्प भाष्य	मुहूर्त्त गणपति	**पुस्तकें**
औषधि संग्रह कल्पवल्ली	**दरसी**	मुहूर्त्त चक्रदीपिका	**संस्कृत**

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजुपाठ	भूगोलतत्त्व	अयोध्याकाण्ड	मजमूआ जाबिता फौ-
१ भाग	भूगोलदर्पण	आरण्यकाण्ड	जदारी ऐक्ट २५ सन्
२ भाग	इतिहासतिमिरना-	किष्किन्धाकाण्ड	१८६१ ई०
३ भाग	शक १ भाग	सुन्दरकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्
धात्वर्थाद	२ भाग तथा ३ भा-	लंकाकाण्ड	१८६२ ई०
नागरी व कैथी	भारतवर्षीय इतिहास	उत्तरकाण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्
वर्णमाला कैथी १ भा-	अवधदेशीय भूगोल गुटका		१८६६ ई०
तथा २ भाग	इंगलिस्तान का इतिहास १ भाग		ऐक्ट स्टाम्प अदाल-
तथा कैथी फ़ारसी	हितोपत्रिका	२ भाग	त २६ सन् १८६७ ई०
नागरी व मुफ़र्रदात	बालभूषण	३ भाग	मजमूआ ऐक्ट अ-
अक्षर १ भा	पद्यसंग्रह	हिदायतनामा मुदर्रि-	बध लगान १८ सन्
वर्णप्रकाशिका १ भा-	भाषाकाव्यसंग्रह	सान्	१८६८ ई० पुरवाहा-
तथा २ भाग	कवित्तरत्नाकर १ भा-	पशुचिकित्सा	र २६ सन् १८६६ ई०
सूरजपुर की कहानी	तथा २ भाग	पहाड़ा व खत कैथी	वगैरा
धर्मसिंह का वृत्तान्त	मंगलकोश	तथा क़बूलियत	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
शिक्षावली	अंकप्रकाश	रजिस्टर दाखिल ख़ा-	वेज़ात १८ सन्
पत्रलिपिविधि	गणितप्रकाश १ भा-	रिज तुलबाल दर्मी	१८६६ ईसवी
पत्रदीपिका	तथा २ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठशा-	ऐक्ट न आबकारा-
विद्याचक्र	तथा ३ भाग	ला	न मक़रूज़ बध २४
विद्यांकुर	तथा ४ भाग	क़ानून	सन् १८७० ई०
पदार्थविद्यासार	गणितक्रिया	पटवारियों के क़ानून	ऐक्ट चौपायों का मद-
पदार्थज्ञानविटप	क्षेत्रप्रकाश	उर्दू कैथी महाजनी	ख़िलत बेजा १ सन् १८७[illegible]
भोजप्रबंधसार	क्षेत्रचन्द्रिका १ भा-	टिकट के लाइसन्स	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता
राजनीति	मकील दायरा	ना ऐक्ट २ सन् १८७८	फ़ौजदारी १० सन् १८७२ ई-
शिशुबोध	रेखागणित १ भाग	ईसवी	ऐक्ट माल गुज़ारी
भाषा लघुव्याकरण	तथा २ भाग	नागरी	मगरबी व शिमाली
१ भाग	बीजगणित १ भा-	ऐक्ट लगान मगरबी	१९ सन् १८७३ ई०
तथा २ भाग	तथा २ भाग	व शिमाली १० सन्	तरमीम मजमूआ जावि-
भाषातत्त्वदीपिका	रामायण तुलसीकृत	१८५९ ई०	ता फ़ौजदारी १ सन् १८७४ ई
भाषाचंद्रोदय	बालकाण्ड	इंडियन पिनल कोड	